

पथ की वंशी

एक कलाकार के सर्पर्मम जीवन पर
आधारित उपन्यास

यावधेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली



मूक्य
प्रथम संस्करण
प्रकाशक
मुद्रक

दो रुपये पचीस नये पसे
अक्तूबर, १९५९
राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस दिल्ली

में इतना हो कहूँ गा

बह मनु उपन्यास है ।

इसमें मैत्रेयायणिक साम्य समाज के महीन सम्बन्धों और बढसते हुए मानवधर्मों का एक सीमित मर्यादा में विचित्र क्रिया है । इसमें एक ऐसे कलाकार युवक का कहानी है जो लंगड़ा है, हीनभावना से पीड़ित है, प्यार से उपेक्षित है । वह अपने लिए सुन्दर उपनयन का निर्माण करता है पर वह पूजीवादी युग उसे धन की साँस भी नहीं देने देता । तब उसके जीवन की प्रत्येक साँस विषैली हो जाती है । फिर भी वह महान् बनना चाहता है । अपनी हीनता को वह महानता के विरुद्ध में सदा सदा के लिए फेंक देना चाहता है । इसके लिए वह अपने परिवार कर्तव्य और अपने आपके प्रति भी उदासीन हो जाता है लेकिन उसके मन की कामना का अरमबिन्दु धाव के संकल्पित-काल में धुंभसा-धुंभसा सा बीजता है और अंत में उसे 'सोक-सत्य' का सहाय सेना पड़ता है अपने पारिवारिक और सामाजिक दायित्व को संभालना पड़ता है ।

यादवेंद्र शर्मा 'चन्द्र'

उसके सामने एक कापा पड़ी थी और कापी के पास एक दबात जिसकी स्याही मूलतः मई थी जैसा कई दिनों में इसका उपयोग नहीं हुआ है और यह केवल मेड की घाभा के लिए ही रखी हुई है। दो-बार हिन्दी की पुस्तकें और दो-बार अंग्रेजी के प्रसिद्ध उपन्यास वेतरखीव पड़े हुए थे। मूरे रंग के रेबल-कलाँष पर कहीं-कहीं हल्के स्याही के छोटे छोटे धब्बे थे जो नय नहीं जान पड़ते थे।

कुछ देर वह बहुत जिम्मेदार राजनीतिक नेता की तरह पन्मीर मुद्रा बनाकर सामने पड़ कागज पर धातुनिक प्रयोगवाणी बिचकारी का नमूना बनाने लगा। 'इसका शीपक दिया उसने—प्रतिपत्न। फिर उसके होठों पर मुँही मुस्कान बिरक उठी मानो वह अपने आपने कह रहा हो 'वह भी वैसा घादमी है।

फिर उसने अपने सिर को हथेली के सहारे टिका दिया और निचने लगा जीवन—पून्व। घाये उसने सिखा नहीं।

वह कुछ देर तक विचारमग्न बैठ रहा। फिर उसकी कन्ध स्वतः ही बसी।

जीवन + पैसा = धानंद !

जीवन—पैसा = समझदारी से जीवन यापन !

जीवन × पैसा = बिसासमय जीवन !

जीवन — पैसा = दुःख चरम दुःख औरनी रसता ।

और फिर उसने उन सबको काटकर बड़-बड़ घससों में तिसा 'इन्दु !

इन्दु के साथ उसके मास-पटल पर एक युवती का चित्र उभर आया जो किसी प्राइवेट स्कूल में प्रख्यातिका थी और जो पाठकाल उसके धारण की बिन्दु थी। उसने सिड़की की राह घनत नीमिमा को देखा और फिर मन ही मन कुछ बड़बड़ाता हुआ अपनी बैसाखी लेकर उठ पड़ा हुआ। मास सीमेंट के फर्श पर उसकी बैसाखी की 'सट-सट' उसके मन की ध्वजा को साकार करती हुई उस मूने कमरे में पूंज उठी। 'सट-सट' उस धाम्यहीन मनुष्य के जीवन की पुच्छरी वह ध्वनि थी जो उसके घन्टघन्ट की पहलू परतों में प्रतिध्वनियों की मांति टकरा-टकराकर उसे पीड़ा पहुंचा रही थी। वह उठास-सा सिड़की का सम्बन्ध लेकर पड़ा हो गया। शयनर के लिए वह इतना गम्भीर हो गया कि उसकी मुकुटियां स्पष्ट तनी हुई जान पड़ीं फिर उसके बेहरे पर ध्वजा के सहरे कामे बाधन छा गए। उसका मुग शयनर में एकदम पीमा-पीमा-सा जान पड़ा। उसमें सिड़की के भूमते हैडमूम के बने धारणक पीमे पर्वों को अपने दोनों हाथों में पकड़ा और बड़बड़ाया 'तैमूरसंग !

घाब नीरोज रेस्त्रा में नबोदित बैसक ने घनाम को तैमूरसंग कह दिया। घनाम ने उस सेबक की जिसका नाम 'निर्बाण' का एक कहानी की कल्पनामोचना किसी पत्र में छप नाम से मिल दी थी। वह घनामोचना अपनी प्रेमरी और पञ्जातपुर्न थी कि निर्बाण बात ही बात में बहुत नीचे स्तर पर उतर आया और उसने घनाम का एक बाहियात चित्रण बताते हुए तैमूरसंग कह दिया। उस समय घनाम हंसता रहा ताकि रेस्त्रा के बुद्धिजीवियों की उपस्थिति यह अनुभव न करे कि उसने इसे बुरा माना है लेकिन बाद में इस छद्म ने उसकी समस्तक पीड़ा पहुंचाई और वह धब तक उठी चरह परेमान है।

'घनाम बाबू ! किसी लड़की का मुहुरवर मुताई पड़ा।

घनाम ने देखा—बरबा हाथ में चाय की प्याली लिए खड़ी है। घनाम

इसिम मुस्कान हाँठों पर साता हुआ बोसा 'बत्ती धायो वहाँ क्यों लड़ी हो ?

'घाब घायका मुँह झञ्झ नहीं है न इसलिए मैंने सोचा कि घायने घाजा से नूँ। बेला न सिड़की का पर्दा कितना खराब हो गया है। और सचमुच घनाम ने देखा कि मुट्टी में पर्दे के छोर के घायाने में उसमें काफ़ी ससबों पड़ गई है। वह पर्दा भीये कपड़े को फूहड़ता से निचोड़ा हुपाना जान पड़ता है। उसने बरदा के प्रस्न का कोई उत्तर नहीं दिया। वह बीमानी के सहारे मेज के पाम बिछे पसंग पर धाकर बैठ गया और चाय की चुम्बियाँ सने मगा।

बरदा उसकी छोर बिना देने हुए उसकी पुस्तकों को उठाकर ससमारी में रखत मयी। एकाएक बरदा ने पूछा 'घनाम बाबू, ममुप्य उदास क्यों हा जाता है ?

'जब तुम उदास हो तब उत्तर बूँड सेना ;

बरदा ने मौन धारज कर लिया और घनाम पसंग पर सेटकर मुप्रसिद्ध बिनकार बिम्बेन बानयाग के जीवन पर आधारित उपन्यास 'लस्ट फोर माइफ' पढ़ने मगा। कुछ देर तक दोनों एक बूसरे से नहीं बासे। फिर बरदा प्यासा सेकर बत्ती गई। उसके जाते ही घनाम ने करबट सेते हुए कहा 'बचारी।

बरदा—एक निम्न मध्य वर्ग की कुंवारी बंगालिन बन्या। कामी जैन मंग का बर्ग और कुछ मोठी भी। इतने छोटे छोटे पाँव चीमियों की तरह जैसे बरदा के माँ-बाप ने भी उन जन्मते ही सोहे के जुने पहना दिए हाँ। घाँवें बड़ी-बड़ी बहरी और कामी। बान तयामस बटाघों की तरह घने और कामे और उसकी कमर के नीचे तक फैले हुए। घाठनी में पढ़ती थी। उम्र बीसह पन्हा पर शरीर का फँसाव पूर्ण सुबती का-या विवाह के माप्य।

घनाम के भीचे के दो कमरों के फ्लैट में बह रहती थी। बाप सरकारी घाफिस में हेड क्लर्क। तीन छोटी बहिनें और एक छोटा भाई। पर-मूहस्मी का संभालन मां के हाथ में।

घनाम इस परिवार का एक अमिन्न सदस्य-सा हो गया। बरदा का बाप बिजनेसमें का सम्मान करता है और उनसे मिमता बनाए रखने में पीरवा का धन्यभव करता है। कासेज में बह भी बिजनेसमें का पीक रखता था।

घनाम को बरबा चाहती थी इसे घनाम भी जानता था। कमी-कमी बह बरदा के बारे में सोचा भी करता था। सोचता-सोचता बह इतना क्रूर हो जाता था कि बरबा के हृदय को गिर्दपी आभारा प्रेमी की तरह घनकर तोड़ देना चाहता था। ऐसा विचार उसके मन में यशकदा आया करता था। या तो बह घपिक अद्विज होता था या घपिक प्रसन्न—रोमाटिक मूड में।

घनाम अभी एक पलंग पर जैसे ही सोया हुआ था। उसको आठ पुस्तक पर जमी हुई थी कि बरबा ने उसके कमरे में पुनः प्रवेश किया। इस बार बरदा ने शक्ति मिनेटम की साड़ी पहन रखी थी और बेहरे पर बाउडर मस कर उसने अपने हाथों और बेहरे के रंग में काफी फर्क टास लिया था।

घनाम बाबू !

क्या है ? घनाम ने उसकी ओर बिना देखे ही कहा।

सिनेमा नहीं चलें ?

'नहीं।

क्यों ?

'मुझे किसी काम से नहीं और और जाना है।

क्या घान उस काम को घान के लिए टास नहीं सकते ?

'नहीं।

क्यों ?

‘बहुत आवश्यक है।

घनी तक घनाम ने बरबा की घोर नहीं देखा था। यह उपेक्षा बरबा को पुरी लग रही थी। यह व्यवहार अनिष्टता का भी सूचक है, ऐसा बरबा ने मन ही मन सोचा और वह कुछ प्रवृत्त-सी होती फिर आपने अपने की प्रतिज्ञा क्यों की थी ?

‘प्रतिज्ञा को तोड़ा भी जा सकता है।

अभिजात बग की सजी-सजाई महिमा की प्रदर्शन-भावना लिए बरबा चाहती थी कि घनाम उसे देखे पस भर के लिए देखे ताकि वह मर्क करे अपने मन को तुष्ट करे, पर घनाम द्वारा निरन्तर उपेक्षा पाकर उसका पहलार उड़प उठा। वह तनिक रोप में बोली ‘तुम्हारे बचनों का क्या मोम ? तुम बूझों की इच्छा को इच्छा नहीं समझते इतना बन्म पण्ड्या नहीं ?

घनाम तुरन्त पलंग पर बैठ गया। उसने बरबा की घोर देखा। मजरे पार हुई। दोनों ने अनिमेष दृष्टि से कुछ क्षण के लिए एक दूसरे को देखा। बरबा अपनी धोती का पसू अपनी धंगुली के चारों घोर सिलटाने सभी घोर घनाम के बेहने पर समझौतामूषक हंसी नाच उठी। वह सात स्वर में बोला मुझे मेरे एक मित्र के घर जाना है उसकी पत्नी अस्वस्थ है। बरबा ! वहाँ नहीं जाऊंगा तो उन्हें कितना दुःख सनेगा।

बरबा के नेत्र भर आए। वह प्राणों को पोंद्री हुई कोमल स्वर में बोली ‘घनाम बाबू आप अपने मित्र के पास अन्वय बाह्य लेकिन इन्दु दीदी के वहाँ नहीं। यह इन्दु दीदी मुझे पण्ड्री नहीं समती ?

घोर वह हवा की तरह में बाहर जाती गई।

उसके जाने के बाद घनाम मारी की स्वाभाविक ईर्ष्या को देखकर ममीर हा गया। फिर वह बरबा के अधिभारपूर्ण वाक्य का लेकर कई बार सोचना विचारना रहा और पाद में उतने निजप विरागा कि बरबा उसे प्रीम करनी

है वह उसपर अपना कुछ अधिकार समझती है तभी वह उसे ऐसी धामा दे सकती है। तभी वह उससे ऐसा हठ कर सकती है।

पाँच बज चुके थे।

मई की उष्णता और जयपुर की बटिया किस्म की गर्मी। न चाहते हुए भी उसने मई पोशाक पहनी। कुर्ता और पायजामा। पार्कों में जोधपुर की हल्की जूती। जेब में कैलिको मिस का रंगीला रुमास।

मैज की बरखा में से उसने एक बटुआ निकाला। बटुए का रंग कासा था और वह किसी फम की भेंट थी और तभी सेठ मंजर की हूबेली का लकड़ा उसके मस्तिष्क में धूम गया। उसने तुरन्त अपने कमरे की खिड़कियाँ बन्द कीं और पंखे का स्वीच ऑफ किया और चम पड़ा।

खिड़कियों के बीच बरबा मिला गई। उसकी छाँटों में करपा और चिवा यत दोनों थीं। घनाम ने धर्ममयी दृष्टि से उसे देखा। उसके भावों को समझती हुई बरबा बोली 'घापकी बिबसता न जानती हूँ घनाम बाबू, सेपिन यदि घाप साध होते तो हमें बड़ा धानब प्राप्त। मां भी वही चाहती थी। सम्भव हो सके तो घाने का कष्ट करिएवा हम प्रेम प्रकाश में जा रहे हैं हिन्दी फिन्म देखने।

घनाम कुछ बहै, इसके पहले वह पुनः बोली 'घाप बस में जाएँगे या ठपे में।

'जो मिल जाएगा उसीमें चला जाएगा।

'बस जब फर जाए, तब उसमें बैठिएगा। बरबा की करपा भरी दृष्टि घनाम के झूठे हुए पाँव पर जम गई।

घनाम उस दृष्टि को नहीं सह सका। उसके मन में हजारों बिन्दुओं के डंक की पीड़ा का संवरण हो उठा। उसने धाबेज में तुरन्त सीखा कि क्या वह यह कहना चाहती थी कि घाप संमड़ है उतावली में गिर जाएँगे।

'माह ! क्या कर रही है। उसके प्रसन्न लफाट पर स्वेत कण उभर आए।

उसका निबलना होंठ ऊपर के दो भ्रष्ट दाँत से दब गया। भंगिमा में कुछ कठोरता और भयानकता प्रतीत हुई। बरबा स्त्रियता से सहम गई और कुछ उसकी घान्तरिक भावना को समझती हुई वह स्त्रीधृता से जली गई।

उसके आँते ही घनाम ने अपने प्रापको संभाषा। अपने आदेश और रोप पर नाबू किया। कमाम से बेहरा पोंछ और जम पड़ा। बीसाखी की 'सद्-सद्' जैसे अपने हृदय पर पड़ रही हृषीके की जोर-सी प्रतीत हुई।

पर से बाहर निकलकर उसने सामारण ब्यक्ति की बात से अधिक तेजी से चलना शुरू किया जैसे वह सोच रहा हो कि लिङ्गकी में खड़ी वह काली-कमूटी बरबा उसके बारे में सोच से कि वह कितना तेज जम सकता है? हालांकि 'बस स्टापेज' तक उसने पीछे मुड़कर देखा भी नहीं फिर भी वह कल्पना में साहसी पुरुषों की भाँति ऐसा विचार रहा था कि बरबा उसे लिङ्गकी की राह देना रही है। इसलिए वह वस में सबसे पहले लपककर चढ़ा। इससे घनाम की आत्मा को बड़ा संतोष हुआ।

वस में भीड़ थी। सीटें खचाखच मरी थीं। अपनी बीसाखी को बगल में बसाता हुआ वह एक सीट को पकड़कर खड़ा हो गया। घनामक सीट पर बैठे हुए महाशय की दृष्टि घनाम पर पड़ी। वह तुरन्त जठ खड़ा हुआ। उसने घनाम को कहा 'बैठिए।

'नहीं-नहीं घाप बैछिए न? घनाम न उन्हें रोका।

'नहीं साहब मैं लड़ा हो जाऊँगा। घापको तकलीफ होगी। उसके मूल पर कदना के भाव से।

घनाम बिबदा होकर बैठ गया। उस समय उसका बेहरा बिनोय परिस्वितजमित किए गए घपराम द्वारा बंदिता शरीफ ब्यक्ति की भाँति पीना और संशोध से भ्रुष्ट गया था।

प्रसिद्ध 'बीरोज' रेस्त्रा में घभी पूर्ण छांति थी। संध्या-वेला में जो हुस्का कोसाहन घीर तिमरेट के बुएं की बुटन उत्पन्न हो जाती है वह घभी तक नहीं हुई थी। बहानों की उपस्थिति सहजता से मिनी जा सकती थी। एक दो तीन चार 'घनाम मे मन ही मन उठे जिना भी घीर फिर उठने मैनेजर में समय पूछा। उत्तर सुनकर उसने मन ही मन साधा घभी घमिजात बर्म की युगल जोड़ियों की भीड़ लव लाएवी घीर में इन्नु से उमकर बातचीत नहीं कर सकता। 'अब इन्नु को धा पाना चाहिए। हर पम उसके लिए मुग-सा बन गया। उसके हृदय की प्रतीलाजित घाभुजता मैनों में चमक उठी। वह बैठ-बैठा चाय पीने लगा।

इन्नु धाई। उसके मुख पर उस्तास नाच उठा। घघरों पर मुस्कान लाठा हुआ वह बोसा 'तुमने बड़ी रैर कर बी मैने तुम्हारे धाने की घाघा ही छोड़ दी थी।

'मैं बायदे की पक्की हूँ घीर तुम्हें एक धुनपवरी मुनाना चाहती हूँ। मुनोये तो बहुत लुग होघोये।

'अपा ?

'वह कहानी छप गई है।

'कौन-सी ?

'डीरही का करुण बिनाप।

घनाम मे प्यार जपी दृष्टि में इन्नु के मुख पर संसारी उस्ताह की रेसाघों को देखा। इन्नु को हारिक प्रगल्भता है। 'अममुप' में कहानी का छपना उसके जीवन की बहुत बड़ी सफलता है।

'ऐसे क्यों बन रहे हो ?

'एक रजा हूँ जि तुम्हें कहानी के छपने की बिजनी मुसी है ? अना

तुम्हारी सहेलियों ने उसे पसन्द किया है ?

'दो-तीन सहेलियाँ इस बीच घा गई थीं उन्होंने इसे खूब पसन्द किया। लेकिन मुझे तुमसे जोड़ी-सी सिखावत है। उसके स्वर में घनदाज भर प्राया। घनाम ने जान-बूझकर अपनी मुद्रा को गम्भीर बनाने की चेष्टा की। उसने चाय बनाकर इन्दु के घासे रक्त दी।

चाय का घूंट लेकर इन्दु प्यासे पर अपनी दृष्टि जमाकर बोली 'मैंने अपनी सिसी कहानी पढ़ी पढ़कर आश्चर्य हुआ तुमने उस इतना क्यों बदस दिया ? उस कहानी पर तुम्हारी चित्रकारी का प्रभाव स्पष्टतः बोलता है। तुम्हारे मित्र तुरन्त जान जाएंगे कि यह कहानी इन्दु की नहीं घनाम की लिसी हुई है और फिर वे मुझे और तुम्हें लेकर न जाने क्या-क्या सोचेंगे।

क्या-क्या सोचेंगे ? घनाम के मुखे हृदय में प्यार का झरना-सा घूट पड़ा। दृष्टि में चुहलबाजी उतर आई।

'बस ! उसने कृत्रिम रीप से बात खत्म करने की आज्ञा दी। दोनों कुछ देर तक बात रहे जैसे दोनों पत्थर या मिट्टी के बन खिसोते हों जो समावट के तीर पर सगा दिए गए हों। लोगों ने चाय तक पीनी बन्द कर ली थी।

अचानक इन्दु बोली 'तुम्हारे मित्र बकीस साहब नहीं आए ?

'बग घाते ही होंगे।

'उनका स्वभाव कैसा है ?

'जैसे वे बहुत अच्छे घाबमी हैं किन्तु कंजूस ह। हृदय के पत्थर और एटरम नीरस।

'फिर ऐसे घाबमी से मिलने से क्या लाभ ?

'उनकी यहाँ के बड़े-बड़े मेट्रों में पहुँच है। यदि उन्हें हम राजी करने में सफल हो गए, तो तुम्हारा पहला कहानी-संग्रह छपा ही समयो।

इन्दु ने आयावेद्य में घनाम का हाथ दबा लिया। कायस स्वर में अपने

भहरे को बमफले ऐसट्रे में देखती हुई बोली 'तुमने मेरे जीवन को बदल दिया। क्या थी क्या बना दिया? मैं प्रायः सोचा करती थी कि मैं एक ऐसी स्त्री बनू जिसकी इस समाज और इस समाज के बाहर प्रतिष्ठित नामरिक्तों और बुद्धिजीवियों में सम्मान हो। सोच मुझे घाबर की दृष्टि से देखें और अब मुझे विश्वास हो रहा है कि मेरी इच्छा अवश्य पूरी होगी।

घनाम ने बड़ी धान्ति से उत्तर दिया 'मैं अपनी ओर से तुम्हें सब तरह की मदद दूंगा।

'तुम्हारा ही यह प्रयास है कि मैं आज कुछ बन गई हूँ।

बकील बयान था मए। घनाम ने उसे देखते ही उठने का प्रयास किया। बयान ने तुरन्त उसके कन्धे पर हाथ रखकर कहा 'बैठिए-बैठिए, तकस्नुफ भी जाकरत नहीं, आपको उठने में कष्ट होगा।

घनाम का मुँह उठर गया। बस्तुतः अपने पर प्रबोधित किए गए बयान के भाव उसे धक्के नहीं लगते थे। दूसरों की दया उसके लिए असह्य हो उठती थी। उसने गहरा सौन धारण कर लिया।

बयान निबिकार भाव से मुस्करा रहा था। घनाम की बढ़ती मूकता का उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह उसके कन्धे पर जोर की धापी देकर बोसा 'घनाम आपसे परिचय नहीं कराओये?

'आप है इन्डु जी यहाँ प्राइवेट स्कूल में टीचर है और हिन्दी की नया दित तद्वच मैत्रिका भी है। आपने इनकी कहानियाँ पढ़ी होंगी।

बयान ने कुटिलता से मुस्कराकर कहा 'बैने में कहानियाँ नहीं पढ़ता पढ़ने का प्रयत्न ही नहीं उठता पुर्मत ही नहीं मिलनी लेकिन आज मैंने इनकी एक कहानी 'परमपुय' में पढ़ी। हीपरी का कल्प बिलाप। प्राचीन कथानक को आज की समस्याओं में घटित करना बहुत कठिन है। मैं उसे कला का एक सुन्दर नमूना मानता हूँ।

'क्या आपको मेरी कहानी पसंद आई? इन्डु ने अपनी अपनी हुई दृष्टि

छनिक उठकर पूछा ।

‘पसद घबो बहुत ! प्राबुनिक द्रौपदी की दशा और उसका चित्रण पढ़कर मुझे प्रेरणा मिली कि मुझे अब हिन्दी की कहानियाँ और उपन्यास पढ़ने चाहिए । लेकिन मैं जानता हूँ कि यह सोचकर भी मैं कुछ नहीं पढ़ पाऊँगा । अपने बंधे से मुझे फुर्सत नहीं । मैं एक पल के लिए भी मुक्त नहीं हूँ ।

इधर इन्दु की धारों में गर्ब जमक उठा । घनाम ने अब चुप रहना उचित नहीं समझा । ब्यास की मुक्त कंठ से की गई प्रशंसा इन्दु पर प्रभाव करती जा रही थी ।

‘बकीस साहब इनका कमाल तो कहानी को मोड़ देने में है । महाभारत की द्रौपदी हर पति को सम्पूर्ण नारीत्व के साथ महासमर्पण किया करती थी और इनकी द्रौपदी बिबसता और भय से अपने प्राणको उन पाँच मोनुष भेड़ियों को सौंप दिया करती थी । ये भेड़िए अपने भाग-बिसास की सृष्टि के साधन के रूप से उस अर्ध-वीरित्त नारी का उपयोग करते थे । यह जीवन की कितनी भयानक ट्रेजरी है । उसने बीरे पर दृष्टि जमाकर कहा ‘पाप तो काफी पीते हैं न बकीस साहब ?

‘केवल काफी नहीं घनाम काफी के साथ कुछ खाने को भी चाहिए ।

‘बह भी मिलेगा ।

उसी रेस्त्रा में दो एंग्लो इण्डियन युवतियों ने प्रवेश किया । वे गारी दुबसा-पतली युवतियाँ अंग्रेजी में बातचीत हुई सभी बुसियों पर नजर फेंकती हुई एक बाने की मेज पर जाकर बैठ गई ।

इन्दु ने तपाक से कहा ‘इस बार मैं एंग्लो इण्डियन समाज पर सितना चाहती हूँ । इनके जीवन और मन में बड़ी अंधियारा है । नियमित रूप में ईसा प्रभु के चरणों में गिरकर अपने अपराधों के लिए क्षमायाचना करना और उसी मति से अपने निजी अपराधों में बुद्धि करना ये दो विरोधी बातें हैं । बकीस साहब उस कहानी का आचार होगी मेरी सहेली—रिजन!

‘मेने आपको कहा म में साहित्य के मामले में उतना ही जानकार हूँ जितना एक साधारण पाठक । केवल प्रशंसा या बुरा बता सकता हूँ । ह्रीं माबर्न पार्टी में घनाम की बूम है । उसकी टीसी की विधिप्यता और बौद्धिक कमकार द्वारा इन्होंने कम से कम कह्यों का हृदय भीठ बिपा है । विद्येपठ प्रयोपवादी-प्रभावशाली चित्रकारों का ।

घनाम को इन्दु के समझ की गई अपनी यह प्रशंसा खिचकर लगी ।

बकीम साहब ने काफ़ी का लम्बा बूट लेकर कहा ‘घब में मुझे की बात पर घाना चाहता हूँ । घनाम तुम्हारी क्या योजना है ?

‘योजना है एक प्रकाशन-संस्था खोजन की ।

‘यह बेकार का बंधा है । दयाम ने स्पष्टता से कहा ‘यह व्यापार बिलकुल बाटे का है । भाई घनाम कोई ऐसी योजना बनाओ जिससे लोहा भी सोना हो जाए ।

‘जीवन में केवल सोना बनान का दृष्टिकोण कहाँ तक सीक है बकीम साहब आपकी बरा-सी हृपा से इमें बड़ा सहारा मिलेगा विद्येपठ में इन्दु की का एक कहानी-संग्रह छपवाना चाहता हूँ । ‘मुझे विश्वास भी है इसकी कहानियाँ सोप बहुत पसंद करेंगे ।

दयाम प्रत्येक दृष्टि से कभी इन्दु को और कभी घनाम को देखता रहा । उसकी पैनी दृष्टि जो दूसरों के घन्तस् के सत्य को सहजता से पहचान लेती थी तुरन्त ताड़ गई कि घनाम इन्दु से प्यार करने लबा है और वह इन्दु के लिए बड़ी से बड़ी रिस्क उठा सकता है ।

‘मे बकीम हूँ बकीम भी कँसा जिसके स्वभाव को तुम रती-रतो मर पहचानते हो महाकँजूस खिरबासी और सबा चौकन्ना रहने वाला । मुझे कुछ नहीं चाहिए, मुझे चाहिए अपना नाम ! मुझे नाम का ठारा आकाश में भी बीस जाए तो मैं बहाँ पहुँचने को नहीं चूकूँगा ।

‘दयाम भी ! घनाम तनिक धाबरा में घा मया । उसे दयाम का यह

व्यवहार जरा भी रुचिकर नहीं लगा। इन्दु के सामने उसे प्रपमानित करने का उसका क्या उद्देश्य हो सकता है? वह समझ नहीं सका।

घनाम ने कहा 'फिर मैं कोई अन्य उपाय खूँडूँगा। मुझे इन्दु जी का कहानी-संग्रह छपवाना ही है। प्राप नहीं जानते बुद्धि को समुचित विकास और प्रोत्साहन न मिलने से वह कुंठित हो जाती है।

व्यास सापरबाही से उठ गया 'बेक्यू घनाम! और इसलिए इन्दु जी प्राप बुरा न मानें मैं क्या अपनी तिजोरी से निकाल नहीं सकता हूँ। क्या मरी आत्मा है परमात्मा है। सब बहू परमात्मा से भी बढ़ कर है।

व्यास इस तरह जसा गया जैसे उसने यहाँ आकर अपना समय ही घराब किया।

इन्दु ने पूना से मुँह बिचकाकर कहा 'आपके बहुत अच्छे मित्र हैं! मैं कहती हूँ कि ऐसे मित्रों से मित्रता रखना क्या जरूरी है?

घनाम ने करुण स्वर में कहा 'प्राणी का मूल्यांकन परीक्षा से ही होता है। लेकिन तुम चिंता न करो मैं सब ठीक कर लूँगा। 'सब ठीक कर लूँगा। चलो। यदि यह चाहता तो अपना काम बनवा सकता था।

इसके बाद वे दोनों बाहर निकले।

घनाम की बैसाफी का 'खट् खट्' उस कोमाहल में अपना वृषक धस्तिल रखती हुई सबको स्पष्ट सुनाई पड़ रही थी।

३

व्यास के चरित्र के बारे में एक ही वाक्य कहना अधिक उचित होगा कि यह बटी हुई घंमुनी पर पेशाब तक नहीं करता था। केवल धन-संग्रह और उसकी बुद्धि के प्रतिरिक्त उसके मन में बुराई बात नहीं घाती थी। तभी उसकी बकासत नाममात्र और भेन-देन का व्यापार अधिक बनता था।

एक मरीज बनिया परिवार में उसका जन्म हुआ था। तीव्र बुद्धि होने के कारण उसका विवाह सठारह वर्ष की उम्र में ही हो गया। पत्नी रोज में तीस हजार रुपये लेकर आई। ब्यास ने उन रूपों को बड़ी सुरक्षा के साथ रख लिया और पढ़ाई में लग्न हो गया। मा की परीक्षा पास करते-करते उसके मा-बाप का देहान्त हो गया। प्रैक्टिस प्रारंभ करते ही उसकी बीबी को शय का रोप हो गया। डाक्टरों ने उसे कहा इसे किसी पहाड़ पर ले जाए। किन्तु ब्यास अधिक वर्षों से डर गया और उसने अपनी पत्नी का नहीं पर हत्या कराना शुरू किया। इन्कम टैक्स की प्रैक्टिस उसकी शुरुआत थी। वह रात-दिन अपने कार्य में व्यस्त रहता था। बो-बो तीन-तीन दिन तक वह पर नहीं आता था और उसकी पत्नी नेत्रों में आकुसठा लिए ब्यास की बात ओहती रहती थी। ब्यास आता और बड़ी रक्षा से उसके बालों पर हाथ फेरकर उसकी तबियत के बारे में पूछता। उपचार के बारे में सच्चे मूठे कई प्रश्न करता और फिर कहता 'मैं लखपति हो गया हूँ।

उसकी सग बीबी बही घाबाज में कहती 'घाब यह मकान बरस लीजिए, यहां अपना ही बड़ी ठीकी है।

'नहीं बिधा राजधानी होने के बाद अजपुर में मकान की बड़ी बिल्कत हो गई है। घण्टा मकान बूढ़ नहीं मिलता फिर भी मैं खोज रहा हूँ।

'लेकिन यहां मेरा बस बुटता है। बिधा की मांओं में मीठ की छायाएं नाच उठती थीं।

'कैसी बातें करती हो तुम मुझे ऐसा बरा भी नहीं मगता। मैं भी नहीं रहता हूँ। यहां सुरज की बूच और बंधा की चांदनी दोनों घाती हैं। और डाक्टर कहता था कि घब तुम घण्टी हो रही हो।

एक दिन बिधा ने ब्यास से प्रार्थना की 'यह नीकरानी बड़ी पृष्ठ है, कोई दूसरी रख लो।

'दूसरी कहाँ मिलती है? बस्तुतः बाप कुछ और ही थी। यह नीकरानी

जितनी सस्ती भी उतनी सस्ती मौजराती बूझने पर भी नहीं मिल सकती। फिर भसा ब्याम उसे कैसे निकालता? वह अपनी परती के लिए रही से रही फल लाया करता था। जब एक दिन बिद्या ने रोप में कहा तब उस निर्दयी ने अपनी घाँसे मिचमिचाकर कहा 'मह रोप घावभी का छाप करके ही रहता है। व्यर्थ में रपया बरबाद करने की क्या जरूरत है?

बिद्या पर पहाड़ टूट पड़ा। उसने अपनी मयाकौत बीप्यहीन घाँसों में अपने पति की घोर बेया 'फिर मुझ यहाँ से जना ही जाना चाहिए। मेरा शय निश्चित है फिर जीवन के प्रति सम्मोह कैसा? तब बिद्या के चेहरे पर भयानक स्याप आस उठी 'तुम मुझे जहर देकर क्यों नहीं मार देते? तुम मुझे व्यर्थ ही क्यों तड़पा रहे हो? बापों तुम मुझ जहर लाकर दे दो।

ब्याम परमर की मूर्ति की तरह अचम खड़ा रहा।

'ईदबार तुम्हें सद्बुद्धि दें। यह खया कुछ काम नहीं आएगा। आपकी इतना पनलोमुप और हृदयहीन नहीं होना चाहिए।

ब्याम ने दुष्टता से बिद्या की घोर देखकर कहा 'घभी तुम्हें जीवन की गहराई का ज्ञान नहीं देता कियेने महत्व की चीज है इसे मैं ही जान सकता हूँ। फिर यह सरासर मूर्खता है कि हम उस वस्तु को बचाने के लिए अपने पन का अपभ्यय करें जिसका विमारा निश्चित है।

बिद्या अपने पति का उत्तर सुनकर उग्यादित हो उठी 'ओह! यदि कोई मेरा कसत्रा निकाल लेता तो भी मुझे इनकी पीड़ा नहीं होनी जितनी तुम्हारे इस वाक्य ने हुई है। पता नहीं तुम्हें क्या हो गया है? तुम अपने बाल क्यों गए हो?

वह बिमकुस साधारण रिपति में बोला 'मुझ बुद्ध नहीं हुआ मैं बिमकुस ठीक हूँ। तुम्हें धैर्य रखना चाहिए और मेरी बात को अपने आपने का प्रयाम करना चाहिए। मैं भूठ नहीं बोलता। मैं पता न जाने क्यों शर्ब

नहीं कर सकता ।

'क्या मैं मरूंगी । उसने पूछा ।

'नहीं-नहीं ।

'फिर तुम क्या सर्ज करके मुझे अच्छे हस्पताल में भर्ती करवा देते । मैं तुम्हें बिश्वास दिलाती हूँ कि मैं शक्य हो जाऊंगी । डाक्टर भी ऐसा ही कहता था । उसने अपने समीप पड़ी चादर को अपनी दोनों मुट्टियों में भींच लिया जैसे वह जीवन को छोड़ना नहीं चाहती है ।

घेतान की तरह उसकी पलंग के धाये बहसकरनी करता हुआ ब्याज बोला 'रूपमा जीवन का सत्य है, ईश्वर है, सुख है, शांति है । उसका दुरु-पयोग का फल बुरा है । मैं तुम्हें मारना नहीं चाहता किन्तु अब तुमपर वैसा सर्ज करना भी व्यर्थ-सा है । हजारों स्त्रियों के इलाज के बाद भी तुम्हारे स्वास्थ्य में बरत भी अन्तर नहीं आया । मैं चाहता हूँ कि अब तुम किसी बेबता की मनीषी मानो । वह एक पल रुककर पुनः बोला 'क्या तुम कुछ दिन के लिए पीहर नहीं जा सकती हो ?

विबध हो बिधा अपने पीहर चली गई । उस दिन ब्याज ने खीर बना कर खाई । खीर खाता हुआ सोच रहा था 'श्रीकी खीर का व्यापक भी बढ़िया होता है । धाये से मैं खीर का प्रयोग ही बन्द कर दूँगा । और उसकी धाओं में दुपट्टा गाज उठी । वह अपनी पलंग के पलंग पर हाथ फेर कर बड़बड़ा उठा 'पत्नी मे मुझे कमराज माना माना तो मानती रहे वर मेरे तो तीन सौ स्त्रियों की बचत हो गई, यदि मैं इतनी कड़वी और कठोर बातें नहीं करता तो क्या वह मेरा घर छोड़कर जाती ? कभी-कभी मूर्खता भी लाभदायक सिद्ध हो जाती है ।

और उसने मौकरानी को पुकारा । मौकरानी हाथ जोड़कर खड़ी हो गई । वह अपनी कमर पर दोनों हाथ लटकाकर ठनिक उल्लस-उल्लस कर बोला 'तुम्हारी कितने दिन की तनसा बाकी है ?

'दो माह की।

'इस बीच तुमने क्या-क्या नुकसान किया ?

'बकीम साहब इस बीच मेरे हाथ में सिर्फ एक कांच का गिलास टूटा।

'सिर्फ एक ही ?

'हां साहब !

'घाठ घाने कम हो गए।

'लेकिन सरकार कांच का गिलास छह घाने में खुला विकता है।

'नया बिकता है जानती हो नया गिलास बेकार होता है। उसके बसने की कोई मारेंटी नहीं। मेरा छह माह का पूरना गिलास या घीर यदि तू नहीं तोड़ती तो वह कभी नहीं टूटता।

बेचारी मौकरानी चुप हो गई। बपान ने अपनी सफाबट भुंछों पर धनुमिबों को गचाकर कहा 'भाज से मैं तुम्हें छुट्टी देता हूँ। पन्नाह रुपया भाहवार मुझे बहुत लगता है। मने अपने पड़ासी की मौकरानी से बात बत कर भी है, वह पांच रुपयों में घर की सफरई घीर बतन बसने को तैयार है।

'पांच रुपयों में ही ! मौकरानी ने बिस्मय में कहा।

'मेरे ब्याल में वह भी धयिक है। एक घारनी के बतन धयिक नहीं होते। दो पत्तक भयकाई कि उसका काम समाप्त।

मौकरानी जमनी हुई अपने रुपये लेकर चली गई।

कुछ दिनों में बिषा का भी बेहाल हा गया। बघात ने उसके लिए धानू बहाए मन्ने या भूटे यह कोई नहीं जान सका। उसने उसके पीछे म्यारू ब्राह्मण भी जिमाए। कुछ धान-धम भी किया लेकिन उसका जीवन की गति में कोई भी परिवर्तन नहीं आया।

बाद में बपान ने इन्कन टैक्स घाभीसर में मिलकर घीर रुपये

क्याए। कल मिसाकर उसके पास तीन लाख के करीब रुपये हो गए। उसने अपने व्यक्तिगत नाम के पीछे राज्य का भारी मुकदमा किया। वह सेठ और घाफ़ीसर से मिलकर सार्लों का मामला हज़ारों में तय करवा देता था।

अधिकांश बयाने के बाद उसका मन इस पेसे के प्रति ठग-सा गया। नया इन्कम टैक्स घाफ़ीसर बयान के दूर मामले को बिगाड़ने का प्रयास करता था। निदान दयाल एक बकील से एक घण्टा पठान हो गया। वह घोरों को अपना उधार देने गया। पांच सौ का साठ सौ मिलवाना पांच-माँच अपना सँकड़ा ब्याज बना हज़ार की पीढ़ पर पांच सौ रुपया देना यही था उसका संघा ! यही उसका ब्यापार। फिर भी वह नियमित रूप से कुछ बेर के लिए काभा कोट पहुँचकर कचहरी जाता था।

इसीमें उसको महान संतोष और मुक्त था।

दयाल की मित्रता अनाम से भी विचित्र बन से हुई। अनाम को कुछ रुपयों की आवश्यकता थी किसीने उसे बताया तो वह उसके पास गया। दयाल ने एक अपरिचित को निर्भयता से उधार मांगते देखकर उससे बहुत प्रभावित हुआ। उसके व्यवसाय को पूजा। उतर पाकर वह बोला 'घाप चित्रकार है वह भी कमप्रियम नहीं ! क्या घाप मुक्त बठा सकते हैं कि घापकी सामाना इन्कम कितनी है ?

'यही होगी पन्द्रह सौ रुपया।

'सिर्फ पन्द्रह सौ रुपया ! और घाप मुझसे इतनी बड़ी रकम अर्थात् दो हज़ार रुपये माँगने चा गए ! उसका स्वर आश्चर्य में डूबा हुआ था।

'शेखिए, मरी बड़ा बहिन निमला का विवाह है मुझे रुपयों की जरूरत जरूरत है। मैं घापके पास बड़ी धाधा सकर धाया हूँ। अनाम ने शीतला से कहा।

'अनाम की दयावली बयान के सामने घाफ़ी सरयोवी। मैं एक मूरखोर हूँ मेरा काम एक चिकित्सक से भी अधिक चतुराई का है। चिकित्सक

घपने प्रयोजन की चीज की ही जांच-पड़ताल करता है पर मुझे घपने 'मुष्क किय के हर पहसू को देखना होता है। मेरी यह पैनी दृष्टि मनुष्य के प्रत्यर्जन की प्रत्येक मतिविधि को तुरन्त भांप लेती है।

'मुझे संबर बाबू ने घापके बारे में बताया था। वे घापको प्रशंसा करते थे। वे घापको हैलियक मेजर का बताते थे।

'मेरी प्रश्नमा मेरे हृदय में दया जगामे में सर्वथा प्रसमर्प रही है। मैं एक मूखपौर हूँ जिसका धर्म सत्य धीर ईश्वर है—ईसा। हासांकि मैं ईश्वर की पूजा करता हूँ। मेरी रसोई में बिने मेने घाबकम मविर बना दिया है मपबान छिन्न का एक छोटा-सा सिग है। हर रोज सवेरे म उसकी पूजा करता हूँ ताकि मेरी आत्मा दुर्बल न हो। वह कुछ देर रुका। उसकी दृष्टि घपने कामे पुराने कोट पर जम गई जिसकी गर्दन पर तैस की चिक-माहल जमक रही थी।

'मेरिन् मिरा काम घापको करना ही होया। घनाम ने घपने घर्षों पर जोर देकर कहा। फिर वह मसी चटाई को घननी घंमुली से कुरेवने लगा।

'तीन हजार की जमानत बिमा था।

'किमकी ?

'संबर बाबू की। वे जमानत दे देंगे म रुपा दे बूंगा।

'वे घानी कष्ट में हैं। उन्हें घापमे मय है कि बही बका पर रुपमा न पहुंचा तो घाप उनपर तुरन्त नामिदा कर देंगे। घाप उनकी इरजत धूल में मिला देंगे।

दयाल घट्टुशाम कर उठा। उसकी जंभमियों जैसी मयाजक हूँती ने घनाम का मयजीत कर दिया। वह नादान बासक की भांति दयाल को देखने लगा।

जब संबर बाबू त्रिनके पास लाग्यो तबवे ह तुन्हें नहीं दे सकते तब में

तुम्हें रुपया कैसे तोस सकता हूँ ।

‘लेकिन वे सेन-सेन का ब्यापार नहीं करते ।

‘तुम सोसे हो जैसे बालों की घटकमबाजियों को नहीं जानते । वे तुम्हें रुपया नहीं देते । वे तुम्हारे जमानत नहीं बने । क्योंकि तुम एक मरीब चित्रकार हो जिसकी घास का कोई भरोसा नहीं । तुम नहीं जानते कि हर रुपया देने वाला घासमी घपनी घासामी की घीकाव देखता है । अनाम बाबू, कुछ भिरवी रखने को है ? धीर उसकी दृष्टि अनाम के चेहरे पर जम गई ।

‘कुछ नहीं । अधिक से अधिक मैं अपने भापको गिरवी रख सकता हूँ । हाँ यदि आप मेरे कुछ चिबों को रखना चाहें तो खुशी-खुशी रख सकते हैं । उसकी बाबी में ब्यया लहरा उठी । घाबों में करघा जमक उठी ।

‘इस तरह बात नहीं बनेगी । मैं पैसा जिसे मैं घपनी भरमा मानता हूँ ऐसे निकाल कर नहीं दे सकता । उसकी सुरक्षा का प्रबन्ध होना ही चाहिए ।

‘मैं आपके पास पड़ता हूँ ।

‘मह अमिनम ब्यर्ष ही जाएगा । मैं अपने रुपयों की जमानत चाहता हूँ । जैसे तो साधारण पार्टी का मकान भी गिरवी नहीं रखता क्योंकि एक मकान की कीमत प्रायः एक साल हो सकती है । लेकिन कम उसका पचास हजार रुपया भी कोई देने को तैयार नहीं होता । इसके साथ यदि मैं उसे प्रायः बेचना चाहूँ तो वह तुरन्त नहीं बिकेगा । इसलिए मैं सोना चाहता हूँ जेवर चाहता हूँ । सोना एक ऐसी वस्तु है जो कहीं भी तुरन्त बिक सकता है । वह एक घण चुप रहा । लेकिन कलाकार इन ब्यापारियों से कुछ ईमानदार होते हैं । घास मैं तुम्हें मकान पर भी रुपया दे सकता हूँ बसते मकान की कीमत पाँच हजार हो ।

‘अने आपसे कहा मैं मेरे पास कुछ नहीं है ।

‘फिर मुझे क्षमा करना मैं आपकी कोई भी सेवा नहीं कर सकूँगा ।

घनाम का हृदय बयाम के प्रति वृथा से भर जठा । उसे मही तक गुस्सा
घाया कि वह उससे मुह पर बूक दे पर वह इतना साहस नहीं कर सका ।
दूदा-टूटा-सा उठा घीर चल पड़ा । घमौ वह दरबाज तक पहुंचा ही नहीं वा
कि बयाम ने उसे फिर पुकारा 'मुनौ ।

घनाम के तन-मन से सुभी की सहूर चौड़ गई ।

'भै सुन्हें पांच सी बपया दे सकना हूं किन्तु एक घर्त पर ।

घनाम बीसासी की मजबूती से बमस में बदाकर जन्वी-जल्बी बयाम
के पास घाया । उठावली ये बोला 'मुझे घापकौ हर संभव घर्त मजूर है ।

'सुन्दारे औ भी बिन्न बिकेंगे उन सबपर कापी राइट मेरा होगा उन्हें
में ही बेच सकूंगा । उसका सारा बपया म मूना ।

'मुझे मजूर है ।

'किर कस घा जाना म कागज बनवा कर रखूंगा दस्तकत करके अपनी
रकम में जाना । वह इस तरह बोस रहा वा जैसे कोई उपेक्षा से बात कर
रहा हो ।

दूसरे दिन घनाम ने जब बयाम के घर में प्रवेश किया तब बयाम एक
साधारण मुबनी को कर्म दे रहा था । बीसासी की 'गद्-कद्' सुनकर बयाम
भीतर ये बोला 'घनाम बाबू वहीं पर एक बाइए ।

घनाम एर दूटी-सी कुर्मी पर बैठ गया । कुर्मी की पीठ से लमी दीवार
लगी मन्दी थी कि घनाम को पूजा हो जठी । एक छीके में कुछ सड़ हुए
कच पड़ थे । वह इस कजूम पर संमीरता म बिचारता रहा जिसमें स्वार्थ का
सामग सह्रा रहा था । वा राठ-दिन घीरों की बीसत को अपने घर में देखना
पाहता था । जिसका इस जीवन में म कोई दोस्त वा घीर न कोई घपना ।
मरमता में उगे बिड थी । वह कमी भी जीवन की क्रोमल भाषनाओं वा नारी
क प्रपन पदा को लेकर चर्चा नहीं करता था । दमात का यदि सर्वाधिक प्रिय
विषय शोर् मा तो यह वा श्चम दना । वह श्चम को लेकर घंटों बिचारा

करता था। किस प्रकार किसीको सौ रुपया देकर एक हजार समूत बन
 चाहिए—इसमें वह अपनी बुद्धि का कौशल बतलाया करता था। जैसे वह कर्मा
 की छुरी से अधिक निर्भय और परंपर से भी अधिक कठोर था। किंतु बर्कों
 का बहुत पक्का था। जो कह बिना उसे वह पुरा करता ही था। बेहरे पर
 किसी प्रकार के भाव आए बिना वह अपने मुम्बकियों (कर्मचारों को वह
 इसी तरह से सम्बोधन करता था) के मकान कुड़क करवा लेता था उनका
 सामान कमरे में कर लेता था या उन्हें जैस भिजवा देता था। इस मामले
 में वह थोड़ा भी उधार नहीं था।

‘घनाम ! भीतर से बयान ले पुकारा। घनाम की बैठाबी की ‘घट
 बट’ मूक जठी। वह भाबोत्रेसित-सा उस कमरे में चुसा जिसमें बटाई बिड़ी
 हुई थी। जिसमें एक पतली-सम्बी मुबती बैठी हुई थी। घनाम का ध्यान उस
 मुबती की घोर गया। बयान हंसकर बोला ‘वह घनामिका है, दासी कुद
 कर्ष लेने घाई है। तुम्हाटी और इसकी स्थिति एक-सी है। वह अपने मामिक
 को एक हजार रुपया देकर उसकी मुसामी से मुछ होना चाहती है। बिचापी
 छोटी बात की है।

घनाम ने मन ही मन सोचा उसकी मुसामी से तुम जैसे धाबमी की
 मुसामो बहुत भयनाक है। भगवान इसकी रक्षा करें।

‘तुम चुप क्यों हो ! बयान ने पूछा।

‘मे सोच रहा था कि आप कितने बयानु है।

वह जोर से हंसा ‘धाबमी मूगी प्रसंसा करने में माहिर होता है।

घनामिका तुम बाहर बैठो।

इसके बाद बयान ने महुरा मीन धारण कर लिया। वह महुरा मीन
 घनाम के लिए प्रसह्य हो जठा। बयान ने अपने काले कोट की जैब से कामज
 निकाले और घनाम को हस्ताक्षर करने के लिए कहा।

घनाम ने हस्ताक्षर करने के पूर्व बयान के कामजों का देखना चाहा।

बेखबर बहू ठगिन' स्टर्मिउ-सा हुआ। बोला 'तीन रुपया प्रति सैकड़ा ब्याज !

किसी वस्तु के घभाव में यह कुछ भी नहीं है। म यह रुपया फवम ब्याज के मोह में बे रहा हूँ। कमी-कमी हम मुरखोर ब्याज के मोह में मूल का मिट्टी बना लेते हैं अर्थात् एक भी रुपया वापस नहीं मिलता।

शेकिन यह ब्याज साहूकारी नहीं है। घनाम के स्वर में तिबायत सी थी।

'साहूकार को एक तो अपनी इरबत का भय सदा बना रहता है। दूसरा उसका मेरे पास कुछ न कुछ गिरबी होता ही है। तुम्हारे पास क्या है ? कुछ भी नहीं।' एक मरीज बिचकार हो न मकान है घौर न सोना। निचे फकीर। बाप भी है बहू भी बीमार। पाँच-पाँच घौर छह छह बहिनें तुम स्वयं संगड़े। कमी सोचा है तुमने आज नई बिचकारी के बुदमनों का राज्य मारतबर्ष पर हो जाए तो तुम्हारा क्या होगा ? फिर तुम्हारी कसा भी अश्य होती है। बहू मायारण ब्यक्ति की समझ में नहीं आती। एकदम बिबिब' एकदम नई। कौन पारीनेगा उमे ? मुझे तुमपर क्या आती है।

घनाम को अपनी निन्दा अमह्य मयी। कहीं बहू उत्तेजित हो गया तो बना-बनाया काम बिमड़ जाएगा। इसलिये उमके तुरन्त हस्ताधार किए घौर बीताली को बगल में बजाकर पन्दी स बहूाँ में निकलना चाहा लेकिन ब्याल ने उमे रोक दिया 'रुपया नहीं लोमे ? बहू बाहर बैठ गया। घनामिका भीतर आई। ब्याल ने उमके वृछ 'तुम काम करना चाहती हा ?

'हां।

कितनी मरणा मोगी ?

'रोटी-कपड़ा घौर तीस टका (रुपया) !

ब्याल ने घनाम में बहूाँ 'तुम्हें एक नौकरानी की जरूरत है है क्या हायी ही। यदि मेरी बात मानना चाहते हा ता घनामिका को रख तो तुम्हारा सब काम कर देवी रोटी-कपड़ा घौर बीस रुपया मजद। घोमो

मंजूर है।

‘हां मंजूर।

‘फिर भी स्पष्टे। उसने सी-सी के पांच बहुत पुराने मोट निकालकर घनाम को दिए। घनाम घनाम प्रदर्शन करता हुआ चला गया। घनामिफ घनामिफ घनामिफ से घनाम को देखती रही। उसके घनाम में इस तरह के प्रति दबा की फिरनें फूट पड़ीं। घनामक उसके मुह से निकल पड़ा बेचारा कितना सुन्दर है मोर की तरह इसके पांच में प्रभु ने कतर रख दी।

घनाम ने कटिल हूंसी हंसकर कहा ‘घनामिका तुम्हारा नाम तुमने मिसता-मूलता-सा है। मुना यह है घनाम का पता। उसने एक कापक घनामिका के हाथ में दिया। फिर टहलकर वह बोसा ‘तुम्हें एक हजार रुपया बड़ रुपया ब्याज पर दिया है। इसलिए हर तबेरे तुम्हें मेरा काम मुफ्त में करता होगा। चूकि तुम एक गरीब लड़की हो इसलिए तुम मुझे ब्याज नहीं दे सकोगी मैंने उसका भी प्रबन्ध कर लिया है। जैसे ही तुम्हें घनाम लगना दे जैसे ही तुम मुझे पत्रह रुपया पढ़ना देना। याद रखना एक सुबहोर ब्याज के मामले में बहुत ही बटिया होता है।

घनामिका ने हाथ जोड़कर कहा मैं स्त्री हूं मुझे तब घपने पुराने मासिक से भय बना रहता था वह मनुष्य मेरे तन धीर मन से देखता था फिर भी मैं उसे कुछ नहीं कहती थी। मैं दिन भर काम-काज में सदी रहती थी थक जाती थी। लेकिन वहां तभी मुझे कामचोर कहते थे। घनामिका की धाँसों में धाँसू घा गए। उसने घपना मुह घपने हाथों में चुग लिया।

बड़ पापाणवत् इंसान न जाने क्यों काप-ता दबा। हकताता हुआ वह बोसा ‘तुम जाओ तुम जाओ तुम्हें कोई चिन्ता करने की जरूरत नहीं। सब ठीक हो जाएगा। फाकिर तुम्हारी फिकारिस सेठ हुजूमबंद ने की है। मेरा पैसा सुरक्षित है और तुम धाराव हो गई। बस बस!

घनामिका घपनी धाँसों को पोंहती हुई चली गई।

दयास उन कागजों को एक भवबूत किन्तु पुरानी लोहे की तिनोरी में रखने लगा। वह तिनोरी हरे रंग की थी जिसका रंग जयभू-जगहू से उतर गया था और जिसमें मोटों की मछियाँ बेबर और सोने के छोटे-छोटे पासे पड़े थे।

दयास ने एक बार उन सबपर बड़ी घातमीयता से हाथ फेरा और तिनोरी बन्द करके विचित्र दृष्टि से कमरे को देखता हुआ बाहर चला गया।

8

इसके पश्चात् दयास का बर्फीस दयास और घनामिका से सम्बन्ध बड़ता ही गया। जब दयास से उसका सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ और निकट गम हो गया तब उसने जाना दयास अत्यन्त कठोर और कृपण मनुष्य है। उसके हृदय में प्यार की एक गहर भी नहीं है। वह पैसों के लिए किसीका तिहाज नहीं रखता। सेन-देन के मामल में न कोई उसका मित्र है और न कोई शत्रु। किन्तु घनाम यह भी स्वीकार कर सकता था कि दयास उसके प्रति उतना कठोर नहीं है जितना दूसरों के प्रति। हर माह प्यास पहुंचाने के बाद वह उसके साथ उदारता का व्यवहार-वर्तन करता है।

दयास को घनाम के रुपों का बड़ा खतरा था। उसने सोच लिया था कि घनाम हम तरह बीबन भर उसके रुपये नहीं दे पाएगा। अतः उसने घनाम के चिन्नों की एक प्रदर्शनी का आयोजन किया।

जयपुर के एक कानेज का हास उसके लिए भाग लिया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन शिशा मंत्री ने कराया गया। शिशा मंत्री न उसकी कमा की मराहना करते हुए कहा 'घनाम भी की कमा में विचित्र प्रयोग है। केवल रेलगाड़ों के द्वारा मानव जीवन की अभिव्यक्ति, वह भी प्रभावशाली रूप में उन्मेषनीय है। उन्होंने चित्रकार को घनाम और से एक चित्र के पाँच सौ

रूपये लिए । वह चित्र या महासमर्पण !

बिच दिन घनाम को रूपये मिले उसी दिन ब्यास पहुँच गया श्री अपने पुरे पाँच सौ रूपये ले लिए । घनाम चाहता था कि ब्यास अभी उससे डाई सी रूपये ले ले लेकिन वह इच्छपर राजी नहीं हुआ । जब घनाम ने पश्चिम घमुरोच क्रिया ठब समाप्त बिपड़ गया । बोला 'समय पर ब्यास करे का क्या मही बनना है । मेने तुम्हारी जाती हुई दरबत को बचाया था तुम्ने जीवन बिना था । तुम्हें तो मेरी एकम बिना मरि बेनी चाहिए नौ ।

'ब्यास बाबू ! मुझे रूपयों की सख्त जरूरत है । इधर दो द्यूधन में छूट गए हैं ।

'घनाम ! रुपया एक ऐसी बीज है जिसकी सख्त जरूरत हर समय हरएक को रहती है । मुझे भी रूपये की सख्त जरूरत है । तुमसे लेकर किसी भीर को भूमा ।'

घासिर घनाम को रूपये देने पड़े । ब्यास ने धाठे हुए कहा 'कम पर धाकर घपना हुँडनोट ले जाना । बेखो भूभना मत क्योंकि ये जितने सूच कोर होते हैं वे हृदय के बहुत नीचे धीर कामे होते हैं । उनकी ईयागवारी पर जरोसा करने वाला कमी न कभी पसुताता ही है ।

ब्यास के चले जाने के बाद घनाम बहुत उबास हो गया । बहिन के बिबाह में उसने अपने कई मित्रों से बोझा-बोझा करके एक हजार रूपये लिए थे वे सभी उसका पसा खींचेये । सभी को पोड़े-बोड़े की प्रासा है । कुछ पाने को उम्मीद है । इन सब बातों से वह बड़ा म्बन्न हो गया ।

रास्ते में वह बिचारता था रहा था 'बिच में चित्रकार नहीं होता किन्तु पच्छा होता ? वहीं पच्छी नौकरी मिल जाती हर माह तगबा मिलती । लेकिन उस समय मेरा कोई सम्मान नहीं करता । सभी मुझे एक साधारण ध्यलित समझकर उपेला की दृष्टि से देखते । आज मुझे तोव एक कुसल प्रयोमवारी आधुनिकतम चित्रकला का एक पच्छा चितेरा मानते हैं धीर

मेरी कला को समझने वाले मेरा बहुत सम्मान करते हैं। मुझे पसकों पर बिछते हैं। मेरी बहिन ?

विचार पत्रिका की माँति पस-पस में बदल रहे थे।

हां उस पढ़ी-लिखी आबुफ बहिन को बहरे के घमास में कितना साधारण पति मिला है। एक क्लर्क बी० ए० पाठ क्लर्क ! जो न ता अधिक सुन्दर है और न अधिक अनुर ! फिर भी उसके लिए बड़-बो हज़ार रुपये खर्च हो गए। खर्च बढ़ता ही जा रहा है।

फिर उसका सम्बन्ध उच्च मध्यवर्ग और पूंजीपति वर्ग से बिरोंदिन बढ़ रहा था जिससे उसके खर्च में वृद्धि हो रही थी पर धाय में नहीं। वह जो थोड़ा-बहुत द्यूधन और पत्रों से कमाता था उसमें से एक पैसा भी नहीं बचा सफ़टा था। उसे बिल प्रतिनिधि भपता रहन-सहन ऊँचा करना पड़ रहा था। उसे भपता होटलों का खर्च बढ़ाना पड़ रहा था। हर तरफ से खर्च बढ़ता ही गया और धाय के बढ़न का कोई जरिया नहीं बना। निदान वह बहुत तंग हो गया। जब दमास ने उसपर ठनिक भी रहम नहीं दिखाया तब वह अपने घर में घाकर दूटा हुआ-सा पड़ गया।

थोड़ी देर के बाद इन्दु आई। इस बीच इन्दु की जान-पहचान घनाम में काधी हा चुकी थी। घनाम उसकी घोर तीब रूप से प्रकटित था। वह अपने जीवन की विपमताओं व घमासों को बिस्मृत करके इन्दु के सभस—ने प्रत्यन्त नाम्यवासी और सुखी चित्रकार हुं—का प्रदर्शन किया करता था। इस मिथ्या बातों से उसके प्रत्यस् को मुक्त मिलाता था।

धमी घनाम दुर्दिनताओं से चिठ हुआ था। उसे मग रहा था कि जैसे ही उसके मित्रों को इस बात का पता मडेगा कि उसको पाँच सौ रुपये मिले हैं जैसे ही वे अपने रुपों की भाग कर बैठेंगे और न मिलने पर उसे एक परिवारानी मित्र मामेंडे ? पर वह करे भी तो क्या ? दयाल जैसे हृदयहीन धान्मी के पंचुस न बचकर निरगना भी सहक नहीं। कहां स उसे पता मग

रपये लिए। वह चित्र वा महासमर्पण !

जिस दिन घनाम को रुपये मिले उसी दिन दयाल पहुंच गया और अपने पूरे पांच सौ रुपये ले लिए। घनाम चाहता था कि दयाल घनी उससे ढाई सौ रुपये ले ले लेकिन वह इसपर राजी नहीं हुआ। जब घनाम ने अधिक अनुरोध किया तब दयाल बियड़ गया। बोला 'समय पर दया करने का क्या यही बयसा है। मैंने तुम्हारी जाती हुई इच्छत को बचाया था तुम्हें जीवन दिया था। तुम्हें तो मेरी रकम बिना मणि देनी चाहिए थी।

'दयाल बाबू ! मुझे रुपयों की सख्त जरूरत है। इबार को दफूहन भी घूट गए हैं।

'घनाम ! रपया एक ऐसी चीज है जिसकी सख्त जरूरत हर समय हरएक को रहती है। मुझे भी रुपये की सख्त जरूरत है। तुमसे लेकर किसी और को बुया।

धालिर घनाम को रुपये देने पड़े। दयाल ने जाते हुए कहा 'कम बर घाकर अपना हंडलोट ले जाना। देखो मूलना मत क्योंकि ये जितने घुव खोर होते हैं वे हृदय के बहुत मैसे और काने होते हैं। उनकी ईमानदारी पर भरोसा करने वाला कमी न कमी पछताता ही है।

दयाल के जाने के बाद घनाम बहुत उदास हो गया। बहिन के विवाह में उसने अपने कई मित्रों से बोड़ा-बोड़ा करके एक हजार रुपये लिए थे वे सभी उसका पत्ला लींचिये। सभी को बोड़े-बोड़े की प्राधा है। कुछ पान को उम्मीद है। इन सब बातों से वह बड़ा व्यग्र हो गया।

रास्ते में वह बिचारता जा रहा था 'यदि मैं चित्रकार नहीं होता कितना प्रच्छा होता ? कही प्रच्छे मीकरी मिस जाती हर माह ठनका मिनती। लेकिन उस समय मिरा कोई सम्मान नहीं करता। सभी मुझे एक साधारण व्यक्ति समझकर छपेला की बृष्टि से देखते। घाब मुझे मोग एक कुसन प्रयोगवादी प्राशुनिवतम चित्रकला का एक प्रच्छा चितेरा मानते हैं और

मेरी कला को सम्मानने नामे मेरा बहुत सम्मान करते हैं। मुझे पत्रको पर बिछाते हैं। मेरी बहिन ?

विचार अमर्षिक की भांति पत्र-पत्र में वाम रहे थे।

हां उस पढ़ी-लिखी भाबुक बहिन को बहोज के अभाव में कितना साधारण पति मिला है। एक कर्मक भी ० ए० पास क्लर्क ! जो न तो अमर्षिक मुन्दर है और न अमर्षिक अमुर ! फिर भी उसके लिए डेढ़-दो हजार रुपये कर्म हो गए। कर्म बढ़ता ही जा रहा है।

फिर उसका सम्बन्ध उच्च मध्यवर्ग और पूज्यपति वर्ग से दिनोदिन बढ़ रहा था जिससे उसके कर्म में वृद्धि हो रही थी पर धाय में नहीं। वह जो थोड़ा-बहुत दयुधान और पत्रों से कमाता था उसमें से एक पैसा भी नहीं बचा सकता था। उसे दिन प्रतिदिन अपना रहन-सहन ऊंचा करना पड़ रहा था। उसे अपना होटलों का कर्म बढ़ाना पड़ रहा था। हर तरफ में कर्म बढ़ता ही गया और धाय के बढ़ने का कोई जरिया नहीं बना। निदान वह बहुत तंग हो गया। जब ब्यास ने उसपर तनिक भी रहम नहीं दिखाया तब वह अपने घर में आकर टूटा हुआ-सा पड़ गया।

थोड़ी देर के बाद इन्दु आई। इस बीच इन्दु की जान-महफान अनाम में काफी हो चुकी थी। अनाम उसकी और तीव्र रूप में आकर्षित था। वह अपने जीवन की विषमताओं व अभावों को बिस्मृत करके इन्दु के समक्ष—म अत्यन्त माय्यशासी और मुझी बिचकार हूँ—का प्रदर्शन किया करता था। इस मिथ्या बातों में उसने अन्तम् को गुप्त मिलाता था।

अभी अनाम बुद्धिनाओं में बिरा हुआ था। उसे पता था कि जैसे ही उसके मित्रों का हम बात का पता लगेगा कि उनका पांच सौ रुपये मिले हैं जैसे ही वे अपने रुपयों की मांग कर बैठेंगे और न मिलने पर उन एक अतिरिक्ती मित्र मानेंगे ? पर वह बरे भी ता क्या ? क्या जमे हृदयहीन धारमी के अयुक्त न बचकर निरुत्पत्ता भी सह्य नहीं। कहां से उसे पता लग

गया कि उसे धाज अपना मिलेगा ? जैसे वह उसके पीछे-पीछे चला आया ? 'मृत है मृत ! उसने ब्रूमा से ब्राम के नाम पर ब्रूमा चाहा पर इन्दु के धायमन ने उसे ऐसा नहीं करने दिया । वह हंसता हुआ-या बोला 'धाज यहाँ अपना नाम कैसे हुआ ? खरियत तो है ?

'बड़े धनवान बन रहे हो ?

'बर्षों ?

'पाँच ही वर्षों में क्या आपके ही हज़म करना चाहते हो ?

मौह ! वह संकीर्ण हो गया 'यह कैसे हो सकता है इन्दु, तुम्हारे बिना अपना नाम इन वर्षों का उपयोग नहीं कर सकता । बोसो कहां चलीगी ?

'बीबरी रेस्ता में ।

'मैं अभी तैयार होता हूँ ।

धनाम ने मूट से कपड़े पहने धीरे चल पड़ा । बीबरी रेस्ता एक सख्त स्तर का रेस्ता है । यहाँ धनाम के पचीस वर्षों का वय हो गया । मन से न चाहते हुए भी उसने इन्दु के समक्ष अत्यन्त खरियाबिली का परिचय दिया ।

रात को वह मीठा । धनामिका भोजन बनाकर बैठी हुई थी । समीप बरबा अपने अन्तस् की बसत का परिचय दे रही थी । वह कह रही थी 'यह इन्दु धनाम बाबू को अपने प्रेम-जाल में फँसा रही है । एक सामान्य धर्म्यापिका का खरिब कैसे हो सकता है वह तुमसे नहीं छिपा है धनामिका बीबी ?

धनामिका ने बरबा को समझाया 'किसी परमात्मा का नाम ठीक नहीं है । सभी धार्मिक धर्म्य होते हैं धीरे सभी धुरे ।

'माँझन नहीं धनो बीबी ये नहीं धीरे धर्म्यापिकाएँ कभी भी खरिब की धर्म्य नहीं होती । अपने धनाम बाबू बड़े भोले हैं वह इन्दु की मीठी-मीठी बातों में धा गए । 'तुम धाद रत्नना एक न एक दिन यह धनाम बाबू से धर्म्य धन करोगी ।

बैसाखी की 'अद्-अद्' सुनते ही बरदा चुप हा गई। घनामिका ने इस तरह का भाव बनाया जैसे वह बहुत देर से अपने घापमें खोई हुई है। किबाड़ों के पास 'अद्-अद्' धाने के सामने ही बरदा उठकर खसी गई। घनाम न सहजता से पूछा 'मरे भाते ही कम पड़ी।

'हां मां पुकार रही है।

घनाम ने कुछ नहीं कहा। वह भीतर जाता घामा। बैसाखी का बीबार के सहारे खड़ा करके वह कुर्नी पर बैठ गया। मुह पर हाथ फेरकर उसने एक महारा निदबास लिया।

घनामिका ने भाकर पूछा 'क्या माऊ ?

'नहीं।

'क्यों ?

'मने बाहर साना खा लिया।

'छिर घापने मुझे कहा क्यों नहीं ?

'तुम पर मैं नहीं थी इसी बीच इन्धु धा गई और मैं उसके साथ जाता गया।

'बाबा रे बाबा इन्धु ने घापपर गया जागू कर दिया है कि घाप उसने हगारों पर नाचने लगे ! उसे तुरन्त बरदा की बात याद हो गई।

घनाम ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। वह धर्म भरी दृष्टि में घनामिका को देखता रहा। घनामिका पर उस दृष्टि की कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। वह निर्विकार भाव से बोली 'बुरा न मानें तो मैं घापको एक बात कहती हूँ।

'कहो ? घनाम की दृष्टि में मुममता थी।

'घाप इन्धु से शादी कर लीजिए।

जैसे हृदय बीजा के सभी तारों को मजमना दिया है ऐसा प्रतीत हुआ घनाम को। वह एकटक घनामिका के मुम्कराते हुए चेहरे को देखता रहा।

तब वह धीरे से बोला 'मे किसीते विवाह करते कर सकता हूँ मेरे पास पैसा नहीं है मेरी कोई स्वामी धीर धनही धाय नहीं है। धनो, धार सहन नहीं है। धनामिका कुछ बोले इसके पहले ही धनाम फिर बोल उठा 'धाय मुझे बांध सी स्पए मिले तोबा बहिन के विवाह का कुछ करने चुकाऊँगा। कुछ मित्रों को बोझा-बोझा देकर उनको बीरज दूंगा। पर राजस बवास बीच में ही सा टपका धीर सब कुछ छीन कर ले गया। धनामिका ऐसा बवाहीत धाबसी मेंने कहीं भी नहीं बैसा। 'मेने उसे कहा कि तुम धाधा ले लो पर नहीं पूरे अपने पाँच सी स्पमे लिये। धन बताओ कि मुझे उन सागों के सामने कितना धर्मिबा होता पड़ेगा।'

धनामिका ने धनाम की बात का कोई उत्तर नहीं दिया धीर वह बसी गई। बाते-बाते उसका चेहरा बंभीर हो गया।

दूसरे ही दिन सबेरे धनामिका ने बवाल के पास से धनाम को झाई सी टाय साकर दे दिए। धनाम का हृदय उस बासी के प्रति अठा से नर पाया। उसने कुछ कहा चाहा पर धनामिका ने मनाकर दिया। बस इतना ही कहा 'धाय जाकर बवाल बाबू के कायब पर हस्तांतर कर धाएया।

जब बटना से धाय तक बवाल धनाम के प्रति उतना कठोर नहीं बना जितना धीरों के प्रति बनता था। धनाम का जीवन पूर्ववत् ही था। धनामिका उसकी बासी बरबा उसकी पड़ोसिन धीर हनु उसकी प्रेमिका।

बस ये ही जीवन के इर्मिर्द दीड़ने वाले चरित।

५

प्रभात की स्वर्णिम किरणें ऊँचे-ऊँचे मकानों की दीवारों का चम्बन सेती हुई नाच रही थी। धनाम व मुरज की धीर पढ़ने वाली बिकुकी को सोसा ताकि बूच कमरे में जा जाए।

धनामिका अभी तक नहीं आई थी। इनर कुछ दिनों से उसकी उबीपत

छीक नहीं थी।

बरदा ने किबाड़ लटकटाए। घनाम ने बमल में बैसासी बबाकर द्वार लासा। बरदा चाय साईं थी।

'घनलो बीदी की भाजा है कि अब तक बहु न घाए अब तक में घापको चाय का प्रबन्ध कर दिया कर्क।

घनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया। बहु चुपचाप अपनी कुर्सी पर बैठकर चाय पीने लगा।

बरदा बोली 'घाप हमारे साथ सिनेमा नहीं मण पर इन्दु के साथ। बीच में ही घनाम बोला 'बरदा में धीर इन्दु जिस काम के लिए गए थे वह काम नहीं बना तो हम सिनेमा देखने चले गए।

बहु रुठती हुई बोली 'सच क्यों नहीं कहते कि मुझ जैसी कासी लड़की के साथ घापको सिनेमा देखना अच्छा नहीं लगता।

'यह बात नहीं है बरदा में तुम्हारे साथ कई बार सिनेमा देख चुका हूँ। 'भूठ क्यों बोमते हैं ? घाप मेरे साथ सिनेमा देखन चले थे कि म घापको जबरदस्ती से गई ?

'तुम जैसा भी चाहो सोच सकती हो इसकी तुम्हें स्वतंत्रता है। बरदा में किसीके हृदय को नहीं बुलाता। सच कष्ट इन्दु से मैं प्यार करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि बहु मुझमें लुप्त रहे। बदाचित्त उसको लुप्त करने में तुम्हारा व्यवहार भी हो सकता है पर मुझ विश्वास है कि तुम उसका बुरा नहीं मनोगी ? उसे मेरी मजबूरी समझोगी।

बरदा को घनाम से ऐसे चर्चों की घाघा नहीं थी। बहु स्वयं घनाम पर घनाम घपिकार समझती थी। सोचती थी कि यदि बहु धीर मगाएगी तो घनाम उसके प्यार को स्वीकार कर सकता है। किन्तु धाव घनामक घनाम म उसके भ्रम के घाबरण को बितीर्ण कर दिया। बहु विस्मित-नीं टमी-नीं घनाम को देखती रही। घनाम अपनी दृष्टि को बेमती फिरफों पर बपाकर

बोसा 'बरवा मेरे स्नेह को गमठ मठ समझना इस मकाम में एक सरीफ व्यक्ति होकर रहना चाहता हूँ। तुम्हारे बाबा (पिता) धीरतुम्हारी माँ मुझे अपना बेटा समझते हैं। मैं उनके विश्वास को तोना नहीं चाहता। मैं उनके हृदयों पर घाघात नहीं पहुँचाना चाहता।

बरवा प्यासा लेकर बसी गई।

अनाम लापरवाही से अपने आपसे बोसा 'यह कासी लड़की अपना मापको क्या समझती है! मुझे पहले ही कुछ पन्धेरा बा कि यह मुझे अपने पास में पंखाएगी। छिः न रंग धीर न रूप।

उसने उठकर धंगड़ाई सी धीर फिर बसमखाने में चला गया।

अनामिका धा मई थी। वह स्टोम बलाकर चाम बनाने लगी। धाज उसने हरे रंग की साड़ी धीर नीला आडज पहन रखा था। इधर उसका बेहूरा सफ़ा हुआ था रहा था। बार-बार पूछने पर भी अनाम उबसे संतोषप्रब उत्तर नहीं पा रहा था। वह अनाम को यह कहकर टान देती थी कि वह बीमार है उसे पेट की शिकायत है।

अनामिका अनाम के लिए सोचने का विषय थी। यह मारी रहस्यमयी-सी उसके सम्मुख लड़ी थी। एक जनता प्रश्न अनाम के अस्तित्व में अनामिका को लेकर भ्रमा करता था। अनामिका बीस बर्य की पार कर रही थी। उसने उसे कभी प्रेम धीर परिवार के बारे में बातचीत करते नहीं देखा। वह छांत धीर मौन रहती थी। जब कभी अनाम को उबास देरती तब वह उसकी उबासी को दूर करने का प्रयत्न करती थी। अनाम न अनामिका को तभी हंसते-मुस्कराते देखा था।

एक बार अनाम ने अनामिका से पूछा था 'तुम्हारा महारा मीन मेरी बिता का कारण बन जाता है।

आप मेरी बिता न कीबिए अनाम बाबू कुछ ऐसी शिष्या होती है।

जिनके जीवन में चार एकान्त के प्रतिरिक्त कुछ होता ही नहीं। परम तुम उनके जीवन का प्रतिरूप होता है।

‘इन बातों से मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता। प्रणो ! क्या तुम्हारा विवाह हो गया ?

‘नहीं।

‘फिर तुम विवाह क्यों नहीं करती ?

घनामिका के चेहरे पर तरस भरी हंसी बिखर गई, ‘एक दासी के साथ कौन विवाह करेगा ? फिर मां के धाँस पर स्या कसंक ? घनाम बाबू मां का कसंक उसकी सम्पत्ति को भी कसंकित कर देता है। और फिर मैं मां को छोड़कर कहीं भी जाना नहीं चाहती। वह पोढ़ाओं के मामल में धरती माता है।

घनाम ने देखा कि घनामिका के चेहरे पर प्रसन्नता की घटाएँ उमड़ आई हैं।

‘भाप बार-बार पूछा करते हैं मेरे बारे में जानने की इच्छा रखते हैं चाहकर भी मैं अपने बारे में आपको नहीं बताना चाहती।

‘क्यों ?

‘भाप बिचकार हैं भापके बारे में लोग कहते हैं कि भापमें मनुष्यता कूट-कूटकर भरी हुई है लेकिन मैं ऐसा नहीं समझती। मैं इतना ही जानती हूँ कि कसाकार भी एक साधारण मनुष्य होता है।

‘लेकिन तुम्हारी मां ने कौन-सा पाप किया ?

‘वह अपने पति को छोड़कर भाग गई। मैं बर्जसकर हूँ, मेरे बाप का कोई पता नहीं और न ही मेरी मां मुझे यह बताना चाहती है। भावावेग में उसे जान कहना या न कह भी कह गई। उसके हृदय पर झटका-सा लगा।

घनाम ने तुरन्त प्रश्न किया ‘फिर भी तुम अपनी मां को अपनी सेवा करती हो ?

‘बह मां है, बस इसीलिए ।

इस उत्तर ने अनाम के मस्तिष्क में अनामिका के लिए आश्चर्य की सर्वना कर दी । बह अनामिका के सुख धीरे-धीरे का मनेष्ट ध्यान रखने लगी ।

पुस्तकखाने के किबाड़ बोसे छात्र ही बैठासी की ‘बद-बद’ सुनाई पड़ी । अनामिका ने तुरन्त चाय की ट्रे अनाम की मेज पर रख दी । अनाम ने बैठे ही कहा ‘जब तुम्हारी तबीयत खराब थी तब तुम यहाँ क्यों आईं ?

‘बेकार बैठे बैठे मन नहीं लगा ।

‘सिद्धि तबीयत अधिक खराब हो गई तब ?

‘तब अपने आपकी ईश्वर के सहारे छोड़ दूंगी । बह तुरन्त बात बदल-कर बोली ‘आपकी ब्याज बाबू ने कहलबाया है कि आप मंजर बाबू के यहाँ चले जाएं ।

‘मे ! क्यों ?

‘बे इन्दु की पुस्तक मंजर बाबू द्वारा खपवा बिये ! आज सबेरे के बाप के मुँह अपने एक ‘मुश्किल’ के यहाँ जाते हुए मिस गए थे । अनामक पृष्ठ-टिया तामते हुए बोसे जैसे वे मुझे सबेरे इस बात को कहना मूल गए थे ।

‘अबदा कस हो उम्हूनि साफ इन्कार कर बिया बा । कह रहे थे कि सोना बनाने की योजना बठाघो ।

‘आप इन्दु को सेतर मंजर बाबू के यहाँ चले आइएगा । में समझती हूँ कि आपका काम चल जाएगा । इससे अधिक में कुछ नहीं जानती ।

‘बड़ा विचित्र आदमी है । अनाम ने धीरे से कहा धीरे फिर आम पीने लगी । क्या उम रागु के मन में भी इस दासी के प्रति ? एक प्रश्न अनाम के मस्तिष्क में आकर माचने लगा ।

बह चाय पीकर तुरन्त इन्दु के यहाँ जाने को तयार हो गया । अनामिका को उसने माना न बनान के लिए कह दिया । जब बह इन्दु के घर

पहुँचा तब इन्दु की बिपदा माँ खाना बना रही थी। उसकी बैसाखी की 'कड़-कड़' सुनकर उसने भीतर से ही इन्दु की आवाज दी। इन्दु ने उसे ऊपर घाने की कहा। वह धीरे धीरे सीढ़ियाँ चढ़ता हुआ कमरे में गया। उसका साँस फूल गया था। वह भ्रम से एक कुर्सी पर बैठ गया। इन्दु ने उसके कंधों पर हाथ रखते हुए कहा 'तुम्हें ऊपर चढ़ने में क्या कष्ट होता है ?

घनाम ने इन्दु की घोर देखा। उसकी धारों में बया धंगारे-सी बहक रही थी। वह मन ही मन मुँह में भर उठा पर ऊपर से स्वामाबिक स्वर में बोला 'नहीं नहीं मुझे चढ़ना भी कष्ट नहीं होता तुम एक गिलास पानी का पिलाओ न ?

उसने पानी इस तरह पिया जैसे वह अत्यन्त व्यासा है। पानी पीकर उसने एक गहरा साँस लिया। साँस लेकर वह बोला 'तुम्हें स्कूल कितने बजे जाता है ? क्या तुम आज छुट्टी नहीं से सकती ?

'आज मैंने छुट्टी पहल से ही से रखी है।

'फिर तुम तैयार हो जाओ हमें भँवर बाबू के यहाँ जाता है। तुम्हारी पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित हो आयी ऐसा मेरा क्याल है।

इन्दु की धारों में चमक था मई। वह भीतर के कमरे से कपड़े बरसती हुई बोली 'कभी-कभी घटनाएं बढ़ी ठेकी से घटती है जिनपर हम घासानी ने बि-वास भी नहीं कर सकते। कम हम निराश हो चुके थे पर आज घासा हमारे मम्मूख फिर नाथ जमी है। तभी हमें न चाहते हुए भी ईश्वर को मानना पड़ता है। घनाम ! क्या हमारे मिसन को तुम ईश्वरयोग नहीं मानते ?

'मानता हूँ।

'तुम्हारा वह बिच बैलकर मुझ ऐसा मगा कि तुम्हारे बिच मनुष्य को पीग्यहीन बनाते ह। जीवन को मृत्यु परास्त कर दे यह भाव धर्ये नहीं ता भी तुम्हारी टीमि के चमत्कार के कारण वह बिच प्रभावशाली हा गया था।

धीर मुझे वह चित्र इतना प्रिय लगा कि मैंने उसकी पर्चा अपने कई परिचितों में की। उसमें एक विचित्र आकर्षण था जो धारपी को एक नये ढंग से प्रभावित करता था। फिर हमारे स्कूल में उसका ! हमारी मेट ! प्रवाद मित्रता धीर ! इन्दु इठात् चुप हो गई। घनाम घमसा शक्य मुनने के लिए उत्तजित हो उठा। वह क्षीघ्रता से अपनी बैसाखी पर हाथ फेरता हुआ बोला 'धीर क्या इन्दु ?'

'धीर तुमने मुझे मेकल के क्षेत्र में सहयोग दिया प्लसबक में हिस्सी की एक धरती मेकिका बन गई। हालांकि यह 'पिछा' बहुत कम प्राय वासा है किन्तु इसमें यतुप्य को बड़ा सम्मान मिलता है धीर में सम्मान को सबसे अधिक महत्व देती हूँ।

घमपी भाषा पर तुपात्पात होने के बाद घनाम ने बात को पुनः उसी तारतम्य पर लाकर कहा 'तुम कहना कुछ धीर चाहती थीं धीर कह गईं कुछ धीर।

इन्दु बाहर आ गई थी। उसने इन्डनुम की एक सुन्दर चौड़ी किनारी की साड़ी पहन रखी थी। सलाह पर छोटी गोम विन्दु धीर हस्का कबरा। घनाम दान भर के लिए स्तब्ध हो गया।

इन्दु भी टेढ़ी करके बोली 'मैं क्या कहना चाहती थी ?

घनाम बैसाखी को बगल में बजाकर उठता हुआ बोला 'यह तुम्हीं बता सकती हो। तुम्हारे धर्ममन के भावों को मेरी जिज्ञा बापी का रूप नहीं दे सकती।

बैसाखी की 'खट-खट' की फिर शून्य हुई। घनाम अब बिसकुम रोमांटिक मुद्रा में इन्दु के समीप खड़ा था। इन्दु ने उसका हाथ पकड़ा धीर मृदु स्वर में बोली 'तुम्हारे कलाकारों का समाज धाजकल हमारी बड़ी पर्चा करने लगा है। वे जलन करने वाले प्रतिशक्तियों की तरह हमारे बारे में धर्ममल धानाप धीर गिराधार हिन्दुली प्रेम बचान् कर रहे हैं। घनाम !

क्या ऐसी बकवास सुनकर तुम चिन्तित नहीं होते ?

अनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह इस चर्चा को यहीं पर खत्म कर देना चाहता था। वह इन्दु की माँ के समक्ष किञ्चिन् भी सिद्धमा बनने को तैयार नहीं था। क्योंकि वह जानता था कि आर्थिक रूप से अव्यवस्थित इन्दु की माँ इन्दु के विवाह में कम इच्छुक है और चाड़ी बहुत है भी तो वह ऐसा घर चाहती है जो उसे मीकरी करना न छुड़ाए। अनाम यह भी मसी माँति जानता था कि उसके पास कोई मरचारी मीकरी नहीं है वह करना भी नहीं चाहता भोवर-एज भी हो गया है और फिर जो स्वतंत्रता और सम्मान इस काम में है वह किसी भी काम में नहीं।

अनाम और इन्दु घर से बाहर आ गए थे। अनाम बात करने के मूढ़ में था घत उसने टैक्नी ली। टैक्नी में बैठने के साथ ही अनाम ने कहा 'यब बताओ तुम उस समय क्या कह रही थीं ?

मे कह रही थी कि क्या इन निराधार चर्चाओं से तुम परेशान नहीं होते ? उमने नितान्त सहज भाव से कहा।

'नहीं !

'क्यों ?

'क्योंकि इन चर्चाओं में सत्य का आधार बोनता है। क्या तुम मेरे और तुम्हारे सम्बन्धों के बीच इस कोष से नहीं सोचती कि हमारे सम्बन्ध यहाँ सम्बन्ध हैं ?

'सम्बन्ध प्रेम का रूप नहीं ले सकते। वे गहरी मित्रता की संज्ञा सम्बन्ध में पाते हैं।

'सम्बन्ध ही प्राग जन्मकर यहाँ प्रेम का रूप ले लेते हैं। दो व्यक्ति बिना व्यक्ति मिलते हैं मित्र बनन ह मित्रता बढ़नी है मित्रता प्रेम का रूप पारण करके विवाह के पवित्र सम्बन्ध में बंध जाती है।

'फिर मुझे गाबघान हो जाना चाहिए। इन्दु के मुरा पर अंजनता थी

जो घनाम को बहुत माई ।

घनाम के मन में थाया कि आज वह इन्दु को अपने प्यार के बारे में स्पष्ट कहें पर उसका साहस नहीं हुआ । प्रेम का स्पष्ट बखान उसे पूरुह पन धीर मूर्खता का परिणामक लगा । यह तो एक प्रह्लास की चीज है । जिसे वह भी जानता था धीर इन्दु भी जानती थी ।

बाएँ ।

टीसरी मूढ़ बत्ती । इन्दु ने अपनी मर्लन दूसरी धीर कर ली । घनाम भी बिचारों में लो गया । आज से पांच वर्ष पहले वह जोधपुर में था । इसी प्रकार उसका प्रतिमा से प्यार हुआ था । प्रतिमा उसपर जान बेटी थी धीर वह भी प्रतिमा के बिना एक पस भी नहीं रह सकता था किन्तु प्रतिमा के माता-पिता एक लंपड़े के साथ अपनी बेटी को बांधने को तैयार नहीं हुए । इस बात का पता जब घनाम के मित्रों को लगा तो उनके मन की कृपा भड़क उठी धीर उन्होंने विचित्र कमाएँ पढ़ लीं । एक मित्र ने तो एक कहानी ही बना डाली । घनाम का हाथ अपनी टाँग पर चला गया । वह टाँग पर हाथ फेरने लगा । मंजर बाबू की कोठी धा गई थी । टीसरी बत्ती धीर घनाम धीर इन्दु दोनों ने दरबान को भीतर सूचना पहुंचाने के लिए कहा ।

एक भव्य कोठी । मंगमरमर धीर सीमेंट की बनी । राजसी सामन्तों जैसे ठाट धीर रौनक ।

वे दोनों विस्मित दृष्टि से देखते रहे ।

मंजर बाबू ने बाहर भाकर सरिमत मुक्त से उनका स्वागत किया । वे उन्हें एक आसीषान कमरे में ले गए जिनको इन्दु एकटक देखती रही । जैसे जैसे ब्यबस्थित धीर धाधुनिक सामान से सज्जित कमरे घायल प्रिय हों । मंजर बाबू उसकी बात को समझ गए । तनिक मुस्कराकर बोले 'इन्दु जी कमरा पसन्द थाया ?

‘बहुत ! उसने इस तरह कहा जैसे कोई बच्चा धनीब दस्तु देसकर लुगी में मूमता है ।

पशु ! आप बैठिए अपना जी ! आपको खड़े होने में कष्ट होगा ।
भंबर बाबू ने स्नहमिक्त स्वर में कहा ‘घाइए इन्दु जी मैं आपको मकान दिताऊँ ।

इन्दु ने प्रश्न मरी दृष्टि से अपना की घोर देखा । भंबर बाबू चौकते हुए बोले ‘घोह ! अपना जी मेरे मकान को पहले ही देख चुके हैं । व्यर्थ में चढ़ने-उतरने की तकसीफ इन्हें नहीं देनी चाहिए ।

अनाम के मन में आया कि वह इस सेठ के बच्चे के सिर पर बैसाली दे मारे । क्या देवता बन रहा है ? संगड़ा हूँ तो क्या अभी तुमसे अधिक बन सकता हूँ ।

पूजा से उसका मुन बिह्वल हो गया किन्तु वह नहीं बोला घोर न ही किसीने उसके चेहरे को देखा ।

इन्दु घोर भंबर बाबू बाहर चले गए ।

इन्दु भंबर बाबू के ऐश्वर्य से बहुत प्रभावित हुई । प्रत्येक कमरे की प्रशंसा के साथ-साथ भंबर बाबू इन्दु की कहानियों की प्रशंसा कर दिया करते थे । अनाम के बिर्षों के बारे में भंबर बाबू की घोर इन्दु की राय पर स्वर मिस गई जिसमे इन्दु को गौरवानुभूति हुई । उसे लगा कि उसका सोचना सही है ।

अनाम घोर एवान्त में बैठा हुआ भंबर बाबू घोर इन्दु के प्रति द्वेष भरे मीन जर्मार छोड़ रहा था । उसका मन ईर्ष्या के कारण जल रहा था । यदि वह इन्दु को प्यार नहीं करता तो इसी समय यहाँ से उटकर जाता जाता । ऐसी घण्टिना उसके लिए असह्य थी । तभी उसके कमरों में गर्म तेज-भी इन्दु घोर भंबर बाबू की मुक्त सम्मिलित हंसी पड़ी । वह बिबन नायक की भाँति उत्तम हो गया । उसने चाहा कि वह इन्दु को बाहर बहे

कि एक अपरिचित सेठ के समस्त प्रथम बेंच में अपने को इतना बिलग नहीं बनाता चाहिए। इससे व्यक्ति की गंभीरता क्षम हो जाती है। लेकिन ये सब उसके मन के पुसाव से जिन्हें वह अपनी इच्छानुसार पका रहा था।

अप्रत्याशित हल्की हंसी के साथ इन्दु धीरे-धीरे भंवर बाबू ने कमरे में प्रवेश किया। अनाम की आकृति को देखकर चतुर व्यापारी भंवर बाबू तुरन्त समझ गए कि इसके दिल पर क्या गुजर रही है। लमा-भाषना करके बोले 'कुछ समय अधिक समय गया अनाम जी आपकी यह इन्दु हर कल में दिनचरसी लेती है।

उसने कृत्रिम सहजता से कहा 'कोई बात नहीं। इनको संतोष तो हो गया। इनको आपका मकान पसंद आया कि नहीं ?

इन्दु अपने घब्रों पर जोर देती हुई बोली 'मुझे हर मन्दी चीज पसंद आती है चाहे वह अपनी हो या पराई। सब भंवर बाबू के मकान में रहने की इच्छा होती है।

इसपर भंवर बाबू चुप रहे। नीकर चाय धीरे-धीरे पापड़ तसकर से पिया था। इन्दु ने सबको चाय बनाकर रखी। कुछ देर व्यर्थ का मौन छाय रहा।

भंवर बाबू ने ही मौन भंग किया 'वयास ने कम अप्रत्याशित आपने कहानी-संग्रह की बात बता दी।

अनाम ने बीच में ही कहा 'भंवर बाबू ! इनकी कहानियां बड़ी धपील करती हैं। सर्वन के मामले में इनका हृदय धनोसा है। यही कथावस्तु धीरे-धीरे धरिष-धरिष में से नवीन पीढ़ी के कथाकारों के साथ सहजता से बैठ सकती है।

'मैं आधुनिक साहित्य पढ़ता रहता हूँ। साहित्य की धोर मेरी नहीं दिनचरसी है। मैं धमूमन राजस्थानियों से भिन्न हूँ। मेरे जीवन का मूल ध्येय वैया नहीं धार्मिक है। धार्मिक भी सोईस्य। उरैस्यहीन धार्मिक में धेर

विश्वास नहीं। मैं चाहता हूँ कि एक प्रकाशन-संस्था खोसू।

‘यह तो बहुत अच्छी बात है।

‘मैं कुछ खपवा लगा सकता हूँ। पहले मेरा एक पत्र निकालने का बिचार था अब मैंने यह बिचार बदल दिया है। दयास मे मुझ इन्दु जी के बारे में बताया। जैसे स्त्रियाँ के मामले में यह निरा खोरा है। प्यार और रोमांस पर यह सर्वथा बेरुकी से बातचीत करता है। लेकिन इन्दु जी के बारे में उसने गहरी तो नहीं फिर भी तनिक दिलचस्पी दिखाई। इनकी एक कहानी की प्रशंसा भी की।

इन्दु ने गर्व में कहा ‘उस कहानी को मैंने बड़ी महत्त्व से लिया है। ऐसा कहने समय उसकी दृष्टि घनाम पर जम गई। घनाम पूरबत गंभीर था जैसा उसके चेहरे पर कोई मयें भाव नहीं पाए हें।

मंजर बाबू ने बात के सिलसिले को जोड़ते हुए कहा ‘इस राजधानी में जैसे शंकरों सेलक है। बड़े-बड़े सेठों की जी हजुरी करने वाम उनके सेल सिलखर प्राचीनिका कमामे वाले उनकी झुड़ी प्रशंसा करके अपने मासिक और दैनिक पत्र खमाने वाले तथा उन्हें व्यर्थ में साहित्यकार कहकर पैसा ऐंठने वाले। वस्तुतः यहां साहित्यिक ध्यागारी बहुत अधिक हैं। और तो और यह राजधानी साधना की कम पर बिखाबट की बड़ी दुकान है। ऐसी स्थिति में मेरे द्वारा प्रकाशन-संस्था का संघामन कुछ व्यक्तियों की दृष्टि में निहित स्वार्थों का प्रतीक माना जा सकता है किन्तु इसमें ऐसा कोई स्वार्थ नहीं है। मैं बिगुल रूप से साहित्य-सेवा करना चाहता हूँ।

‘इसका मतलब है आप बड़े पैमाने पर यह कार्य करना चाहते हैं।

‘नहीं। उसने गर्वन को झटका देकर कहा ‘मे फिलहाल बट रूप में इसे नहीं पोसना चाहता। मैं बेबत आपकी और इन्दु जी की ममी पुस्तकें छापने का बिचार रखता हूँ। मैं आपके बित्रों का एक एमबम तथा आपकी बिब-सीसी पर बिभिन्न धामोचकों के सेगों का मंप्रह छापना

चाहता हूँ ।

घनाम ने तुरन्त कहा 'यह तो घीर प्रच्छा रहेगा । स्वामीय सेसकों न तो सेसक की संज्ञा देना ही साहित्य का अपमान है । भंबर बाबू, यहाँ सेसक चिन्तन-मगन के नाम पर धूम्य हैं । न इन्होंने प्ययड को पढ़ा घीर मार्क्स को । अ्य हैवलाक एमिस घीर सार्थ के क्याचित् नाम भी न जानते होंगे । धाम मनोबिज्ञान का खमाबा है । भला इनके पढ़े बिना को साहित्यकार जीवित रह सकता है ! घीर पिक्कासो बालबाग पौल कोय यामिनीराय धुमा टैमोर घादि चित्रकारों के बारे में यह विस्तृत गतें बामते ।

भंबर बाबू ने अपनी सहमति प्रकट की ।

इन्नु ने तुरन्त बात के प्रसंग को बरस दिया फिर मैं समझती हूँ कि बात पक्की हो गई । अब मैं अपनी सहेलियों में कहानी-संघर्ष के प्रकाश की खोर-खोर से बीपबा कर सकती हूँ ?

बिसक ।

इसके बाद घनाम प्रकाशन की एक बपरेखा बनाने का कामबा करके उठ लड़ा हुआ । बाठे-बाठे भंबर बाबू ने इन्नु से कहा 'भाप मुझे प्येन नम्बर ३०३३ पर कभी नौ याद कर सकती हूँ ।

बैसाजो की 'सद्-सद्' फिर मुनाई पड़ी । बाहर घाते ही इन्नु के बेहरे पर उल्लास बिखर गया । वह कहकती हुई बिड़िया-सी मधुर स्वर में बोली 'घनाम भंबर बाबू की उन्न मेरे क्याल में तीस-वेतीस की होपी । कला के अन्ध पारली हूँ ?

भायब । छोटा-सा उत्तर दिया घनाम ने ।

६

इसर घनामिका अधिक अस्वस्थ हो गई थी इसलिए सवेरे की जाग

बरदा साया करती थी। घनाम का उसके माय का व्यवहार बरा-सा भी मुन्बर नहीं था। वह हर समय ऐसे मायों का प्रदर्शन किया करता था जैसे वह बरदा स पूर, बहुत पूर मानता चाहता है। यही कारण था कि जब बरदा सख् बग्न की 'कमस' घमबा 'साबिभी' की बर्बा करती तो घनाम उसके बारे में इस तरह उतर दिया करता था जैसे य बातें जीवन में कोई महत्व नहीं रखती हैं। ब्यर्थ ही समय को खराब करती है परन्तु कल सवेरे एक विचित्र अकल्पनीय घटना घट गई।

घमी तक घनाम बिस्तरे पर सोया हुआ था। बरदा ने चाय की प्यासी को मेज पर रखकर उसे जगाया। घनाम ने अपनी घलसाईं घालों से बरदा को देखा। हमेशा की घनेला घाब बरदा कुछ अधिक घबड़ी लप रही थी। उसके गालों में उस्मास की परछाईयां नाच रही थीं। उसकी घालों में प्यार की यह छान्ना ठौर रही थी। उसका घरीर उसे इतना कासा घीर मड़ा नहीं मया जैसा उसे सबा सगठा था। घाब उस उसमें भी सौन्दर्य की ज्योत्स्ना बिकीय होती हुई सगी। उसके बाल कुमे घीर नीचे कमर तक घितराए हुए थे। घनाम उन सबको एकटक देखता रहा। उसने खण भर के लिए सोचा 'बरदा इतनी बढमुरत नहीं है जितनी मैं समझता हूँ।

'चाय !

घनाम चाय पीता हुआ शाभोशी स बरदा के बारे में सोचता रहा। बरदा मंभरमर के कुत की मांति निदबम घीर घटस घटी थी। चाय समाप्त करके घनाम ने प्यासे को मेज पर रख दिया घीर अपने घाबरा बहमाने की बेघ्टा की ताबि बरदा यह समझ जैसे वह उसमें तनिक भी बिभसवी नहीं से रहा है। लेकिन बरदा पूर्ववत् मड़ा रही। उसकी घालों में एक जपेक्षित मारी की घनूषत बाह घीर प्यास थी जो तृप्ति की माय कर रही थी। एक करण घसहायता थी जिसको घनाम पूरी तरह देख भी नहीं सकता था।

‘क्या बात है बरबा ? उसने अपने हृदय के धान्दोलन को दबाते हुए सहज स्वर में पूछा ‘तुम मुझे इस तरह क्यों बेक रही हो ?

‘मे ! वह अस्पष्ट रूप से इतना कहकर कुर्सी पर बैठ गई जैसे कोई भयभीत प्राणी हो जो दूटकर गिर पड़ा हो। उसकी साँसें तेज थीं और उसके सारे बदन में कंपकंपी थी। घनाम के मन में कई प्रश्न एकसाथ उठे और बैठ गए। उसने अपनी दृष्टि दूसरी ओर फेर ली

घनाम बाबू ! उसने कहा।

‘कहो।

‘मे चाहती हूँ। उसने बड़ी कठिनाता से कहना प्रारम्भ किया ‘मे पापकी चाहती हूँ। मेँ-पापकी प्यार करती हूँ। इतना कह कर वह चुप हो गई। हर शब्द उसके मन में घटक रहा था।

घनाम ने भीलना चाहा पर त भासूम उसका बसा क्यों रुक गया। उसने इतना ही कहा ‘बरबा !

बरबा ने सम्पूर्ण समपन्न भरी दृष्टि से घनाम की ओर देखा। वह प्रेम भरी दृष्टि एक औरत की प्यार भरी नजर घनाम के लिए प्रसन्न हो उठी। उसने अपनी प्रयत्नियों से बेतना दुरु कर दिया।

वह धाये बड़ी। उसने अपने काँपते हाथ से घनाम के हाथ का स्पर्श किया। एक धान्दोलन एक कम्पन उसकी रम-रग में उत्पन्न हो गया। उसे सदा वह जाँपता स्पर्श और गम भाहें उसके तन और मन में एक ऐसे धाकर्षण को जगम दे रही है जिसे वह सहन नहीं कर सकता। उसने साहस करके बरबा के बेहरे को देखा। बेहरा बहस गया था। उसकी धाँसों में भागीत्व का घोत्र और समर्पण का धाँसोफ भील था। घनाम के हाथ स्वतः ही बड़ गए। बरबा ने घनाम मस्तक उसकी ओर में रख दिया।

मेव हिम उठी। उसके हिसने के साथ बैसाली गिर पड़ी। बैसाली के साथ घनाम के मस्तिष्क में अपनी मूर्तती हुई टाँप घूम गई। उसे लगा कि

वह इस उसेबना को नहीं संयास सक्या । उसके हाथ बीसे पड़ मए । सहुसा
 उस दिन बासी स्मृति उसके मागस-मटस पर घूम गई । वह बस पर चढ़ रखा
 बा और बरदा की ध्यंम्य मरी वृष्टि उसकी टूटी टॉम का उपहास कर रही
 थी । फिर उसके मन में पूजा की सहरे वीड़ पड़ी । उसने बरदा को अपने
 से प्राप्त करना चाहा । बरदा नेत्रों में धामू मरकर कह उठी 'घनाम बाबू,
 ये प्राप्तये प्यार करती हूँ प्यार करती हूँ मुझ अपनी दाहों में भर सीजिए,
 ये केवल प्राप्तकी हूँ । वह अस्फुट स्वर । घनाम बिचसित हो गया । तुरन्त
 अपनी बीसासी को पकड़कर लड़ा हा गया । संमलकर बोला 'घायब तुम
 मूल गई हो कि मे एक शरीक प्राप्तकी हूँ । तुम्हें अत्यन्त निम्न स्तर की
 स्त्रियों की तरह इतने आवेस में नहीं घाना चाहिए और न ही तुम्हें इस
 तरह प्रेम का प्रदर्शन करना चाहिए, यह एक अच्छे बरदाने की मङ्गली के
 लिए शोभा नहीं देता ।

घनाम ने जैम ही बाक्यों को समान्त किया बीसे ही बरदा संमलकर
 लड़ी हो गई । थोड़ सज पूर्व उसके मुख पर जो कबला और घोत्र का वह
 मुप्य हो गया और वह तनिक कर्म्य स्वर में बोली 'तुम निर्दय हो, हृदय
 हीन हो तुम मेरे प्यार को दुकरा रहे हो ईस्वर तुम्हारे प्यार को दूक-
 राएया ।

'किन्तु म तुम्हें प्यार नहीं करता इस तरह माबुकता में बहना अच्छा
 नहीं है । तुम्हें समझने की कोशिश करो ।

बरदा फुफकारयी हुई बोली 'मे तुम्हें समझ गई । तुम्हें एक सर्वियं
 देवी की प्रावस्ययता है । लेकिन वह तुम्हें नहीं मिलेगी इन्तु तुम्हें प्यार
 नहीं करेगी वह एक लमड़ को अपना पति क्यों बनाएगी ? वह मरी तरह
 बासी और मही बही है । वह मेरी तरह घनपड़ थोड़े ही है ।

वह बमरे से बाहर बनी गई ।

घनाम के मन में हाहाकार मच गया । उसन सज भर के लिए बिड़की

के चौखटे पर अपनी कुहलियों को टैककर दूर तक पैसी हुई सड़क पर अपनी दृष्टि बौझाई। उसे लगा कि उसकी टांग घबड़ी हो गई है और वह हवा की तरह तेज और बहुत तेज भाग रहा है और बरबा उसे भापते हुए देखकर मन ही मन बल रही है।

उत्पत्त्यात् वह बिन भर कहीं नहीं गया। वह दिन भर बीमार-सा पड़ा रहा जैसे उसमें शक्ति हो नहीं है।

रात्रि की गहरी मित्रा ने उसको काफी स्वस्थ किया। उसका घाबेस और बेचैनी जाती रही। वह स्वस्थ दृष्टि से कम की बटना पर विचारने लगा। उसे लगा कि बरबा में सिर्फ एक कुरूप सड़की का घाबेस और उसे बना है। प्रेम में प्रोत्साहन का प्रभाव पाकर वह पूजा से नर गई और उसने उस हामत में उसको संभड़ा तक कह दिया। प्रताप ने एक घालोचक की भांति अपनी घालोचना करके अपने घापको प्रैयं दिया कि इसका उसे भी कुछ नहीं मानना चाहिए तथा उसे बरबा को एक मादान सड़की समझकर लमा कर देना चाहिए।

उसने ऐसा ही किया तथा बीसासी लेकर वह नीचे चाम पीने बना गया। रास्ते में बरबा की मां मिली। उसने साधारण तरीके से कहा 'बरबा घालने माराज है, प्रताप बाबू।'

प्रताप ने हंसने का प्रयास करते हुए कहा 'वह पगमी है।'

कार्मों से निवृत्त होकर वह इन्दु के घर की घोर चम पड़ा। आज मौसम घण्टा था। लबेरे-लबेरे बादल निकल आए थे जिनमें घाकाज में मृपञ्जने दीड़ रहे थे।

जब वह इन्दु के घर पर पहुँचा तब इन्दु उसे नहीं मिली। इन्दु की मां ने बताया कि वह मंवर बाबू के यहाँ आना लाते गई है। प्रताप का मन राह में भर गया। उसने सोचा कि वह उसे छोड़कर कैसे प्रकेशी मंवर बाबू के यहाँ चमी गई? हटान् उनके मुँह पर कुछ की परछाइयां नाच उठीं।

इन्दु की माँ ने उसके बेहरे के माँ को समझने का प्रयास नहीं किया। वह अपने प्राँचस को ठीक करती हुई बाली 'कल इन्दु की बर्षमाँट है गायब भँवर बाबू इस उपसङ्घ में उसे अपनी मनपसंद का तोहफा खरीद कर देंगे। वह उनके साथ बाजार भी जाएगी और दोपहर तक सीटेंगी ?

प्रनाम ने लामोछी से मुस्कराने की चेष्टा की। वह उसड़े हुए स्वर में बोला 'बह भाए तो उसे सबर कर बेना और कह देना कि प्राँच रात बह मेरे साथ लागे जाएगी।

७

बह तत्काल सीट प्राया।

घर में घुसते ही उसने देखा कि बरवा ने अपने कमरे के घागे बायने से उसकी बैसाखी का भीड़ा बिन्न बनाया है। मन में रोप के होते हुए भी उसने उसके प्रति सापरवाही दिखाई। वह खट-खट करके ऊपर चढ़ा। अप्रत्याशित उसने अपने पाँवों के नीचे मंगड़ा लिखा हुआ देखा। उसने अपने एक पाँव से उस सङ्घ को कुचल दिया। वह जान गया कि यह इरकत बरवा के प्रतिरिक्त किसीकी नहीं हो सकती।

बह पसंघ पर कपड़े जोमकर पड़ गया। तभी डाकिए ने पुकारकर एक बिट्टी दी। घर की बिट्टी थी। प्रनाम को घर की बिट्टी पडने का तनिक भी शौक नहीं है। वह जानता था कि प्रभावप्रस्त बिम्बनी की एक ही भाया है। कुछ इने-गिने सङ्घ है। एक ही माँग है कि बपया भेजा।

एक बार उसने बह बिट्टी रख दी लेकिन फिर उसने पड़नी धारम्भ की। छोटी बहिन ने लिखा था—भैया। हम बड़ बष्ट में हैं। तुम दा-बो महीनों पर भी सौ-नचास बपया नहीं भेजते ? ऐसी मी क्या चित्रकारी हुई ? तुम कहीं सरकारी नौकरी क्यों नहीं कर लिये ? परा सोचो मैं बड़ी हो गई हूँ छोटी बहिन बस बड़ी होन बामी है। माँ रात-दिन हमारे बिबाह

की चिंता में सूझकर कांटा हो रही है। हमसे जगकी दुर्बसा नहीं देखी जाती। और एक तुम हो कि बोड़े बेचकर परदेस में बैठे हो। यह कला-सेवा किस परम्परा की श्रेष्ठ सेवा है? घर का एक-एक सदस्य एक-एक पैसे के लिए ठरसे और तुम वहाँ पर छाही पीपन गुजारो यह कहाँ का इन्साफ है? धमी तुम्हारा एक मित्र धामा था उसने जो कुछ तुम्हारे बारे में कहा उससे हमें समा कि तुम सम्मान और निजी मुझ के पीछे अपने परिवार वालों का भी बलिदान कर सकते हो। इतने धमाकों में भी माँ तुम्हें धाड़ीप लिखती है और छेप ठीक बहिनें प्रणाम।

पैसा न भेजो तो न भेजो पर अपनी कुशलता का समाचार जरूर दे दिया करो।

तुम्हारी बहिन
सरोज

पैसा ! पैसा ! ! पैसा ! ! !

बह बड़बड़ाया 'यह पानम समझते हैं कि मैं यहाँ पर ऐश कर रहा हूँ। मे ही बातता हूँ कि मैं कैसे जी रहा हूँ ? मैं बेटा हूँ इसलिए मैं अपने पीपन की धाकांला और उदरप को छोड़कर परिवार की चक्की में पिसकर अपना अस्तित्व मिटा हूँ। नहीं मैं ऐसा नहीं कर सकता। मुझे एक महान् मित्र कार बनना है, और मैं धरम बनूँगा। और यह मित्र ? जलता प्रमन धनाम के धाये नाथा। उसने बुधा से मुँह बिचका दिया 'ये मित्र धनु का काम करते हैं। उन्हें मेरा सुधी जीवन पसन्द नहीं। कुछ सरकाठी नीकरियाँ कर-करके अपने को बेचते हैं और परिवार की सेवा करके इन्मानुसी विचार वाले बड़े-बूढ़ों की सहानुभूति ग्रहण कर लेते हैं। बि. गिरबिट कहीं के ! किन्तु मैं भी अपने मित्रों के हक में अज्ञा नहीं। और उसने कुछ घटनाओं का विस्लेषण करके जाना कि उसने अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के कारण अपने प्रत्येक मित्र की हानि पहुँचाई है। उसने किसी भी मित्र पर

कार्डूम बनाना नहीं छोड़ा। उनके वास्तविक रूप की विवृत करके उसने उनकी मनचाही चित्नी उड़ाई। फिर वह अपने दोस्तों से प्रणयार्थी की कीसे उम्मीद रख सकता है ?

गीबे से बरबा की मां चित्नाई 'बारह बज रहे हैं और तू अभी तक सोई हुई है बरदा ! घो री बरदा उठ ! उठ न !

'बारह ! घनाम शीका। उसने पत्र को फाड़कर फेंक दिया। 'इन्दु की कस बर्नगांठ है। उसने सोचा 'भंबर बाबू उसे मनपसन्द तोहफ़ा देगे। और वह ?

उसके पास पैसा ही नहीं है। फिर इन्दु उसके बारे में क्या समझी ? भेंट के प्रभाव में वह उसके प्यार का मन्त्र मूल्यांकन कर लेगी। सोचेगी कि जो भेंट नहीं दे सकता वह हूपय क्या देया ? यह पूजीबादी युग है। आशान प्रदान पर सम्बन्धों का चिर रहना प्रबन्धित है। फिर मनुष्य का प्रहम सार्वजनिक स्वार्थों पर अधिक सम्मान की चाह रखता है। फिर पैसा ? पैसा ?

प्रत्यापित उसके मस्तिष्क में दयास की विनीनी और कठोर मूर्ति भाव उठी। एक ऐसे नरपिशाच का हृदयहीन विवृत चेहरा भाव उठा जिसपर मानवीय संवेदना की हल्की रेखाएं भी नहीं थीं। वह कुछ क्षण तक उस कठोर कंजूस को घालियां देता रहा। फिर वह कपड़े पहनकर बहो से चला।

सीढ़ियों पर बरबा उम्भन-सी बैठी थी। इस बार उसने कोई हरकत नहीं की। वह उसे एक दुर्दमनीय भावना से देखती रही। जब उसने देखा कि घनाम घर से बाहर निकल रहा है तब उसने अपने भाई धीम का आवाज मगई कि भीतर आ जाओ।

घनाम ने देखा कि बरबा का छोटा भाई एक सड़की का बयल में दबाए उसी तरह हिचकोले खाता हुआ पल रहा है। घनाम देगकर जोरपत्ती हुआ हंस पड़ा ताकि उसके अन्तर्ग का रोष प्रकट न हो।

उसे बरवा की बुल्लता पचनी नहीं मयी । यह बिनाकुम घणिय्यता है किन्तु वह बर ही बना सकता है । कुछ बुल्लटाएँ ऐसी होती हैं जिनके बारे में घाबमी चाह कर भी कुछ नहीं कर सकता । वह छाने में बैठ चुपा बरवा का बिस्तेपण करने लगा । बरवा की घामु अपरिपक्व है और अपरिपक्व का प्यार या तो सब कृष्ण सहकर देखता है और एक बिनासा भरा स्वयं से प्रसन्न करता रहता है कि ऐसा क्यों होता है ? अबबा उसमें असमना का बिरोध उतपन्न हो जाता है जिसके द्वारा उसका हृदय गुना का प्रदर्शन करता रहता है किन्तु वह गुना एक उपहास प्रपरा हल्की बुल्लता बनकर रह जाती है वैसे बरवा की रह गई है ।

वह कासी और भरी सड़की ?

अज्ञानक सड़क पर कोहराम मचा । मालूम हुआ कि एक सखन एक बुकानदार ने बुद्धता से कह रहे हैं कि वे उसे पैसा दे चुके हैं किन्तु बुकानदार नहीं मान रहा है । तब उबउ सखन एक उम्माठी की तरह अपने बेश में चल रही बाबलेबाबी भीकरपाही अष्टाचार और घनाचार की बातें करने लगे । उन्होंने दून के बोए इस्तास की तरह वर्तमान के सभी लोगों को मुटेरा और ठग कहा पर बुकानदार अपने हठ पर घड़ा ही रहा और उक्त सखन को पैसे देने पड़े । इस घटना ने घनाम की बिचार बाउ भी भंग कर दिया । उसके सामने इन्नु का उस्तास भउ बेहउ नाच उठा । उसके कर-स्परी का संवेदन अब भी घनाम के हृदय में हल्का मधुर मंभीत उतपन्न कर रहा था । घाब इन्नु भंवर बाबू के साव अकेमी क्यों अनी गई ? फिर उसने अपने मन की बाइल बिया कि भंवर बाबू के कवन को टालने की उसकी हिम्मत नहीं हुई होगी । उसने सोचा होगा कि इस अस्वीकृति ने नागाड होकर भंवर बाबू प्रकाशन का कार्य स्वदित न करे ।

कृष्ण ये बनिए होउ ही ऐम है । चाहे तो बेटा भी दे बें नही तो बेटा भी धीन से ।

दयाल का मकान धा गया था।

किन्नाड़ी के समीप पहुँचते ही धनाम को सड़े हुए घन की बास आई।
उसने नाक रुक घागे कमान देकर दरवाजा खटखटाया। धनामिका ने द्वार
खोला। उस देखाते ही उसने विस्मय म पूछा 'तुम यहाँ ? तुम्हारी ठा ठबि
त खराब है न ?

'हाँ पर दयाल बाबू छुटी नहीं देते।

'ओह ! कितना नीच धावमी है नयवान उछे कड़ा धंड दगा।

धनामिका ने मकैत से समझाया कि वे धीरे बोलें। दयाल बाबू के कान
सड़े ठेक हैं।

'क्या कर उछे हँ दयाल बाबू ?

'सो रह है।

'उम्हें जगा बो।

'नहीं।

'करती हो ?

'हाँ।

'ठीक बहनी हो कर्जबार को धपनी घासामी म करना ही चाहिए।
धनामिका ! घाज म दयाल बाबू को तुम्हारे बारे में कुछ कहूया। उनका
मह म्यत्रहार मरु कर्द पमम्य मही। तुम बिन-ब-दिन कमबोरहोनी जा रही
हा।

'नहीं धावका ऐसा नहीं करमा चाहिए। व मेरे लिए देवता समान ह।
दुपर म इनका म्याज म दे मही इन्होंने मांता तक नहीं। कम इ होने म
मयं धीर उघार विण कि दबा-नाम घबड़ी ठरह करो। घब घाव ही बहिए,
ममे धावमी की घागा न मानू तो क्या करूँ ? दयाल बाबू हृदयहीन
धीर कौर है। उनका बौर् भी धपना-मराया नहीं है। वे केवम धपया
बाहवे हँ मेकिन मरे प्रति वे पल्पन्त दयालु धीर सहृदय है। 'मै नहीं चाहती

कि आप कुछ कहकर उनके मन का भ्रम से ।

'यदि तुम्हारी इच्छा नहीं है तो मैं कुछ भी नहीं करूँगा । मनाम 'बद' बद करता बयान के कमरे की ओर बढ़ा । 'बद-बद' जैसे ही कमरे के समीप पहुँची वैसे ही बयान के स्वर में बिस्ताया 'ओह मनाम बाबू कनाकार, भाइए भाइए !

मनाम ने बैठते हुए कोमल स्वर में कहा 'आपको जमाकर बड़ा कष्ट दिया ।

'तहीं मनाम बाबू एक सूत्रसोर के लिए इससे अधिक प्रसन्नता और क्या हो सकती है कि कोई उससे उबार मांगने आए ।

मनाम ने सतजब मेनो से बयान की ओर देखा । उसने अपने मुख पर घबराह की छायाएँ बीछाई । उसने वास्तवमात्र बघति हुए कहा, 'एक बकर ठ ही ऐसी पड़ गई । मैं आपका पिअसा नहीं चुका सका, इसके लिए समिन्दा हूँ ।

बयान ने फूरता से मनाम की ओर देखा । उसकी बस रोज की बढ़ी हुई दाढ़ी से उसका चेहरा घोर भी जमानक लयता था । कुछे बाल घोर जैसे बरब उसकी जमानकता में बूझि कर रहे थे । वह बोला 'तुम मेरे स्वभाव को जागकर भी ऐसी गलती क्यों करने या चाते हो ? पहला स्या दिया नहीं घोर फिर मेने था पए ।

मनाम का स्वाभिमान घाहल हो गया । उसकी इच्छा हुई कि वह उठकर जाता जाए किन्तु कम के प्रायोजन के स्मरण मात्र से उसका धर्म-धर्म तिबिल हो गया । भंवर बाबू व अन्य लोगों की अवस्थिति में यदि वह खेल् चिचकार की प्रतिप्य के अनुकूल बैठ नहीं देता है तो इन्तु उससे बकर नाराज हो जाएगी । उसे प्रतिप्यन स्थितियों के समरा तुच्छ होना पड़ेगा तथा वैचनकों की भाति उनके कहकहों का निगामा बनना होगा । क्या उसमें उत मपमान को सहने की शक्ति है ? नहीं नहीं । वह उस मर्यादक

प्रमानबन्धित पीड़ा को नहीं सह सकता। उसका चेहरा तमतमा उठ्य। बहु
ऐसी स्थिति में भी निरान्त घान्त बैठा रहा ताकि दयाल उसके घन्तराम
के हाहाकार को न समझे।

‘मैं बहुत घमिन्दा हूँ और बायबा करता हूँ कि मंजर बाबू से खया
मेकर में घायको दे दूंगा। उसका स्वर बिनती में दूबा हुआ था तथा उसकी
घायों में कदगा ठीर रही थी।

‘मैं बायबा-कायबा कुछ नहीं मानता। सब तो यह है कि मैं तुम्हें खय
नहीं दे सकता।

‘ऐसा न कहिए दयाल बाबू मेरे घर से मज घाया हूँ मेरी मां की ठबी
यत सराब है घर पर एक पैसा नहीं है। जरा सोचिए ऐसी स्थिति में घाय
मेरी मजब नहीं करते तो मेरा क्या होगा।

‘होगा क्या? मां बीमारी में तड़पनी रहेगी और बहिनें घमाब में
प्यासे हृदय लिए हर उस सजी-मंजरी मुकरी को देलगी रहेंगी जो अपने
घन्तम् में मुन्तर भविष्य की मजुर कस्पनाएँ और आकाशाएँ लिए मजबनी
हुई उनके घागे में मुजर रही होयी।

‘दयाल बाबू! किन्तीके घाब पर मजक सिद्ध करने में घायको क्या
मिमता है?

‘यह मैं स्वयं नहीं जानता।

उगने हुन में उल्लेखित होकर दयाल की घोर देगा। उसकी दृष्टि में
नीब घुषा थी। उसके घरीर में जड़ता घा गई थी।

दयाल अपने कर्णों को सिकोड़कर बोला ‘तुम्हें मेरे कयन पर घारचर्द
होना होया। यह स्याघाबिक भी है। घनाम! जो व्यक्ति जीवन के यम
में पनायन करके केवन घाने स्व को मय्यान्ध-यतिष्ठित करने की मून
में घ्यानुन हा उसको पीड़ा देने में ही मझे घानम घाता है। फिर मेरे
जैम ह्यघातन व्यक्ति के लिए किन्तीकी घरीबी और मजबूरी की विपत

जाना भी ठीक नहीं। यदि मैं दूसरों की विवशता या कष्ट से त्रिबित होता हूँ तो मेरा व्यापार चौपट हो जाएगा। मैं एक रुपये के बदले सवा रुपया चाहता हूँ।

‘दयाम बाबू ! उसने बड़ी कठिणता से कहा ‘बस एक बार मुझपर धीर दया कर दीजिए।

दयाम ने रुने स्वर में कहा ‘दया का व्यापार से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि कस्टार्ड निरीह बकरे या मुरगों को दया की दृष्टि से देखे तो उस बेचारे का क्या होगा ? दया एक धर्म भावना है जिसका प्रयोग कहानियों के पादपंजाबी सेखक अपने नायकों में करते हैं या वे महन्त धीरबाठा उस भावना का उन पर प्रदर्शन करते हैं जिनका दान उनके पास महादान के रूप में पाता है। मैं इसको अपने हृदय में भी नहीं रखता। मैं मूले को बरकरत मन्द को किसीकी इज्जत जाती हुई को बचाने के हेतु, रुपया देता हूँ धीर दयास्वकता पर देता हूँ धीर समय पर अपनी रकम छससे लेकर उसका सोना या मकान वापस कर देता हूँ। ‘लेकिन तुम्हारे पास क्या है ? तुम्हारे हूँट मोटों की कीमत क्या है ? बाजार मे वे प्राये दाम पर भी नहीं बिक सकते। ऐसे पादमी पर बार-बार कैसे बिश्वास किया जा सकता है धीर उसे कैसे कर्ज दिया जा सकता है। दयाम ने म्भानिपूर्वक कथा हिसाकर महुरा मीन धारण कर लिया। उसका बेहरा बिलकुल मानदुग्ध था।

दयाम का मुस दयाम के उत्तर से पीला प्रतीत होने लगा। यदि धमी वह धपना बेहरा धीरो में देखता तो भिगी में तड़पते व्यक्ति जैसा समता।

दयाम धव अपने मुटनों को बजा रहा था धीर ऐसे भावों का प्रदर्शन कर रहा था जैसे उसके मन में उसकी इस कबजामरी धस्तीकृति का कोई प्रभाव नहीं है।

दयाम ने बीसाधी संमानी। उठने का प्रयास किया। उस सवा कि उममें तनिक भी धकिन नहीं है। चलने के पूर्व उसने दयाम को नमस्कार

किया। ब्यास ने इसका उत्तर बड़ो सापरबाही से दिया।

कमरे के बाहर घनामिका खड़ी थी। उसका जर्जर बहुरा घनाम के उदास मुत को देखकर धंकाधों की रेखाधों से भर घाया। वह समझ गई कि ब्यास बाबू ने घनाम बाबू को कोरा उत्तर दे दिया है।

'क्या हुआ! प्रश्नसूचक दृष्टि फेंककर घनामिका न पूछा। तब घर के लिए घनाम बका घोर फिर प्रत्यन्त भीमे से जलत हुए स्वर में बह बोला 'यह घन को छुट्टी पर रखकर जसेगा।

'आपको क्या की ऐसी क्या आवश्यक्ता या पड़ती ?

'घर से बिट्टी घाई है बड़ी तमी में है। यह चुप हो गया पर घनामिका को उसका मन बड़ा उद्विग्न मगा। घनामिका ने तुरन्त उस रूकने के लिए बहा घोर स्वयं ब्यास के कमरे में गई। ब्यास अपनी तिजोरी में से मोटों को निकालकर गिन रहा था। पांखा की घाहट पाकर उसने तुरन्त नानों को तिजोरी में रखकर उसे बन्द कर दिया। घनामिका को देखकर वह भिसियानी हूमी के साथ बोला 'तुम।

'म घापने एक बिनती करने घाई हूँ।

'समझ गया तुम क्या कहना चाहती हो। कहोगी कि कुछ गपया घोर उधार दे दो। लेकिन मैं किमहाम ऐसा नहीं कर सकूंगा। मैं तुम्हें परमों पत्रह गपये बकर पचीस का हेडनोट लिखाऊंगा। पचीस क्यों? इसलिए कि दन पढ़ने बाने घोर पन्हु तब के। इन गपयों का तुम्हें ब्याज नहीं देना हागा।

घनामिका घांत दृष्टि में ब्यास का दगती रही।

ब्यास बच्च परेगात-ना बोपा 'भेने बहा उम तुमन मुना नहीं ?

ब्यास फिर घुटने बजाने मगा।

घनामिका उसके गमीप बैठ गई। बोली 'घनाम बाबू को इय बार गपया दे दीजिए। म घापने हाप जाइती हूँ।

बयान ने धनामिका को धमिप्राय मरी पनी दृष्टि से देखा। उस दृष्टि में एक निश्चिन्ता भी जो यह समझना चाहती थी कि इस बाबत के पीछे कौन सी भावना काम कर रही है।

‘तुम उसकी विचारिण क्यों कर रही हो? क्या तुम नहीं जानती कि यह मेरा पहले से ही कर्जबार है।’

‘जानती हूँ।’

‘फिर इसे कर्ज देना कहाँ की बुद्धिमानी है।’

‘बुद्धि की बात मैं नहीं करती लेकिन उन्हें सख्त जबरन है बयान बाबू आप उन्हें गरीब भसे ही कहें पर बेईमान नहीं कह सकते। इनके पास रुपये घाते ही ये आपका सबसे पहले चुकता कर देंगे?’

‘खान चुकता कर देंगे। ये निश्चय है। ये कमा का उत्पाद उठार धीरे उसे एक नया मोड़ देने में लगे हुए हैं। देखती नहीं ये सजी बड़ी बड़ी फिन्नासकी धीरे नैतिकता की बातें करते हैं।—धर्म एक बकौछला है धीरे भगवान एक बकबास। समाज में अति धानी चाहिए धीरे मारिषों को स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। लेकिन ये सब बातें उस समय हुआ हो जाती है जब पास में रुपया नहीं होता है। देखा नहीं बयान का चेहरा लयता है क्यों से बेचारा बीमार है बीमार।’

‘कुछ भी हो आपको। धनामिका ने भरपूर स्नेह मरी दृष्टि से बयान को देखा। बयान कोप-सा मया। तनिक उसके-उल्लेखे स्वर में बोला ‘नहीं नहीं ये इमे नहीं बुगा फिर धर्म भन व्यक्ति से वास्ता जहाँ तक हो सके कम ही रचना चाहिए।’

धनामिका ने बयान को हाथ जोड़ दिए। विपणित स्वर में उचने कहा ‘इस बार आपको मेरा बहुता मानना ही पड़ेगा। यदि बयान बाबू ने यह रकम नहीं दी तो मैं बे दूंगी।’

‘तुम्हें बयान से इनकी हमदर्दी क्यों है?’

धनामिका गंभीर स्वर में बोली 'किसी परिवार में पैसा न होने से उस परिवार को कितनी भयंकर संशयान् उठानी पड़ती है इसका अनुभव मुझे है। ऐसा संभव है कि धनाम मनुष्य को पतन में डालें।

'लेकिन !'

धनामिका ने श्याम के पांव पकड़ लिए। श्याम अपने पांवों को छुड़ा कर बोला 'मुझे छोड़ो मत छोड़ो मत। धनाम को भीतर भेज दो।'

कुछ क्षण पश्चात् धनाम पुनः श्याम के कमरे में आया। हैडनोट लिए हुए उसने बाईं ही शपथे धनाम का बे दिष्ट घौर धनाम धनामिका को धन्यवाद देकर चला पड़ा।

रास्ते में जाते हुए वह सोच रहा था 'यह कठोर प्राणी धनामिका की बात क्यों मानता है? क्या वह धनामिका से प्यार करता है? क्या इतना स्वार्थी घौर लोभुप इन्सान के मन में मानवीय संवेगनाशों की सहरे बीड़ती है? क्या वह किसीसे प्यार कर सकता है?

८

धामे दिन शंभ्या समय इन्दु के यहां पार्टी थी। प्रांगण में कुछ मेजों को घायम में मिलाकर एक बड़ी मेज बनाई गई, जिसपर सफेद चादर बिछा दी गई। मेहमानों के लिए रसगुल्ले बरफ़ी घौर समोसे के साथ-साथ चाय का प्रबंध भी किया गया।

टीक समय मेहमानों का आगमन शुरू हो गया। इन्दु एक मिन्ट्रेम की लणिका थी घौर की मितनमार मुबती। उसके पित्रों की संख्या बिलेपत मुबतियों की अधिक थी। धनाम के कहने पर, इन्दु ने चाहते हुए भी स्थानीय मेगनों को शुभवचन निमग्निन नहीं किया। धनाम का ऐसा बिलबास था कि वे इमार स्टेजई के नहीं हैं घौर वे केवल हमें उनहाम के पात्र ही बना मकने हैं। हां उस पार्टी में कुछ कुमुय मेगक जो मेठिया-माहिरयकारों एवं

मिनिस्टर्स द्वारा संभालित पत्रों के सम्पादन के काम इन्हें बने हुए उपस्थित हुए थे।

मंजर बाबू की घात मिरासी थी। वे परमसुख भोती और बड़िया सिन्धु का कर्ता पहले हुए थे और उपस्थिति से धुल-धुलकर भावभीत कर रहे थे। उनके हाव-भाव से समझा जा कि हर महिला और हर पुरुष उनसे मिलने के लिए धातुर है। घनाम एक मेज के कोने में बैठा हुआ कुछ रहा था। नाइसोल की साड़ी में सज्जित इन्दु मंजर बाबू से कितनी धुल-धुल कर बातें कर रही है और अपनी सहेलियों से उनको किस तरह हंस-हसकर मिला रही है। यही सब उसको अत्यन्त कष्टकर लग रहे थे।

तब घनाम के मस्तिष्क में कल की घटना साकार हो उठी। ब्यास ने रूप्य उधार लेकर वह सीमा इन्दु के यहाँ गया। इन्दु अपने कमरे में बैठी हुई कल की पार्टी के आयोजन का हिसाब मचा रही थी। घनाम को देखते ही वह बोली 'मैं बड़ी धर्मिया हूँ कि पहले तुमसे नहीं मिल पाई। मंजर बाबू स्वयं आ गए थे इसलिए उनके साम जाना पड़ा।

'कोई बात नहीं।

'बैठो तो लहरी। इन्दु ने कुर्सी की ओर संकेत किया।

'मैं बैठने नहीं चाया तुम्हें अपने मंत्र से बाने चाया हूँ।

'क्यों ?

'पहले यह बताओ मंजर बाबू ने तुम्हें क्या तोड़-फाड़ दिया ?

'उन्होंने ? इन्दु कहती-कहती रक गई, 'नहीं बताऊँगी तोहफे की अहमियत मारी जाएगी।

'फिर मैं भी तुम्हें बाब में ही बताऊँगा। हालाँकि मेरे पास 'कार' नहीं है इसलिए मेरे साथ तुम्हें तागे में ही चलना पड़गा।

'पर कहा ?

'धीरे रास्ते तक ?

‘यदि शाम को चलें तो तुम्हें कोई एतराज होगा ?

‘नहीं ! उसकी प्राकृति एकदम बदल गई थीर वह तुरन्त बरबाद की धोर झूम गया ।

इन्दु घनाम की नाराजगी भांप गई । उसने तुरन्त जाकर जम रोका थीर तुरन्त बसने का आरवाहन किया । घनाम कुछ नहीं बोला वह इन्दु को जलती निगाहों से देखता रहा । इन्दु ने तुरन्त कपड़ बदल थीर वह घनाम के साथ बस पड़ी ।

गंतव्य स्थान पर पहुंचकर घनाम ने इन्दु से कहा ‘तुम अपने मनपसंद लोहधा लरोय सकती हो । मैं भंबर बाबू की भांति तुम्हें सोन का ताज महसूस नहीं दे सकता फिर भी तुम्हारी इच्छा को पूर्ण करने की चेष्टा करूंगा । बोलो क्या चाहती हो ?

अप्रत्याशित इन्दु सभीर हो गई । सड़क का नया घुमाव घा गया था । वह एक धोर घनाम को लेकर बोली ‘तुम बार-बार भंबर बाबू का नाम क्यों मिया करते हो ? उनके प्रति तुम्हारी जलन अच्छी नहीं है । उन्होंने हमारा भसा ही किया है ।

‘मने जब कहा कि उन्होंने हमारा बुरा किया है ? लेकिन किसी कला कार को इन पूंजीपतियों का विखनम्न बनना भी तो शोभा नहीं देता । जस्तुरन में अधिक महत्व भी टीक नहीं ।

‘ऐसी तो कोई बात नहीं है ।

‘फिर अकेली उनके साथ क्यों गई थी ? जानती हो तुम्हारा उनके साथ इस तरह घुमना बिल बालावरण का जन्म ब सक्ता है ?

‘धोह ! अब समझी तुम यह बहना चाहते हो कि उनके साथ घुमने पर साग तरदु-तरदु की बानें करेंगे तो उम्हान हमारी धोर तुम्हारी मित्रता पर भी बम की बड़ नहीं उछासा है ! ‘घनाम ! हमें इनम नहीं डरना चाहिए, हमें नम तरह साधना भी नहीं चाहिए । हम दोनों अछद दाम्म ह

हमें जीवन के नये मानदंडों के साथ बसना चाहिए, जीना चाहिए ।

तभी एक एम्बो इंडियन बोड़ा ओर से बहस करता हुआ उनके पास से गुजरा ।

इन्डु साबधान होती हुई बोली 'ओह-! हम भावावेश में स्वान की अनुकूलता को भी भूम बैठे ।

बात का प्रसंग बहस गया । घनाम ने तुरन्त पूछा 'तुम्हें कौन-सी वस्तु पसंद है ।'

'ओ तुम्हारी पसन्द बह मेरी पसन्द ।

'फिर बसो । उन दोनों में छोटी चीपड़ की घोर प्रस्वाग किया । तब वे एक बड़ीबामे की झुकान पर पहुंचे और घनाम ने एक सी पन्द्रह रुपये में इन्डु के लिए एक घड़ी खरीदी ।

इसके बाद वे रामबाग के एक झोर पर बैठकर प्रेम का आर्तिलाप करने लगे । घनाम ने जाना कि इन्डु वस्तुतः उसे ही प्यार करती है । इस दिन उसने एक नारी के स्वार्थों की उष्णता और धड़कनें सुनीं । वह संन्या इन्सान जिसे मुबतियो या तो स्वार्थबन्ध ही प्रेम किया करती थीं घबरा दया से इतित होकर उसपर बहना की बगह प्रेम के भाव प्रकट किया करती थीं एक बबान मुबती के स्वामाधिक प्रेम का स्पर्श पाकर बेचारा बग-बग्य हो गया । उसे लगा यह पावन प्रेम एक चिरन्तन धासीक बनकर संसृति में बिखर जाए और उसके जीवन में धान्द का बर्षण कर दे और एक ऐसे मीठे बर्ष की पवित्र अनुभूति की सर्जना कर दे जो उसकी नस-नस में समा जाए ।

वे क्षण ! जीवन के परम मुक्त और विनम्र भावनाओं से भरे क्षण ! आत्मा की प्रमात कोमलताओं को लिए क्षण ! वे धम धधुम्प हो प्रमर हो !

घनाम के स्मृति-पटल पर उन क्षणों की चिरन्तनता के लिए सहस्रों स्वर गूँज पड़े । वह टेबल पर इस तरह निस्वैर पड़ा था जैसे उसमें प्राण ही

न हो। मकुर कस्वमा में वह भूम गया था कि वह नहीं बैठा है।

अकस्मात् मंवर बाबू ने उसके विचारों के सामर में कंबड़ फेंका।

किस विचार में छो गए अनाम औ?

घोड़ ! किसीमें नहीं। अनाम ने मुस्कराने की बेव्या की।

मेरा विचार है कि पार्टी की कार्यवाही शुरू की जाए। कंक का सिस्टम हातांकि बिबदी है पर है मजेदार, पर इसका आयोजन रख ही लिया गया है। अब म अपना तोहफ़ा बेंट कसंगा अनाम बाबू ?

मंवर बाबू ने हिन्दी का टाइपराइटर उठाकर इन्दु को दिया। इन्दु ने मुस्कराकर उनका धमिबापन किया। मंवर बाबू ने भीड़को सम्बोधित करके कहा 'अब इनके लिए सबसे महत्व की चीज यही है धीर में आगा कसपा कि आप बिबद की एक महान लेखिका बनें। सब जन्होंने गर्ब से अनाम की घोर देखा। उस दृष्टि में एक पूंजीपति का अहम् जन्म होकर नाच रहा था। अनाम उस नहीं सह सका। उस गबभरी दृष्टि न जा उन मंवर बाबू की घोर में चुनौती दे रही थी उन तनिक आबेन में मर दिया। वह तुरन्त अपनी बैसाखी लेकर उठा। इन्दु की घोर बड़ा धीर अपनी वेब में पड़ी निकामकर उसने इन्दु को धी। देकर उसने मंवर बाबू की घोर देखा धीर फिर इन्दु के न चाहते हुए भी उसने अपने हाथ से उस बड़ी का उमे पहना दिया।

एक दुर्पन्ना हो गई—केबन अनाम के लिए।

अकस्मात् बकील इयान ने प्रवेश किया। उनके हाथ में एक छोटी-सी पृस्तिका थी—चार-छद् घाने की। नाम था—यैसा बचाइए धीर अण्डयन न कीजिए।—मेकिन उसने ज्योंही अनाम को हीरो की तरह पड़ी पहनात देया था एक तन्म बरी हंसी हंस पड़ा। अनाम बन धीर पानी-पानी हो गया। वह तुरन्त अपनी कुर्सी की घोर बड़ा मेकिन अण्डबाजी में उनका पांच अण्ड गया धीर वह फिर गया।

समीप लड़े मंवर बामू धीर इन्दु ने उसे सहारा दिया । वो एंम्पो इंडियन मङ्गलियों ने एक संबी प्राह छोड़कर बुधी भाव रखाए, 'बेभारा ।

मंवर बामू ने कहा 'बब घापको मालूम है कि घाप ठेकी से नहीं चल सकते फिर घाप ऐसी गमती क्यों करते हैं ?

घनाम ने कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया । वह अपनी कुर्ची पर नीची गर्दन करके बैठ गया । थोड़ी दूर पर एक महिला दूसरी महिला से कह रही थी 'घाबमी मुन्दर है पर है मंगड़ा ।

लेकिन घनाम स्थिर होकर बैठा था ।

एक संभ्रात महिला ने प्रवेश किया । इन्दु ने उसका घाये बढ़कर सम्मान किया । यह महिला किसी जमींदार की स्त्री थी धीर अपनी धारत के अनुसार वह सबको हैय दृष्टि से देख रही थी जैसे उसकी दृष्टि में यहां की उपस्थिति अत्यन्त साधारण है धीर ये सभी सोप उसकी श्रेष्ठता से बहुत नीचे है ।

घनाम ने साहस करके बयाल की धीर देखा । बयाल अपनी पुस्तक इन्दु को भेंट करते हुए कह रहा था 'इस पुस्तक का हमें अपने जीवन के मूस मुक्तों को फिर बनाए रखने के लिए महारंज नीता की भाति चिन्तन मनन करना चाहिए । मे मममला हूं कि इन सब तोहफों में यह तीहृष्ठा श्रेष्ठ है क्योंकि इसमें न तो बड़पन का प्रदर्शन है धीर न ही बिबधता का ।

तब उसमे तीबी दृष्टि से घनाम की धीर देखा । उस दृष्टि में प्रता इना महर्ने मार रही थी ।

केक काट बी गई । सभी ने इन्दु के चिरायु होने की कामना की ।

कुछ मंगीत का आयोजन हुआ । हुंसी-मजाक के बातावरन में वो ही नीरम व्यक्ति सब रहे थे । एक बयाल जी जो कभी-कभी घाघह पर हुंस दिया करता था धीर दूसरा घनाम जिसकी हुंसी बहरी चिता में बिमीन हो गई थी ।

उन पार्टी में आकर्षण के केन्द्रबिन्दु में ही तीन बने थे—सकपति माहिरय प्रनी भंबर बाबू इन्दु घोर बहू जमींदार की पत्नी जो निरन्तर प्रत्येक को हेय दृष्टि से देख रही थी।

९

बहू सम्पूर्ण रात्रि घनाम ने लिङ्गकी की राह गहरे घन्घरे में जीवन के कई प्रश्नों को बुझने में गुजारी। बहू निराशा के गहन आचरण में घाघा की ज्योति क बर्धन करता हुआ सोचने लगा कि उसकी टांग ठीक हो सकती है या नहीं। आज जब बहू पार्टी में गिरा था तब कितन सायों की ब्या भरी घांसे उसकी घोर उठी थी घोर स्त्रियों ने ऊपर कितना दर्द भरा रहम काया था। क्या एक दिन प्रतिमा की मा की तरह इन्दु की मा भी कह देगी कि उसे अपनी बेटी के लिए संगड़ा पति नहीं चाहिए? यदि इन्दु की मा गजी भी हो गई तो बहू अपनी बेटी के संय रहेगी। उसके जीवन का आधार इन्दु ही है। इन्दु! घन्घरे में इन्दु का बेहरा संगारा-सा दीप्त हो उठा। इन्दु उस कभी भी इन्कार नहीं करेगी। उन दोनों का एक पप है उस पप के लिए प्रत्येक एक दूसरे के लिए सच्चा साथी बन सकेगा। लेकिन उसकी पार बहिनें! मुने-मुगे मुख घोर बंसी-बंसी घांगें। अजरं लंबहर की भाति जिनके शरीर हो गए हैं। उसकी बे बहिनें ब'बामों की भाति उसके सम्मुख गड़ी हो गई। वे मुस्करान का प्रयत्न कर रही हैं लेकिन मुस्कानें उनके पीले सपरों से बहुत दूर जा चुकी हैं। उनके कम्म दाने दुर्बल हो गए हैं कि वे हिरणियों की भांति सराट ढीढ़ नहीं सकतीं। वे हृषिनियों की मत्तबानी जाल न घोरों का मन भी नहीं मोह सकती। पुग-मुटा का जीवन। नीरम घोर नित्यम्!

प्रीत की बे धनुमूर्ति भी नहीं कर सकती। इन उम्र में जब हू मुखनी पति या प्रेमी की मनोबामना रखनी है, तब उसकी बहिनें घमाओं से

मंवर बाबू, इन्तु घापकी नहीं हो सकती नहीं हो सकती ! वह एक सेबिका है जिसके हृदय में मानवीयता अचिक्क है । जो एक कमाकार पर ही मोहित हो सकती है जो उपकार का बदला प्रत्युपकार से ही दे सकती है ।

फिर उसे लगा कि वह बहुत बक गया है । उसने जम्हाई भी धीर सचेरे ही मंवर बाबू से मिलने की सोचकर सोने का प्रयास किया । उसे यह भी मानस्य नहीं हुआ कि कब गहरी नींद आई ।

अनामिका ने उसे छीक घाठ बजे उठया । घाँखें मलते हुए उसने अनामिका से कहा 'मुझे सात बजे मंवर बाबू के यहाँ जाना था तुमने मुझे क्यों नहीं उठया ?

'घाप गहरी नींद में सोए हुए थे ।

'गहरी नींद !

उसने चाय रगतते हुए कहा 'ऐसी गहरी नींद जिसमें बड़े विचित्र सपने घाते हैं । घाप नींद में कमी हंस रहे थे धीर कमी रो रहे थे । वे सपने भी कितने विचित्र होते हैं ?

अनाम ने अनामिका की बातों पर अरु भी ध्यान नहीं किया । वह तुरन्त तैयार होकर मंवर बाबू के घर की धोर चल पड़ा ।

१०

जब अनाम ने मंवर बाबू के ड्राईनरूम में प्रवेश किया तब वहाँ गहरा सन्नाटा था । उस सन्नाटे में धरयाचारी के मासेबार बुनों की तरह अनाम की बैसाखी की 'वद्-वद्' गूंज रही थी । बरदा ने घाम सीढ़ियों पर मिखा था 'अमड़े से जो प्यार करेगा वह बहुत दुःख पाएगा । इसे पढ़कर अनाम का मूड सदाब हो गया था । वह पयली सड़की उसे क्यों तंग करती है, यह उसरी समझ में नहीं आया । वह रास्ते भर इनी कारण उलझन में पड़ा रहा ।

यहाँ गहरा सनाटा था। मंजर बाबू तथा इन्दु को गंभीर मुद्रा में देखा तो उसे अकस्मात् उन मुकक घोर मुबती का क्यात भा गया जो एकांत गहर मुक्त बृहसबाधियां करते हैं घोर किसी बुजुर्ग को घाता देखकर ऐसे उमाने बन जाते हैं जैसे वे कभी उड़द नहीं हो सकते।

अनाम ने अर्धमरी बृष्टि उन दोनों पर डाली और फिर प्रसन्नबाचक स्वर में बोला आप दोनों बड़े गंभीर हैं ?

इन्दु ने केवल मुस्कराने की चेष्टा की और मंजर बाबू ने कहा 'हम सोच रहे थे कि आपकी टांग टिक हो सकती है कि नहीं ? क्या आपने कभी किसी डाक्टर से सलाह ली थी ?

'नहीं।

क्यों ?

'मे अननता हूँ इसके लिए हजारों रुपयों की जरूरत है ?

'मनुष्य चाहे तो रुपयों का प्रबन्ध कर सकता है।

'आप बड़े घादमियों की बातें करते हैं। जिनके घुटकी बजाते रूपा घाता है।

इन्दु ने बात को समाप्त करते हुए कहा 'स्पर्श की बातों को छोड़िए, बसिए अपनी बात पर धारिए।

मंजर बाबू ने गुरुर कहा 'इन्दुजी का बहामी-अपह 'डोपनी का करण विनाप तैयार है। आपका एतबम कस प्रस में बना जाएगा। इन्दु जी का कहना है कि मैं आपको पांच सौ रुपये लखवांस दे दूँ।

'केवल पांच सौ ?

'उसमें अधिक मैं नहीं दे सकता। हिन्दी में ईमानदारी में इतना भी कोई नहीं देता है। मुझे अपनी तरह मामूम है कि आपका यह एतबम कोई भी आपने को तैयार नहीं हुआ था।

'फिर आप क्यों छाप रहे हैं ?' उनमें आगदगी के साथ कहा। वह इस

घपमाग को नहीं सह सका ।

इन्दु ने उसे घाँट करते हुए कहा 'घमाम ! बात-बात में उत्तेजित होना प्रच्छन्न नहीं । यह व्यापार है, इसमें धैर्य और समझदारी की जरूरत है ।

घनाम को यह उपदेश सूइयों के चुबौने जैसा लगा । उसने इन्दु की धीर बुरा । इन्दु के नर्वों में सिकामठ थी । ऐसी सिकामठ जिसमें उनका प्यार भी होता है ।

'मैं इसे छापूँगा । मेरे सामने लौटाने का प्रश्न ही नहीं है । मुझे घापकी धीर इन्दु भी की ही पुस्तकें छापनी हैं । मैं घापकी गई कला को बमकाना चाहता हूँ ।

फिर इन्दु भी जो कह रहीं वह मुझे मंजूर होगा ।

हुई न बात ! भंवर बाबू मुस्कराए ।

इसी बीच एक मोटी स्त्री ने जिसकी कमर डोल की तरह बोस-मटोल थी झाँस रूप में प्रवेश किया धीर उसा समय वह घापस भी पत्नी गई ।

इन्दु की घाँस फट गई । लेकिन भंवर बाबू ने बेहवाई की हंसी के साथ कहा 'घाप इन्हें नहीं जानती ये मेरी धर्म-पत्नी हैं । मैं धनी घावा ।

उनके आठे ही घनाम ने घृणा से मुँह बिचकाकर कहा 'ये इनकी धर्म पत्नी हैं या भंस ।

इन्दु ने चुप रहने का संकेत किया ।

भंवर बाबू तुरन्त धामए धीर बोसे 'एक जरूरी काम घा गया था ।

हां फिर ये घापको पाँच सी रुपये रूपा पर धमी नहीं एक माह बाद । क्यों घनाम वा घापकी बिना रूपों के कष्ट तो नहीं होगा ?

घनाम कुछ कहता इसके पहले ही इन्दु बोल पड़ी 'नहीं भंवर बाबू, घनाम वा की रूपे-पैसों की क्या कमी है ? इतने प्रसिद्ध बिचकार धीर कार्टूनिस्ट हैं कि जहाँ भी जाएँगे रूपया बटोर जाएँगे ।

घनाम घब क्या कहता ? गबिठ स्वर में बोला 'घाप घपभी मर्जी मे

दे बीजिएमा । चिंता की कोई बात नहीं ।

‘फिर यह तय रहा कि मैं आपका यह एसबम कल प्रेस में दे दूँ । छपाई और सजावट का सारा काम आपके जिम्मे रहा ।

‘कोई बात नहीं ।

इसके बाद नाम पीकर वे दोनों—इन्दु और घनाम—वहाँ से चल पड़े । गमी के पार पहुँचते ही घनाम ने इन्दु से थिकावत मरे स्वर में कहा ‘तुम्हें उस सेठ के बच्चे की हॉ में हॉ नहीं मिसानी चाहिए, तुम्हें उसे डांटना चाहिए या वह कला के बारे में क्या जानता है ?

‘मंजर बाबू निरे मूयू नहीं है । इन्दु ने अपनी असहमति प्रकट करते हुए कहा ‘बम्बे साहित्य घार कला का प्रख्यात ज्ञान है । वे भी तुम्हारी तरह बिबेयी साहित्य का प्रम्ययन करते हैं ।

घनाम चिढ़ गया ‘तुम भी कमी-कमी बहक जाती हो । मैं मंजर बाबू को बहुत पहले से जानता हूँ । वे केवल उपन्यासों के नाम और उनके सेलकों को ही बता सकते हैं । चित्रकारी में उनका ज्ञान घुम्य के बराबर है । क्या चित्त वे दो-चार चित्रकारों का नाम भी नहीं बता सकते हैं । ये खोसते कुठि पीबी है जिनका अपना कोई ठोस आधार नहीं ।

इन्दु ने ख्याई में कहा ‘हा लकठा है ।

बात कुछ बेर के लिए रुक गई ।

दोनों ने प्रलय-प्रलय रिबधे में बैठे हुए एक दूसरे से बिदा माँगी ।

इन्दु को अपने स्कूल जाना था ।

रास्ते भर घनाम यही सोचता रहा कि इन्दु बदल रही है । पर एक पहुँचते-पहुँचते यह बिचार काफ़ी दृढ़ हो गया ।

सीड़ियों में चरवा बीटी हुई कुछ लिंग रही थी । बैसाखा की ‘लटू-लटू’ मुनकर वह शौंक पड़ी । घनाम के समक्ष वह प्रकटकर पड़ी हो गई ।

घनाम ने उसके सामने राड़े हाकर पूछा ‘तुम बाज नहीं घामोगी ?

बेसो मे मां को तुम्हारी सिकायत कर दूँगा ।

‘कर दीजिए, मैं किसीसे नहीं भरती ।’

बरदा का स्पष्ट उत्तर सुनकर वह विस्मित रह गया । बरदा की निर्भीकता उसे नई आन पड़ी । उसकी आँसों में बिहोड़ की चिनवारियाँ जल रही थीं । घनाम ने उसे परामर्श देने के स्वर में कहा ‘तुम्हें सब अपना बचपना छोड़ देना चाहिए, सब तुम बड़ी हो गई हो ।’

‘मैं अपनी इच्छा के अनुसार कर्त्तवी । भल-बुरे को मैं सब समझती हूँ ।’

‘तुम्हारी मां को बुझाऊँ ?’

‘बुझा लीजिए ।’

घनाम ‘बच्ची हूँ’ घोषकर ऊपर की ओर बढ़ा । अभी वह बो सीढ़ियाँ नहीं चढ़ पाया था कि बरदा कितलकितनाकर हंस पड़ी । उसकी हँसी में तीव्र व्यस्य था । घनाम उसे नहीं सह सका । उसने पलटकर देखा । बैसाली का संतुमन बिगड़ गया । वह गिरता-बिरता बचा । उसकी कुहनी पर करौष आ गई ।

तभी बरदा ठक-ठककर बोली ‘अधिक चोट तो नहीं आई घनाम बाबू सहारा दूँ ?’

घौर वह हँसती हुई उसकी आँसों से प्रोमन हा गई ।

भीतर पहुँचते-पहुँचते घनाम का हृदय भर आया और उसके मन में आया कि वह दूर निर्वनता में जाकर बस जाए, जहाँ उसपर बया करने वाला और व्यस्य करने वाला कोई भी न हो ।

११

घनाम चार दिन तक किसीसे नहीं मिला । घनामिका उसे उसकी उदासी के बारे में बार-बार पूछती थी लेकिन घनाम ‘मन ठीक नहीं रहकर प्रामोद्य हो जाता था । उदासी और एकान्त के जीवन में उसका सोया

कवि फिर से जाग उठा। उसने दो-तीन कविताएँ लिखीं जिनके शीर्षक बड़े विचित्र थे। 'बीचड़ में कमल घोर म रात का हृदय चाँद का तीर' 'चारों भय घोचल टूटा चाँद। उन कविताओं में उसके मन की हीम मावनाएँ प्रयोगवादी नये प्रतीकों और उपमाओं के साथ प्रकट हुई थी। इन सभी में बीच इन्दु की स्मृति उसके मन पर छाठी रही। चार दिन बीत गए। इन्दु उसके यहाँ नहीं आई। उसकी खोज-खबर नहीं मी। उसका प्रस्तर बुधा ने भर उठा उसे सब मंवर बाबू मिल गए हैं न? वह उमने साथ मोटर में सँभर करने जाएगी। वह इस गरीब सेखक को क्यों सभालेयी? उसन इन्दु का एक विचित्र चित्र बना दिया जिसके पहनावे पर सिक्के ही सिक्के धीरे रहे न।

सबेरा हो गया था। घासमान साफ था इसलिए घुप बड़ी ठंठ हाकर चमक रही थी।

घनामिका ने साजा तैयार कर लिया था। वह साजा परोस कर आई। घनाम ने पहला कौर लिया कि सीढ़ियों पर किसीके घाने की घाहट मिली।

घनामिका ने देखा दयाल बाबू न।

दयाल बीरे-बीरे ऊपर चढ़ा। उसकी टूटी हुई पप्पस घोर मसा कामा कोट घोर मीमी पेंट ओ चुटन के नखरीक तनिक पट भी गई थी यह घनु मान भी करने नहीं देनी थी कि यह व्यक्ति लगभग हो सकता है।

दयाल के नाम को सुनते ही घनाम पबरा गया। फिर भी उसने उम पबराहट को महती घालीयता में परिबर्तित करन हुए दयाल का सम्मानित गणों में स्वागत किया। दयाल उसके मनामाओं को समझता हुआ बोला 'कुछ व्यक्तियों को घानी घोर घन परिवार वालों की बलि देन में ही घानंद घाता है।

घनामिका को दयाल को बात रहस्य भरी लगी। वह जिजामा भरी

दृष्टि से दयाल की घोर देखने लगी। अनाम का कौर हाथ का हाथ में रख
 गया। उसका खून बम-सा गया।

तुम पीसे पढ़ गए ? क्यों अनाम बाबू ! कदाचित्त तुम इस अनाम
 का सह नहीं सकते। तुम्हारा अहम् बीजसा भी सकता है। लेकिन मैं एक
 सूबखोर हूँ। दया और प्रेम से रहित। हृदयहीन और कठोर। चतुर और
 हवा के उस को पहचानने वाला। ऐसे व्यक्ति को कोई कुछ अमिनम डाक
 अकार से जाए तो उसे कितना दुःख होगा। कितना गुस्सा आएगा।

अनाम के मन में पीड़ाओं के आवल छा गए। हर क्षण उस लया कि
 बाइस फटकर बरस पड़ेगा और उसके अन्तरात्मा को पीड़ाओं के सर्पों से
 भर देगा। उसने बबराहट से अनामिका की घोर देखा। अनामिका पूर्ववत्
 निस्पंद-सी लड़ी थी। दयाल की आँखों में झूठा थी। फिर भी अनाम ने
 अस्फुट स्वर में बड़बड़ाने की कोशिश की 'दयाल बाबू, आप थोड़ी देर शांत
 रहिए, मैं जाना था सेता हूँ।

तुम्हें मूख मयती है ?

अप भर के लिए यही निस्तम्भता छा गई।

'मुझे विश्वास नहीं होता कि तुम्हें मूख मयती है या तुम मूख के
 अस्तित्व को स्वीकार करते हो। तुम्हारे लिए सेक्स देवता है। प्रेरणा है।
 जीवन है। लेकिन तुम उसका कला के नाभ्यम या उसके नाम से अनाम
 सेना चाहते हो।

अनामिका ने बीच में अचरोप अल्पन करना चाहा। दयाल ने उसे
 रोक दिया।

तुम चुप रहो अनाम, यह जीवन के समय अरा भी प्रतिकूल परिस्थिति
 नहीं चाहता। असीम शांति चाहता है। लेकिन इससे पहले कि उनके अर में
 रोटी नहीं है हजार परेशानियाँ हैं वे रोटी कैसे खाते हैं ? यह कलाकार
 अकर है लेकिन इसमें अमानियत नहीं। यह मुझे और तुम्हें घोसा

देकर रुपये संभया। मैं अपने आपको इन्सान नहीं मानता मैं दुबसारा हूँ पर यह इन्सानियत के पुठसे इन्सानियत को बूझ पकपाते हैं? धायद मैं पीतान भी इससे घञ्जा हूँ।

‘दयाम बाबू। मनाम चीज पड़ा।

‘चीखते क्यों हो? घनो यह मुझ्ने रुपया मां-बहिन की मूख के माम पर से गया और कटीद साया अपनी प्रमिका के लिए बड़ी।

घनामिका स्वप्न-सी रह गई।

‘तुमने मुझे बिबस किया तुमने घनाम के बहिनों की दुहाई थी। पता नहीं मेरे पीछा परवर दिस इन्घा तुम्हारा कहना क्यों मान बैठा? घनो, तुम सब बोसती हो बात स्पष्ट करती हो इसलिये मुझे तुम अपने प्रण से बिना सञ्ची हो। मकिन इस बिबकार ने मुझे घोसा देकर खूट लिया।

‘मैंने आपको मूटा नहीं हूँ नोट सिलकर रुपया लिया है। घनाम ने कांपते स्वर में कहा।

‘तुम्हारा हूँ नोट का पांच रुपया भी कोई नहीं देगा। तुम्हारे पास है मी क्या? तुम कसाकार हो मूझे घोर मरीब।

‘देसिए दयाम बाबू आपको सम्यता के बाहर नहीं होना चाहिए, म घापकी पाई-पाई से भूया। घाप दो-चार दिन घोर धेय रसिए।

दयाम ने हमद-उबर देखा घोर फिर कहा ‘स्त्री के रूप घोर पीबन की दीप्ति में बराचीप होने वाले घादमी फिर नहीं संमसते। तुम्हें घर की बगह उस घम्पापिका की बिठा है। फिर मना तुम मरा कर्ब क्या चुका घोमे? तुम्हें इन्घु चाहिए, उमको राजी करने के लिए तुम अपना घून भी गिरबी रम मञ्ते हो। छि।

घनाम को दुम्मा घा गया ‘दयाम बाबू मीमा मे बाहर न जाइए, मैंने यह दिया कि मैं कम ही घापके रुपय चुका दूंगा।

तब तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। सेबिन एच बाग इस बरीन का

भी मानो मेरे मुम्बकिल प्राण की कोई भी चतुर चामू घोर घिबित मुबती तुमसे प्यार नहीं कर सकती एक लपक को जान-बुझकर अपना पति कौन बनाएगी ? यहा कला घोर कमाकारों पर मिटने वाले हुबय नहीं है ।

अनाम को बहुत गुस्सा आया । उसने चाहा कि वह बैसाबी से अपना का सिर फोड़ दे । इस बिचार से वह कांप भी उठा । उसने जाते हुए कहा 'घब घाप यहा मत घाहएना, मे अपने आप आपका रपया पहुंवा हुंगा ।

बयात ने घुमकर कहा 'मे बकीस हूँ मे अपना रपया बचुम करना भी जानता हूँ ।

अनाम जमा गया । अनाम लान की बामी को फेंकते हुए पायलों की तरफ चिस्ताया 'अपसी गोब कमीना बयतमीड जाने को बहुर बना गया ।

अनामिका उसे चिन्मिबित-सी बैसती रही ।

'यह घापमी नहीं घैठान है । इसकी सारी बीतत को बुराकर सुटा बेनी चाहिए । वह फिर चिस्ताया ।

अनामिका ने कोई उत्तर नहीं दिया । वह बिकारे हुए लाने को एकभित करने लयी । वह इतनी घांत घोर बुकी नी जैसे वह घब रा पकने को घातुर है ।

जब अनाम बहुत देर तक बड़बड़ाता रहा घोर अनामिका ने कोई घोस्ताहन नहीं दिया तब अनाम उसपर भ्रुवा पड़ा 'तुम बालती क्यों नहीं क्या तुम मूगी हो ?

'भूये बनने में ही साम है अनाम बाबू ।

घोह ! तुम नी घब सूकियों में बोसामी । साक क्यों नहीं कहती ? उसन अपना सिर बकड़ लिया ।

अनामिका ने वाली हाथ सं लेकर कहा 'अ इतनी देर से यही घोब रही को कि आपने मिध्या मापन क्यों किया ? क्या आप कृध घोर बहाना नहीं बना सवत य ? क्या आप मुझे सखी बात नहीं कह सकते थे ?'

'मने कोई बहाना नहीं बनाया मने जो कहा सब कहा । मेरे पर पर धमी एक पैसा भी नहीं है । बहाँ से बिट्टी भी धारी जो ।

'फिर आपने अपने परिवार के प्रति यह धम्याय क्यों किया ?

'तम नहीं जानती कि प्यार में धावमी को क्या-क्या करना पड़ता है ? यहाँ प्यार की होड़ ममती है । इस होड़ में मुझे भी कुछ दाँव पर लपाना होता है । तुम्हें कैसे पता मने कि प्यार में धावमी कितना साधार और बिबध होता है । मैं इन्सु को प्यार करता हूँ उस पार्टी में मैं बस न देकर उधका और धपना धपमान कैसे करबा सकता था । धालिर म अपने धापको उसका निबन्धतम मित्र मानता हूँ । चित्रकार हूँ ! तुम नहीं जानती कि यह सब क्यों होता है ।

बह उत्तेजित हो गया था । उसकी धाँसें नम हो गई थी । धनामिका ने ठंडी धाह भेकर कहा 'मैं कर्मकिनी माँ जो धूपा और नंगा नहीं देख सकती चाहे मुझे धाजीवन बूबापी रहता पड़े । चाहे मुझ जीवन भर प्यार की ध्यास में लड़पना पड़े ।

१२

धाड़ो ही देर में धनाम उरुरत में धपिक धान धोर धमीर हो गया । उसे कुछ सोचना धोर न नोचना दोनों धबध-से मने । उसकी दयास के सौत जाने के बाद मन ही मन एक बूटन धीर धपमान महमूम हो रहा था । धीरे-धीरे उसे मपा कि उमके सिर में दर्द हो रहा है । बह पलंग पर भेट गया पर धपिक देर तक नहीं सो सका । दयास ने उसे लमड़ा कहा इम बात न उसपर गहरा धसर किया धीर बह बिबधित-गा इपर-उपर कर बटे मेषा रहा ।

धनामिका धर्मी गई थी ।

उम एधान में बह गिड़वी की राह बूहुनियों का मध्वन लिकर गड़ा

हो गया। दो मुन्नी जोंड़ इससे हुए सुबर रहे थे। उसने लग भर के लिए कल्पना की कि वह इसी तरह इन्दु के साम जा रहा है। इन्दु मुस्का-मुस्का कर उससे बातें कर रही है।

‘पर संभड़े के साथ कौन धारी करेगा? क्यास के ये शब्द उसके धन्तस् में पुष्पा के सागर को बग्न दे रहे थे। धनाम उसकी किञ्चित भी परवाह नहीं करता। यह बकबास है। ‘इन्दु उसे अपने हृष्य से चाहती है। वह स्वयं इन्दु को हृष्य से चाहता है। लेकिन यह बार दिन से घाई क्यों नहीं? उसने अपने कपड़ों की घोर देखा जैसे वह जाने का विचार कर रहा है।

उसने कपड़ बदले। बैसाखी ली। घर से बाहर बस पड़ा। बाड़ी की बाईं ओर एक छोटी बन्द मसौ पड़ती थी। उस बन्द मसौ के सिरे पर बरबा एक कामे मुक्क से हंस-हंसकर बातें कर रही थी। वह कासा लड़का दृष्टि को प्रिय लगने वाला था। उसके यारों की हड़िनी जमरी हुई थी। उसने एक मोटी सीटी घोर कुर्ता पहन रखा था। उसके बाल पुंपराने घोर घने थे जैसे हृषियों के होते हैं।

बरबा पर जैसे ही धनाम की दृष्टि पड़ी जैसे ही वह तनिक उम्भ स्वर में बोली ‘बिबो घंकर, आज संध्या बेला तुम मुझे प्रकल्प बाप में मिलना उसी जगह जहां हम काम मिले थे।’ फिर उसने नाक-नीं सिकोड़ा। उसकी हर हरकत में एक उच्छ्वसता था।

धनाम ने घाने बढ़ते हुए सोचा ‘वह करती रहे अपनी मसा से।’ वह तेजी से करब बढ़ाने लगा।

कोई रिश्ता उसे नहीं बीसा। वह पुटपाव के घोर पर बढ़ा रहा। वहां लड़-लड़े उसने सोचा कि बकाम बाबू इस भेद को सभी के सामने लासे। क्यों नहीं वह संबर बाबू से रुपये लेकर दयास को दे जाए। इस विचार ने उसे सात्वता थी। वह संबर बाबू से भी परिवार की एक

प्रायश्चित्त बटाएगा । वह ऐसा सोचकर तनिक चिंता में मुक्त हुआ ।

रिक्शा घाटा हुआ दिखाई पड़ा । उसने अपनी बैसाली को संभाला । रिक्शा तय किया और उसमें बैठ गया ।

जब वह मंवर बाबू के घर पर पहुंचा तब मौकर ने उसे बताया कि वे शफर में हैं । घाप वहीं पर जमे जाएं ।

वह उसी समय शफर पहुंचा ।

मंवर बाबू किसी नाम में व्यस्त थे घट उसे षोड़ी देर प्रतीक्षा-गृह में प्रतीक्षा करती पड़ी । वह वहां बैठा हुआ प्रभावगामी सम्भावनी बुझने लगा ताकि मंवर बाबू उसे टास नहीं सकें ।

आखिर वह समय आ गया जिसकी घनाम को प्रतीक्षा थी । वह मंवर बाबू की सामने वाली कुर्मी पर बैठ गया । मंवर बाबू उसे प्रश्न भरी वृष्टि से देखते रहे । उनका यह मौन घनाम को शिथिल नहीं मया ।

'बात यह है ! वह कहता-कहता चुप हो गया ।

'हां-हां, कहिए, बबराएँ नहीं ।

घनाम झेंप गया । उसके साथ जाहने पर भी मंवर बाबू उसके मन की बबराहट को भांप गए । तब उसका बेहुरा पीला-पीला-मा लवा और उसकी बाणी में अस्तिरता आ गई, 'बात यह है कि मेरे घर में पत्र' प्राया है मेरी बहिन की घादी होने वाली है, मुझे एक हजार रुपयों की जरूरत है ।

'घाप बबराहट क्यों है ? इसमें बबराहने की बात ही क्या है ? घापकी बहिन की घादी हो रही है घाप निर्मीक होकर स्थिति बननाइए, बबराहए नहीं । मंवर बाबू के स्वर में बह्यन या और वे हम तरह कह रहे थे जैसे घनाम एक अनुभवहीन मुक हो ।

'बबराहता वहां हूं घर में चिट्ठी आई है । सरोज का बिबाह है । पांच नौ रुपये घाप मुझे गवस्ती के हिनार में अग्रिम दे रहे हैं और पांच सौ और

दे बीजिए ।

'मैं आपको पांच सौ इसके घतिरिक्त भी दूंगा ।

'मैं आपका मतसब नहीं समझ ।

'मेरे पास अभी ब्याज बाबू भाए थे । आपके हड मोट लेकर कह रहे थे कल अदालत में दावा करूंगा ।

अनाम का चेहरा सफेद हो गया । उसकी नाभी धबकड़ हो गई । उसका रक्त जम गया ।

'बे आपसे सन्त नाराज हूँ । ऐसे प्रेम में सिवाम हाति के घीर कुछ भी नहीं मिलेगा । भर बासे रोटी रोटी बिस्माते रहूँ घीर आप वहाँ छोड़के में क्या उड़ाते रहूँ ऐसी झूठी धान से क्या साम ?

अनाम अचरामी की मांति घिर झुकाकर बैठ रहा ।

'मने दयाल को पांच सौ रुपये दे दिए हूँ, आप इस रसीद पर दस्तखत कर बीजिए । भंवर बाबू ने एक रसीद मिट्टाली घीर अनाम ने बिना बेबे ही उसपर हस्ताक्षर कर दिए ।

'मैं था रहा हूँ ! अनाम ने उठे हुए कहा ।

'क्यों चाब नहीं पिये ।

'नहीं ।

'हां सुनिए, आज इन्नु 'बल महल में घाएमी आप जरूर घाएया ।

'हां हां ! कहकर अनाम वहाँ से चल पड़ा ।

वहाँ में सीधा वह बाग के एक बुर के नीचे बैठ गया । घाम तक बैठ रहा । घुमघुम घीर अचरामी !

घाम के समय वह अपने आपको भुलाने के लिए नीरोज घा गया वहाँ साहित्यिक कमाकार घीर पत्रकार एकजित होते थे ।

उसको देखते ही घामुलोप बोला 'घार ! तुम बड़े कमीने हो दोस्तों की बिस्नी उड़ाने में तुम्हे क्या मजा मिलता है ?

उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप बैठ गया।

नबरंग जो प्रयोगवादी कवि था रंभीर हजरत कहने लगा 'यह हमकी हमेशा की धारणा रही है। जिन मित्रों का साथ करेगा उन्हींको यह अपने मित्रों व कार्टूनों का विषय बनाएगा उनकी महानताओं को स्वीकार नहीं करेगा बल्कि उनके मृत्यु की विवृष्ट करके वेग करेगा। ऐसी भी क्या कला है ?

शिमिभ्र सिमरेट का बस लींचकर बोला 'भविन यह तैमूरसंग है तुजियार ! कुछ मामोषकों को हमने खूब पटा रखा है।

नबरंग हंसकर बोला 'पूजावादी मनोवृत्ति को समझता है। जिससे अपनी प्रशंसा करवानी होती है उसको यह पहने म ही तारीफ करने मयता है। उसका चित्र वह अपनी बिचित्र कला में नहीं बनाता।

'पक्का ब्यापारी कलाकार है।

घनाम ने धब मीन तोड़ा म धब भी घापकी बात नहीं समझा। घाज घाप किस बात पर बात की खाम निकास रह है ?

'मीजिए, आपको जैसे कुछ पता नहीं। कमचित्र के कौमिर घमिनेता को मोति शिमिभ्र बोला 'तुम छिम्म में काम कर सो।

'पता हो भी कैसे ? भाई इनकी वह इमुजी है म घाजकम एक उपम्याम मिंग रही है। घाप उमी उपन्यास के मसोषन में घ्यमन है। नबरंग गर्दन हिमाकर बोला वह मेज पर घंयुक्तियां भी नचा रहा था। तमी 'घोला' माहब ने प्रवेश दिया। उर्बू के प्रमतिपीन गायर। गराबी। मुंहफूट।

इन्तु पी हमने नाता जोड़ने वाली है उम संगडा गाबिद पमन नहीं। जानने हा वह करा जिम्बवी का घमसी मजा म मयता है जा वह इके हरीवी को मानने वाला हो ?

सय गिमगिना कर हम पड़।

घनाम को मुग्गा घा मया। वह घरमी बैगागी मेजर उर गड़ा हुआ।

'तुम साहित्यकार नहीं बनसी हो तुम्हारे बीच बैठना भी मुनाह है। अपने धापका अपमान करवाना है।

वह उठ पड़ा हुआ।

सड़क पर बिचारों में लोया हुआ वह चला जा रहा था। समीप में कौन था रहा है और कौन था रहा है, इसका उसे पता ही नहीं था।

अकस्मात् किसीने उसकी पीछे से बांह पकड़ी। उसने रतकर देखा— मनोब था।

एक सेठ का बेटा जिसकी भी कई कहानियां अनाम में पहलेपहल संशोधित की थी किन्तु धाजकम वह अन्वी कहानियां सिख सिखा करता है।

'मुझे छोड़ दो मैं एकांत चाहता हूँ।

क्यों ?

तुम नहीं जानते कि धाम का दिन मेरे लिए कितना अमानक है। तूफान पर तूफान था रहे है। परेशानी पर परेशानी था रही है। मेरा मन मेरे सभी परिचितों को लेकर मोम से भर गया है। मैं चाहता हूँ कि यहाँ से दूर बहुत दूर, सितियों के पार चला जाऊँ ! बचन की इस कविता— इस पार प्रिये तुम हो मधु है, उस पार मैं जाने क्या होगा ? के विपरीत धम में सोचता हूँ—मुझे ममता है—यहाँ दुःख कटुताएँ और अपमान के प्रतिरिक्त श्रुध भी नहीं है मधु और प्रिय सब बरबात। सब भूठ।

मनोब उसकी ओर धीरे-धीरे झुकता हुआ अपनी माँहों को उठाकर बोला 'मैं तुम्हें ऐसी ही जगह से चलाता हूँ जहाँ बचन भी की कविता साकार नजर आएगी।

'कहाँ।

'मेरे साम आओ।

उसने धम्बों पर जोर देकर कहा 'लेकिन तुम आओगे कहाँ ?

उसने बिसकुत लज कहा 'मेरी एक प्रेमिका है उसके पास तुम्हें से

बसता हूँ ।

तुम्हारी प्रेमिका ?

'बहु एक सुन्दर और स्वस्थ युवती है । तुम उससे मिलकर बड़े प्रसन्न होओगे । वह बड़ी शिक्षिता और समझदार है लेकिन है एक बेव्या । यदि वहाँ वह तुम्हें धन्य व्यक्ति में प्रेम करती हुई मिल जाए तो बुरा न मानना । उनके प्यार का आधार हृदय नहीं पैसा है । भावना नहीं व्यापार है । फिर भी वह अपने पापको मेरी प्रेमिका समझती है । बोपा बसोगे ?

घनाम कुछ देर गंभीरता से मनाज के चेहरे का निरीक्षण करता रहा । मनाज एक बुद्धि मूर्ख की भाँति यदन की तयों को टालकर बड़ा हो गया । इस बीच कई घाबरी घाए और पुरर मए ।

'कहीं इन्तु तुम्हारा इन्तबार तो नहीं कर रही है ?

'वर उरर रही है पर घाज में वहाँ नहीं जाऊँगा । घाज में तुम्हारे माप ही बनूँगा । उसने उदासीनता से कहा ।

'ये दोनों एक चाँद पौस के घर में घुसे । पूरा फ्लेट सानी में से रखा था । मनाज ने उसका बुझन सेकर उसका स्वागत किया और फिर कमरे में लगे कण्य प्रभु के चित्र में धामा-भाचना की ।

घनाम घननी बैसायी को कुर्सी के पीछे जितकाकर बैठ गया । मनाज न सोनी को उठका परिचय देते हुए कहा 'ये प्रसिद्ध चित्रकार ह । चित्र बनाने ह । यह तुमसे यानि मेरी मापनी (प्रमिरा) में मिलने घाए ह । 'और घने तुम्हारे घारे में इहें सब बुद्धि बमम्य दिया है । सोनी ने एक गरावत भरी दृष्टि घनाम पर केंरी । इसके बाद मनोज सानी में हमी-मजाक करता रहा । घनाम नासमझ बच्चे को तरह उनकी बातों को सुनता रहा । वह मनोज सोनी को मेकर भीतर के कमरे में बसा गया ।

घनाम को 'गोना की बात सुई-सी चुम गई थी । उसके कई मित्रों का भी पैसा ही स्वात था कि उनमें पुण्यत्व नहीं है । वनों नहीं वह घननी

परीक्षा कर मे । इस प्रेमिका के प्रेम का आचार हृदय नहीं पैसा है, मा
नहीं व्यापार है । तब ?

मनोज पीत मृतमुलाठा हुषा बापत था यथा बा ।

अनाम के मुख पर पसीना देखकर बोला 'तुम पानी-पानी क्यों हो
हो ?

नहीं तो ?

'छुपा रहे हो ।

'बात यह है कि मे ।

'शोक मे ।

धीरे मनोज ने सुरभ्र उसे बैसाबी वफ़ावाई धीरे उसकी एक भी न
कर उसे प्रीत्य के कमरे में इकैत किया ।

उत्त आलीखान कमरे मे कामोत्तेजक चित्र टंगे हुए थे । अनाम ने
दो नजर बचा के उन चित्रों पर एक दृष्टि डाली ।

'माइए ।

वह उनके समीप सर्तीसे किस्मोर की तरह दर्शन नीची कर बैठ न
मनोज ने बीच में अचरोम उत्पन्न किया । उसने संकेत करके
को बुनाया धीरे कानों ही कानों में कुछ कहा । सोनी उनी स्वर में
कहकर मुस्करा मर दी ।

सोनी ने अनाम के हाथों को अपने हाथ में ले लिया । बोली 'मा
टाप के क्या हुषा ?

'वह जगम मे ही ऐसी है ।

'घोह ।

'छिडकिया बन्ध कर नूं ?

अनाम ने कहा 'हां ।

लिङ्कियाँ बन्द हो गईं ।

पाँच ही मिनट के बाद अनाम कीपता हुआ कमर के बाहर निकला । वह पीड़ित मनुष्य की तरह था पर उसके नज़रों में एक अदृश्य शक्ति बिराज रही थी ।

सोनी ने उसका जोर से हाथ पकड़ लिया ।

‘घाप संभड़े हे ता क्या हुआ ? क्या मयड़ों के बाम-बच्चे नहीं होत ? घाप इतनी हीनता का अनुभव न करें । घाप बहुत अच्छे पति बन सकते हैं ।’

अनाम ने सोनी का हाथ प्यार से पकड़कर कहा ‘धमी मुझे जान दा जाने का मेरा बिभाग टीक नहीं है । मैं जीवन में सफल हो जाऊँगा । मैं पूर्ण हूँ मधुर्ण रूप से पूर्ण ।’

घाप धंटे के बाद अनाम मनाब बो कह रहा था ‘मैं एक टांग के लिए भी नहीं भूसा कि मैं संभटा नहीं हूँ । मेरी टांग सोनी के सुन्दर मुँह के घाग मुझे भूषणी हुई-नी जगि धीर म ‘नरवम’ हो गया । मुझमगा कि मैं संभार का सबसे अभागा धीर बुगी प्राणी हूँ । लेकिन सोनी क धमीम तरह मे मुझ बधा मिया । मैं भूत गया कि मैं क्या हूँ ? मुझे यह भी याद नहीं रहा कि मैं संभटा हूँ ।’

यह श्मश्रुं की बाने ह । ईश्वर की ही हुई सजा को हमें बरमान की तरह प्रत्य करनी बाहिष् ।

बरमान की भाँति मैं अमिगाप को पहन नहीं कर सकता । मैं एक मरम्बावासी प्राणी हूँ । मैं छोटे से छोटे धीर बटे से बट घादमी म अनाम सम्मान करवाना चाहता हूँ । मैं चाहता हूँ कि मुझ ममी केबप ईश की दृष्टि में हों दया की दृष्टि में नहीं । तिनू इस टांग की बत्रह मे मुझ बहन धरमानित जाना पड़ता है । इस टांग का शक्ति धरमान मुझ बरों के सम्मान मे अघिर पीड़ा जनक लगता है ।

मनोज ने अपना नाम के तुम्हारी भावों को स्नेह से सुमारते हुए कहा 'इतना टांग को सेकर सभी तुम्हारा अपमान कर सकते हैं पर इन्तु नहीं। इन्तु ने आज तक जो प्रतिष्ठा पाई है वह तुम्हारे कारण। सुना है कि उसके कहानी नरपह के प्रकाशन पर यहाँ की महिला जायति परिपद्' एक समापेह कर रही है जिसका समापतित्व यहाँ के कोई बड़े घेठ समझीमान भासपापी कर रहे हैं।

'इन्तु ही मेरी भावनाओं को काइ करती है। मैं उसके उपम्यास पर इतनी महान्त करुमा कि वह निरपय ही एक श्रेष्ठ कथाकृति होगी।

'तुम इन्तु से विवाह क्यों नहीं कर लेते ?

मैं उसे कहना चाहता हूँ पर मेरी हिम्मत ही नहीं पकती। संभावित उत्तर को सेकर मेरे मन में भय-सा लया रहता है।

तुम्हें पौत्र कइना चाहिए। वह एक महत्वाकांक्षिणी मुवती है। वह समाज में अपनी बहुत प्रतिष्ठा चाहती है। केवल एक भावना में ही तुम दोनों में समानता है।

मेरी भी ऐसी ही इच्छा है मनोज मे इतना बड़ा और लोकप्रिय विम कार बनना चाहता हूँ जिससे लोग मेरी टांग को मूलकर मेरी कृतियों पर केन्द्रीमूत हो जाएँ। और इन्तु स्वयं विवाह की इच्छा प्रकट करे।

'एसा संभव है। क्योंकि तुम एक प्रतिभा सम्पन्न विमकार हो।

रात का महारा धीबस पैल जाता था।

उठते हुए मनोज ने कहा 'वर जाकर धाराम करो। धरने मन की हीनता को धीबियों में मत बदलने दो। बहुत-से व्यक्ति लंपड़े-बहरे होते ह। वे तुम्हारी तरह पीड़ित-चितित रहकर जीवन को पीड़ादायक बोड़े ही बनाते हैं ? और सोनी को तो तुम बहुत पमंद हो।

'हां उसने मुझे सचमुच लया धालोक दिया है। मैं उसका हृदय से धामारी ह।

तीन दिन बीत गए। घनाम रात के मग्नाटे के संगीत को बड़ी बेचैनी से सुन रहा था। वह दो दिन से निराश-बिहृत मस्तिष्क बास प्राणी की तरह जीवन की मरबरता और व्यर्थता पर विसाप कर रहा था। वह घनामिका को कहता रहा जीवन वृथा है। इन्तु उससे मिसने नहीं आ सकती तब उसके घपने प्राण तुच्छ हैं धर्म और सम्मान तुच्छ हैं बिरब-बहााड तुच्छ है। तब वह किसीको नहीं मानेगा इस सम्मान को इस मर्ज को।

यह मारी बड़ी बिबिन्न है दुनिबार है।

प्रेम करती है हय करती है और उन दोनों का सामंजस्य नेत्र पुण्य को घपनी रहती है।

घनाम को एक पत्र मिसा था। इन्तु ने काय-व्यस्तता के कारण न घाने की धमा मांगी थी। धमा के साथ उसने घनाम को एक ताड़ना मी दी थी 'बह प्रेम महत्वहीन है आ प्रयसि के सम्मान को घटा दे। तुम्हारे पर बास जब मेरे और मेरे ताहफे के बारे में सुनेगे तब वे क्या बिदारें ? वे सोचेंगे कि बह घबती उनके मइके का पप-बिमय कर रही है। और तुम भी कंगे मनुष्य हो। मानवीय और घारमीय नाते-रिपतो को भ्रमकर तुम एक लइकी के पीछे पागल हा रहे हो। प्रेम का ऐमा रूप हमारे परिपारों में गोमनीय नहीं होता। म तुमसे प्रार्थना करनी हू कि तुम मुम समझन का प्रयास करोसे।

बह उसे समझन का प्रयाग करेगा इस बिचार म उमरर हुम्ना बयाा पात किया। उसे यह उम्मीद नहीं थी कि इन्तु उन हय तरह का उरदेय देगी। ररुय म भिन्नकर हय पत्र द्वारा ही उमके गहरे मम्बग्यों म घबरोप करने का प्रयाग बनेगी।

घनाम तमा नहीं होन देगा।

रात के डलते तिमिर के साथ वह इन्दु के पास जायगा। उसे सारी स्थिति के बारे में कहेगा। उसे समझायगा भाज के युग में एक प्रेमी किस प्रकार ऐसे कार्यों में बच सकता है? भाज हमारे सम्बन्धों के प्रतीकों के रूप में वे ठोहफे, भेंटें और पार्टियाँ बन गईं हैं।

एक तारा टूटकर मिरा।

घनाम को लगा कि उसकी सबसे प्यारी भावना पर घावात हो गया है। उसका मुख पीला गमभीन और उदास हो गया। उसे रह-रहकर ब्यास पर ईर्ष्या और गुस्सा आता था। उस कम्बल में इस बात का प्रचार प्रसार करके क्या पाया? 'दुष्ट है म कष्ट देने में ही उसको आनन्द आता है।

इस तरह बेचैनी और भासंकाशों में रात व्यतीत होने लगी। उसने मास जाहा पर उस रात उसे एक पल के लिए नीद नहीं आई। रह-रह कर उसे ब्यास आता था कि वह इन्दु के बिना सुख से नहीं रह सकता।

१४

क्षितिज के कामे भास पर जोहनूर होने के सद्युध सूरज कपी बिम्बी बीप्य हुई।

घनाम तुरन्त वैनिक कार्यवाही से निवृत्त होकर इन्दु के घर की ओर चला। इतने सबेरे-सबेरे घनाम को देखकर इन्दु की विस्मय हुआ। वह उसे चाय का एक प्याला देती हुई बोली 'तुम्हारी आँखों से मयठा है कि तुम रात भर सोए नहीं।

'तुम्हारा अनुभाम ठीक है।

किर तुम्हें काफी पीनी चाहिए।

'नहीं मुझ काफी की जरूरत नहीं है। मैं बिलकुल ठीक हूँ। केवल मुझ एक बात के बारे में तुमसे पूचना है।

'कहो।

‘तुम्हें मुझे ऐसा पत्र नहीं लिखना चाहिए। यह पत्र मेरे हृदय में कई प्रश्न एक साथ उठा सकता है। मुझे पीड़ित कर सकता है मुझे ईर्ष्या बना सकता है मेरे भाव-अगत में तुफान उठा सकता है।

इन्दु ने संभवतः अपनी दृष्टि बुझाई ‘तुम्हें यावेरा में यावर कुछ नहीं कहना चाहिए। हमारे भाव-लोक में भी विषय एक लोक है वह है हमारा कर्म-लोक। हम मानवीय भावनाओं और सद्गुणों के पुत्र बन रहे हैं यदि हम स्वयं उनको व्यवहार में नहीं लाएँगे तब हमारा हर काम एक धोखा बन जाएगा।

‘विजित मैंने अपने कर्म के विरुद्ध कुछ नहीं किया। उस समय के उत्तमिष्ठ क्षणों में मेरे जैसा यावरी अपना सर्वस्व नुटाकर भी अपनी जाह्नवासी को उसकी पसन्द की चीज साकर देगा। यह विमकुल स्वाभाविक है।

‘मंजर बाबू ने जो कहा उसमें ऐसी कोई बात नहीं भ्रमवर्ती थी। तुममें एक प्रतीति ही ईर्ष्या है। जब तुम्हें यह पता लगा कि मंजर बाबू मुझ मेरी मनपसन्द का तोहफा देना चाहते हैं तुमने क्या दे अपनी मा-बहिष्कार की दुहाई देकर गये लिये। यह विसकुल गमल बात है। मझ कतई पसन्द नहीं।

घनाम हतप्रम-ना इन्दु के कठोर शब्दों को सुनता रहा।

वह अपनी दृष्टि बुझाकर बोली ‘मंजर बाबू ने तुम्हारे हुंइना देना बाबू ने मंजर मुझ दे दिए हैं। उन्हें भी तुम्हारा यह व्यवहार जरा पसन्द नहीं। यदि मेरी इच्छा का मवाज देना न होगा तो वे क्या को एक देना भी नहीं देते। उन्होंने मुझसे कहा क्या कह रहा था कि घनाम की मारी कमाई इन्दु के घर जाती है। घनाम के घर बाबू भूगों मरल है और यह इन्द्र मित्राजी से बरबाद हो रहा है। अब तुम्हीं बनाओ कि एक लड़की यह मज बंम मह सकती है? जो बार् हम बात को सुनेगा वह मेरे जाने में क्या मोक्षता? तुम्हारे घर बाबू मास्टरजी का एक कुमरा और दिनाम

रात के ठण्डे तिमिर के सामे बह इन्दु के पास जाया। उसे सारी स्थितिके बारे में कहेया। उसे समझाया, आज के मुम में एक प्रेमी किस प्रकार ऐसे कार्यों मे बच सकता है? आज हमारे सम्बन्धों के प्रतीकों के रूप मे तोहफे भेंटें और पार्टियां बन गई है।

एक सारा टूटकर गिरा।

प्रताप को लबा कि उसकी सबसे प्यारी माबना पर आघात हा गया है। उसका मुल पीसा यमवीर और उवास हो गया। उसे रू रूकर बयास पर ईर्ष्या और गुस्सा आता था। उस कम्बज ने इस बात का प्रचार-प्रसार करके क्या पाया? कुछ है न कुछ देने में ही उसको धानस्य आता है।

इस तरह बैचनी और आसकाशों मे रात ब्यतीठ जाने लपी। उसन साज बाहा पर उस रात उसे एक पम के लिए मीद नहीं आई। रू-रू कर उसे स्वास आता था कि बह इन्दु के बिना मुल से नहीं रू सकता।

१४

सिठिक के काले भात पर काहनूर हीर के सदृश सूरज रूपी मिम्बी दीप्त हुई।

प्रताप गुरस्त दैनिक कामबाही मे निवृत्त हाकर इन्दु के घर की घोंग बना। इतने सबेरे-सबेरे प्रताप को देखकर इन्दु को बिस्मय हुआ। बह उसे चाप का एक प्यासा बठी हुई बोसी 'तुम्हारी आसों से मयता है कि तुम रात भर मोए नहीं।

'तुम्हारा अनुमान ठीक है।

'किर तुम्हें काप्यी पीनी चाहिए।

'नहीं मुम कार्यों की उकरन नहीं है। मे बिजनुम ठीक हूँ। केवल मुझे एन बात के बारे में तुममे पूछना है।

'बहो।

तुम्हें मुझे ऐसा पत्र नहीं मिलना चाहिए। यह पत्र मेरे हृदय में कई प्रश्न एक साथ उठा सकता है। मुझे पीड़ित कर सकता है मुझे ईर्ष्या बना सकता है मेरे भाव-जगत में तूफान उठा सकता है।

इन्दु ने संतन्त्र धपनी दृष्टि घुमाई 'तुम्हें घाबरे में घाबर कुछ नहीं कहना चाहिए। हमारे भाव-सोक में भी बिभेय एक लाफ है वह है हमारा मनस्य-सोक। हम मानवीय भावनाओं और सद्गुणों के पुतल बन रहे हैं यदि हम स्वयं उनको व्यवहार में नहीं लाएंगे तब हमारा हर कार्य एक शोशा बन जाएगा।

लेकिन मैंने अपने कठम्य के विरुद्ध कुछ नहीं किया। उस समय के उत्तमिष्ठ क्षणों में मेरे जैसा घाबरी धपना सर्वस्व मुटाकर भी धपना चाहते बानी को उसकी पसन्द की चीज साकर देना। यह बिलकुल स्वामाबिक है।

'भंबर बाबू ने जो कहा उसमें ऐसी कोई बात नहीं म्भकती थी। तुममें एक प्रेमी की ईर्ष्या है। जब तुम्हें यह पता लगा कि भंबर बाबू मुझ मेरी मनपसन्द का तोहफा देना चाहते हैं तुमने दयाम से धपनी मां-बहिन की दुहाई देकर अपने लिए। यह बिलकुल गमल बात है। मझे कतई पसन्द नहीं।

घनाम हतप्रम-मा इन्दु के जगोर गणों को मुतना रहा।

वह धपनी दृष्टि घुमाकर बोली 'भंबर बाबू ने तुम्हारे हृदय पर दयाम बाबू से लेकर मन्त्र दे दिए हैं। उन्हें भी तुम्हारा यह व्यवहार खरा पसन्द नहीं। यदि मेरी इज्जत का सवाम पैसा न होता तो वे दयाम को एक पैसा भी नहीं देते। उन्होंने मुझ पर दयाम कह रहा था कि घनाम की मारी समाई इन्दु के घर जाती है। घनाम के घर जाने भूयों मन्त्र हैं और यह इत्त मित्रात्री से बरबाद हो रहा है। अब तुम्हीं बताओ कि एक सद्गुणी घर मर कैसे मर सकती है? या कोई इस बात को मुनेगा वह मने बागे में क्या पावगा? तुम्हारे घर जाने मुझ माम्भरनी का एक कुमन और दियाम

के प्रतिरिक्त कुछ समझी ही नहीं ।

‘तुम्हारा ऐसा सोचना सर्वथा गिराधार है ।

‘मैं ऐसा कहां सोचती हूँ ? ऐसा तो दूसरे सोचते हैं और मैं सुनती हूँ ।
प्रनाम ! उसने ब्रुक मियमकर बुद्ध से धीरे-धीरे कहा ‘मैंने तुम्हारे घर
सी रुपये भेज दिए हैं । भविष्य में तुम पहले उनका ध्यान रखोये । इन्दु ऐसी
मदकी नहीं है जिसके पीछे तुम अपना सर्वस्व बिसर्जन कर दो ।

प्रनाम को यह बात टूटते सम्बन्धों की दृष्टिगत लगी ।

‘इन्दु मुझे समझने की कोशिश करो ।

‘मैं इसकी धारण्यता नहीं समझती । मैं तुम्हें एक अच्छे घाएमी और
धन कलाकार के रूप में देखना चाहती हूँ ।

इन्दु के इन वाक्य में बात के सिससिसे को समाप्त कर दिया ।

प्रनाम उठने लगा । इन्दु ने तुरन्त उससे कहा ‘तुम्हें मेरी बातों को सम
झने का प्रयास करना चाहिए । इन बातों से हमारे सम्बन्धों में अन्तर नहीं
घाएगा ।’ और नुती परसों मेरा स्वागत होने वाला है । तुम्हें वहां बकर
घाना है ।

जब प्रनाम वहां से जाता तब उसका मन मुन्न हो गया था । उसके मन
में अस्मिधित ब्यथा छत्र गई जो उसको उम्मादित-सा करने लगी । वह ब्यर्थ
ही इपर-उपर की गतियों में ब्रूमता रहा । उसके सारे बरत्र भीषकर भीने
हो गए । जसने में उसे तकसीफ होती थी । लेकिन आज उसे घानन्द-सा घा
रहा था । कभी-कभी उसे अर्थकर गुस्ता भी घाता था कि वह क्यों जिन्दा
है इस संसार में ? इस संसार में उस जैसे अर्थ अर्थ मनुष्य को जीने का हऊ
नहीं । वह अर्थ कलाकार है लेकिन यहाँ कलाकार का कौन सम्मान करता
है ? यहाँ कलाकार को एक मूर्ख और बेकार व्यक्ति समझते हैं जो अपने
महत्त्वपूर्ण जीवन को कला की साधना में अराव दिया करता है ।

वह इसी प्रकार मोचता-विचारता मनोज के घर पहुंच गया । मनोज

साँस का 'बटमीज सबर' पड़ रहा था। उसकी बैसाबी की 'सद्-मद्' मुन कर वह बिना देखे ही बोला 'घनामो घनाम घनाम बेवकूत कैसे घा मण ?'

घनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह गम्भीर मुद्रा में बैठ गया। उसका मुँह उतरा हुआ था तथा उसकी धारों में क्या की चिनगारियाँ स्पष्टतया ललित हो रही थीं।

'बात क्या है ? उसने पुन्यक बन्द करके कहा।

'इन धीरों के बारे में तुम्हारा क्या क्या है ?

प्रश्न ऐसा था कि मनोज माबधान हो गया। वह घनाम के बेहरे पर घनी दृष्टि पाइकर बोला 'यह घाते ही तुमने 'एन्म का प्रयोग कर लिया।

'धीर घावनी यह लंगडा धीर गरीब हो ? उनके बड़ा परिवार हो तो उम क्या करना चाहिए ? वह उत्तेजित होकर बोला।

'एन्म के बाद हाइड्रोजन का बिस्कोट ' बंपुबर, म उग घनी म्पी के मूढ में हूँ। इस सबके में पढ़ना नहीं चाहता।

'तुम पीने वाले हो न दूसरों के बर्त में तुम क्यों पड़ोस ?

मनोज की मुन्ना गंभीर हो गई। उसकी तीरमदृष्टि ने घनाम की घावनि के घबसाद धीर करुणा को समझ लिया। वह प्यार से बोला 'धीरल सिर्फ धीरल है। वह प्यार करती है सीमा की तरह वह पुना करती है निप्य गिता की तरह। वह स्नेह देती है यशोदा की तरह धीर उवेला करती है तुम्हारी इन्दु की तरह। वह मेनका की तरह मजबूर धीर गन्द की 'कमल की तरह स्वर्न है। वहने का तात्वर्ष यही है कि धीरल सिर्फ धीरल है।

उसकी बोनी बन्द होने ही घनाम ने पूछा 'इन्दु की तरह उवेला ?

'इन्दु तुम्हें प्यार करती है मेरा यह अनुमान गयत निकला। वह एक महाराजाधिसी सुवती है। उनका मध्य जीवन में धेष्ट पर पाने का है। वह बड़ी स्वार्थी धीर बनुर है। वह यह घबड़ी तरह जानती थी कि तुमने मन्मः हान में उसकी रचनाएँ संग्रहित हा-होकर घबड़े में घबड़े पत्रों में एत मन्नी

के प्रतिरिक्त कुछ समझने ही नहीं ।

‘तुम्हारा ऐसा सोचना सर्वथा गिराधार है ।

‘मे ऐसा कहा सोचती हूँ ? ऐसा तो दूसरे सोचते हैं और मैं सुनती हूँ ।

प्रनाम ! उसने बूक निगमकर बुढ़ से पीरे-पीरे कहा ‘मैंने तुम्हारे पर सी रुपये भेज दिए हैं । भविष्य में तुम पहले उनका ध्यान रखोमे । इन्नु ऐसी मझकी नहीं है जिसके पीछे तुम अपना सर्वस्व निवर्जन कर दो ।

प्रनाम को यह बात दृढ़ते सम्बन्धों की शुकपाठ लगी ।

‘इन्नु मुझे समझने की कोसिस करो ।

‘मे इसकी प्रावत्यकता नहीं समझती । म तुम्हें एक मन्थे प्रावमी और श्रेष्ठ कलाकार के रूप में देखना चाहती हूँ ।

इन्नु के इन वाक्य म बात के सिससिले की समाप्त कर दिया ।

प्रनाम उठने लगी । इन्नु ने गुरन्त उससे कहा ‘तुम्हें मेरी बातों को समझने का प्रयास करना चाहिए । इन बातों से हमारे सम्बन्धों में धन्तर नहीं आएगा । और सुनो परतों में स्वल्पत होने वाला है । तुम्हें यहाँ रुककर माना है ।

एक प्रनाम यहाँ से चला तब उसका मन मुझ ही गया था । उसके मन में भयमिश्रित व्यापक ध्या पर जो उसको उन्मावित-सा करने लगी । वह स्पर्श ही इपर-उपर की मलियों में घूमता रहा । उसके सारे बदन भीगकर धील हो गए । जलने में उसे तकनीक होती थी । लेकिन प्राज उसे प्रावन्ध-सा प्रा रहा था । कभी-कभी उसे भयंकर पुन्सा भी प्राता था कि वह क्यों जिन्दा है इस संसार में ? इस संसार में उस जैसे प्राव मंत्र मनुष्य को जीने का हक नहीं । यह श्रेष्ठ कलाकार है लेकिन यहाँ कलाकार का कौन सम्मान करता है ? यहाँ कलाकार को एक मूर्ख और बेकार व्यक्ति समझते हैं जो अपने महत्पूर्य जीवन को जता की साधना में सराब किया करता है ।

यह इसी प्रकार लौचता-निचारता मनोज के पर पहुंच गया । प्रनाम

मार्लेस का 'बटर्सीज लबर' पढ़ रहा था। उसकी बैंगली की 'सट्-खट' सुन कर वह बिना देख ही बोला 'घनाम घनाम घनाम बेबकज कैसे घा गए ?'

घनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह गम्भीर मुद्रा में बैठ गया। उसका मुह उतरा हुआ था तथा उगकी घाँघों में ब्यसा की बिनमारियां स्पष्टतया ललित हो रही थीं।

'बात क्या है ? उसने पुस्तक बन्द करके कहा।

'इन घोरनों के बारे में तुम्हारा क्या क्या है ?'

प्रश्न ऐसा था कि मनोज सावधान हो गया। वह घनाम के बेहरे पर घनती दृष्टि काइतर बोला 'यह घाते ही तुमने 'एटम का प्रयोग कर लिया।

'घोर घादमी यहि मंगड़ा घोर गरीब हो ? उनके बड़ा परिवार हा तो उमे क्या करना चाहिए ? वह उत्तेजित हाकर बोला।

'एटम के बाद हाइड्रोजन का विस्फोट ! बंपुबर, म उरा घमी मली के मूठ में हूँ। इस बक्कर में पड़ना नहीं चाहता।

'तुम घैने बात हो म दूरों के दरें में तुम क्यों पड़ोगे ?'

मनोज की मझा बंभीर हो गई। उसकी तीव्र दृष्टि ने घनाम की घावृति के घबसाव घोर कइसा को समझ लिया। वह प्यार में बोला 'घोरत सिर्फ घोरत है। वह प्यार करती है सीमा की तरह वह पूषा करती है तिव्य रक्षिता की तरह। वह स्नेह देती है मजोश की तरह घोर उमेता करती है तुम्हारी इन्दु की तरह। वह मेतका की तरह मजबूर घोर घार की 'बमम की तरह स्वतंत्र है। कहने का तात्पर्य यही है कि घोरत सिर्फ घोरत है।

उसकी बोनी बग होने ही घनाम ने पूछा 'इन्दु की तरह उमेता ?'

'इन्दु तुम्हें प्यार करती है मेरा यह घनुमार्त मपत निबना। वह एक महाराजाक्षिणी मुबती है। उसका महप जीवन में भ्रष्ट पद पाने का है। वह बरी म्पार्यी घोर बनुर है। वह यह घबडी तरह जानती थी कि तुमने मग्गं हाने में उसकी रचनाएँ मंघापित हो-होकर घण्डे से घण्डे पत्रों में दर गबनी

है। इसलिए तुम्हें घपता भीत बनाया। लेकिन वह एक लंगड़े को घपता जीवन-साथी नहीं बना सकती।

'यह तुम्हारे मन की बूजा बास रही है। वह तुमसे बातचीत नहीं करती है। इसमें तुम उसके बारे में ऐसी बात बकते हो।

'मे बकता नहीं हूँ ठीक कहता हूँ। पात्रकम वह बंदर बाबू के साथ माटर में घूमती है। उसका सम्मान होने वाला है, उसमें बड़े-बड़े पादमी घ्राएमे। तब म बेखुशा कि इन्तु तुम्हें हाथ पकड़कर घपने पास बिठती है या नहीं ?

'वह मुझे प्यार करती है। यह बाक्य उसने जब बड़े आत्मविश्वास से कहा तब उसके हृदय पर मुक्का-मा मया। जैसे उसने घपने घापको जबर बस्ती यह विरवास दिलाया ही।

१५

सौ रूपों की पहुंच की चिट्ठी आई थी। भा मे घति स्नेहपुरित घब्धों मे उसको घातीय मिली थी। उसकी चिट्ठी में उसकी घान्तरिक घामिकता घूट-घूट पड़ रही थी। उसने मातृत्व की सीपम्ब बिसाकर सिखा घा 'तुम्हारी छोटी बहिन कई दिनों से बिस्तर पर पड़ी हुई है। उमे बबल निमो-निया हा घया बा। वह इतनी दुर्बल घौर कुरूप हो गई है। वैसे प्रेत घायार्। घरीर मूलकर काटा हो घया। उसकी बीप्तिमयी घासों केवल घड्डों के रूप मे रह गई हैं। घनाम ! तुम्हारे द्वारा रूपे मिसने पर मे उमके घासों का बचाने में ममर्ष हो गई हूँ। तुम्हारे रघवे पाकर मुझे मया कि तुम्हारा हृदय घतपन्त निर्मल घौर पबित्र है। तब तुम्हारा मुन् नबजात घिमु की पबित्रतम नाबनाण मेकर मेरे सम्मून् नाब उठा। 'मुझे तुम इतने रघवे हर माह घेजने रहो तो मे 'मैं पबर्तित ममभकर एक स्वाभिघातिनी का जीवनबिता सकूनी घौर तकावा द्वारा उत्पन्न मामिक मंत्रघासों से बच

सकूंगी ।

एक बात मने घौर गुनी है । वह बात तुम्हें अप्रिय मय सकती है पर वह बाब में अधिक यातनामय मनेमी । मित्र का नाम मही पताऊंगी मेकिन वह कभी मूठ नहीं बोसता । उसने मित्ता है कि तुमने एक मास्टरनी को अपनी जीवन-साथी के रूप में चुना है । बदाबित तुम्हें इन मास्टरमियो के जीवन चरित्र का ज्ञान मही है । य चरित्र को भ्रष्ट घौर स्वभाव की उच्छ्रयस होती है । अभिनय मं कुपाम घौर प्रकृति की क्रूर होती है । यदि ऐसा न होता ता वह तुम्हारी कमाई का बहुत बड़ा हिस्सा घामोद प्रमाद में तथा मर-सपाटे में लुब्ध नहीं करवाती । म उमे कठोर स्वभाव वाली घौर निर्बन्धी नी कर्हमी क्योंकि वह तुम्हारे घर की बच्चा से परिचित हाकर भी तुम्हें अपने कुटुम्ब के प्रति उत्तरदायी बनने को मही कर्हती । ऐसी युवती को गुम गृह मरमी बनाकर मुब से नहीं रह सकोमे । बहु एक मझात कृम की हानी चाहिए । उसके मुस पर परिमामय मुकृमारता घौर उज्जबमता होना चाहिए ताकि मूस घौर प्याम में भी उमके हीटों पर जीवन मरी शाखन मस्यान माचती रहे ।

मां का यह पत्र उमे उत्तमित्र करने के लिए पर्याप्त था । इन्दु के बार में मां के जो बिचार थे वे बहुत निम्न घौर घोषी प्रकृति क वागक थ । इन्दु एक मझात घौर भेज-मुबुम-मपुर स्वभाव वाली है । उमन स्वयं मुके बिना पूरे ही मेरी मां को अपने भेदे । यह उमकी भ्रष्टता का प्रमाण है ।

फिर उमके मस्तिष्क के मंष पर एक भासी किनु उदास घावृति गड़ी हा गई । जिसका पहला कारण दुःख के कारण बिगुन हा गया था । जा एक घामानित-कर्मजिनी-नी उगक सम्मूग लड़ी होकर कह रही थी कि माग उसके सम्बन्धों पर केवल एक दुष्टि में बिचार करेमे कि बहु घनाम की कमाई पर ऐग कर रही है । घनाम घपना मां घौर बहिन का मृगा मारना है घौर इन्दु के लिए गुग के प्रमापन ल्पनिज करना है । बहु निम्नर

विभिन्न कल्पनाएं करके अपने भापको पीड़ित और उन्नेषित कर रहा था।
आर बज गए थे।

धूप अधिक तेज होकर बसक रही थी। सड़क पर यात्रियों का आवा
गमन मंथ पड़ गया था। साथे रिक्शे और बसें उठी एकाएक से आ-जा
रही थीं।

अकस्मात् बरबा की मां ने उसके कमरे में प्रवेश किया। उसके बेहरे
पर व्यग्रता झलक रही थी। उसका स्वर मकराया हुआ था। उसने धीरे से
उसके निकट बैठकर कहा 'अनाम बाबू इस बरबा को क्या हो गया है ?
भाप ही सब इसे समझाइए न ?

'क्यों क्या हुआ ? आश्चर्यचकित हीकर अनाम ने पूछा।

'हुआ क्या ? एक सड़क के मे बहू प्यार कर बैठी। उसके साथ भूमती
फिरती रहती है। मना बठाइए, क्या यह उन्न प्यार करने की है ? अभी
ता बहू बन्धी है।

'उसको समझा बीजिए।

'बहू समझती नहीं। कल रात मेने उसे मरुड़ी से पीटा थी उसे जान
भ मारने की धमकी भी दी पर परिणाम कुछ नहीं निकला। आज सबेरे
छपेरे बहू फिर उस सड़क के से मिलने बसी गई।

अनाम ने बरबा की मा की धांसी में अग्नि-गरीजा के समय एक नारी
के नेत्रों में जो आकुलता और अन्ध विषमता होती है वह देखी। उसका
बहुत सफेद-सफेद-सा सपना।

अनाम ने धीरे धीरे हुए कहा 'भाप उसे धांसि से समझाइए, यह भारता
पीटना काम को धीरे बिगाड़ देगा। 'क्या भाप उसकी दुर्लभ गादी की
व्यवस्था नहीं कर सकते ?

'कैसे कर सकते हैं ? परिवार की दरिद्रता और मरुड़ी की कुम्बता
सोनों ही बाधक हैं। देखिए, बहू भापका बहुत बहना मानती है अन्ने

विश्वास है कि आप उसे समझेंगे और वह आपका कहना मान लेगी।
 घण्टा में अभी उन्होंने इस बात को किमीको न कहने के लिए कहा था।
 मेडिकल में विषय भी आपको कहना ही पड़ा। मान-सर्पाश का प्रश्न जो
 टहरा।

वह घनाम का उत्तर सुने बिना ही अभी गई।

१६

घापोवन में जैसे ही पुस्तक घनाम के हाथ में आई वैसे ही उसका
 मुह उतर गया। ऐम घावात की उसे स्वप्न में भी कल्पना नहीं थी। उसकी
 चेतना बिद्युत्प्र हो उठी और उसने तीसी धीर घृणा भरी दृष्टि से इन्द्र को
 देखा आ बैठ बिमलतास से गिप्टाचारपूर्ण ढंग से मुस्कराकर बातसाप
 कर रही थी। प्रपाम प्रतिधि कोई मिनिस्टर से वे अभी तक नहीं घ्राण
 से। सभापति पयड़ी पहले हुए दो-चार व्यक्तियों में ब्यापार की बातचीत
 कर रहे थे। उपस्थिति बार-बार इन्द्रु को घोर देखकर उसकी कहानियों
 की प्रशंसा कर रही थी।

‘इन्द्रु ने उसकें साथ कितना बड़ा छन्द किया! यह विचारकर घनाम
 की आर्या कुल से भर आई। उसकी घायें बिम्बय भरे दुःख में जमक उठी।

घनाम न इन्द्रु की साहित्यिक प्रवृत्ति को बल और प्रोत्साहन दिया।
 अपन बिब न बनाकर उसने इन्द्रु की कहानियों को पूरा-पूरा दुबारा
 लिखा। उन्हें प्रकाशित कराया। उनका पारिधमिक दिसाया। अपन घामा
 चर मित्रों न बहकर उसकी कहानियों की बयह-जयह सर्वा कराई इमका
 पत्र उसने उसे इस प्रथमान के साथ दिया। उसकी इच्छा हुई कि यह रा
 पड़।

उमने दूटे दिन से एक बार पुस्तक को पिर गोया और समयवयामा दृष्ट
 पड़ा—घात्सीय भी संबरमान जी को जो साहित्य के प्रमी और पोषक हैं।

घौर जब धनाम ने बहुत दिन पहले उसे पूछा था तब उसने कितने घाबरपूरा स्वर में कहा था कि वह अपनी पहली छवि उसे ही प्यार के साथ भेंट करगी। फिर इन्दु ने ऐसा क्यों किया? उसके सामने ऐसी मजबूरी क्या आ गई?

तभी एक सत्रजन ने कहा 'मिनिस्टर साहब आ गए हैं। भीड़ में बाध भर के लिए हस्का कोताहुत उठा जो बाद में पहरी छाँठि में बदल गया। सभापति घौर प्रधान प्रतिधि ने अपने भाषण करतस ध्वनि के बीच पहल किए। स्वागत मन्त्रिणी विद्यादेवी के भाषण के बाद स्थानीय साहित्यकारों के भाषण हुए। अपने भाषण में धनाम ने इन्दु की बहुत प्रशंसा की। हास्य कि प्रायः वह इन्दु से सक्त नाराज था लेकिन वह इन्दु की सार्वजनिक धातो-चना करना नहीं चाहता था ऐसा करन से उसे डर था कि इन्दु उससे सबा के लिए बिमड़ सफटी है। उसने अत्यन्त विनम्र शब्दों में इन्दु की प्रशंसा करते हुए कहा श्रीमती होमवती देवी उपायिका विमला सुधरा अम्ब किरण चीनरिक्मा तथा भागती पद्मकर के बाद नमारी इन्दु (वह बाध भर का घौर उससे मन ही मन उसे 'मेरी प्रिय इन्दु' कहा) ने अपनी समाकन लेखनी द्वारा जी साहित्य सर्जन करना प्रारंभ किया है उसमें नारी-मनोभूमि की यथार्थ अनुमूर्ति चित्रण हुआ है। उनकी कला नारी-जीवन का एक पक्षना पहलू सिण हुआ है। सैसी की दृष्टि से मैं इन्हें सभी लेखिकाओं में अपनी मानता हूँ। मैं शुभकामना करता हूँ कि वे इसी भाँति निरन्तर साहित्य रचना करती रहेंगी।

मिनिस्टर ने साहित्य पर एक घाय भाषण दे दिया। उसने अन्त में अपना ही कहा 'इन्दु जी अपनी उद्योगवाग लेखिका हैं साहित्य-सर्जन में वे योद्धा ही श्रेष्ठता प्राप्त करेंगी ऐसी धारा है।

तामियाँ !

धायोजन समाप्त होने के बाद संवर बाबू ने इन्दु से 'सांस्कृतिक संगम'

के मंत्री के यहाँ मौजबन्द करने को जाने के लिए कहा। घनाम एक कोने में लड़ा हुआ साहित्यिक मित्रों की फ़िल्मियां मुन रहा था। एक तरफ़ कबि कह रहा था 'बिचारे मबरंग के तीन कबिता-सग्रह निकसे पर उसके लिए बोर्ड भी आयोजन नहीं हुआ।

एक व्यापारी ने भरी हंसी हंसते हुए कहा 'इन्दु जी के मुँह घनाम जी ने इतनी ख्याति अर्जित कर ली है पर उनके सम्मान में आयोजन तो क्या साधारण गोष्ठी भी नहीं हुई।

हंसी।

घनाम के मन में तिममिसाहट।

मंवर बाबू घनाम को उस मौज में सम्मिलित न करने के प्रयत्न में थे। उनकी बिचारधारा एक प्रतिद्वन्द्वी की होकर भी काफी सघन थी घत उन्होंने कभी भी इन्दु के समक्ष अपनी गंभीरता का नहीं तोड़ा। प्रायः वे इन्दु के समक्ष अपनी मोटी-भरी पत्नी की प्रशंसा ही करते रहते थे। उन्हें बस एक ही बात का दुःख था कि उनकी पत्नी साहित्य-रसि की नहीं है।

इन्दु की सहेलियां उसे घेरे हुई थी। मंवर बाबू बार-बार घाघह कर रहे थे पर इन्दु उनके घाघह पर बिषय ध्यान नहीं दे रही थी। केवल वह हर बार इनका ही कहती थी। मैं जमती हूँ और बापस बाग़बीज में मस्त ह। जाती थी। उस घननी प्रशंसा मुनन में अत्यन्त आनन्द पा रहा था। उसके बेहरे पर गर्व की दीप्ति घीर थी थी।

अन्त में मंवर बाबू को घनना स्वर बदलना पड़ा।

इन्दु ने घननी सहेलियों में बिदा मांगी। उसे हम अस्तित्ता में घनाम का ख्याम तक नहीं आया। घनाम उसी कोने में लड़ा हुआ इन्दु के घाघह की प्रतीक्षा कर रहा था और मन ही मन वह प्रशंसा में इन्दु में अत्यन्त सिखापित रूप के जाने में एक मनोबैज्ञानिक की तरह बिबचन कर रहा था।

वह जमी। उमने घनाम को नहीं देगा। घनाम घूमा में घुन्वार कर

घमर वह लंगड़ा नहीं होता तो इन्तु उसकी उपेक्षा नहीं करती। हासकि उसकी घन्त प्रवृत्तियां बार-बार इसीपर ओर दे रही थी कि इन्तु धीर उसके बीच के घन्तर का कारण उसकी टूटी टांग नहीं पैसा है किन्तु वह अपने घापको टांग का बास्ता देकर ही सन्तोष कर रहा था।

रात को जब वह घर पहुंचा सब घनामिका अपने घर जा चुकी थी। इस एकान्त में कट्टु स्मृतिमा उसे धीर सताने लगीं। घर आकर वह बिना मोहन किए ही सो गया।

२२

बिमला का उपन्यास निष्कृत गया। उसने घर आकर घनाम को एक प्रति भेंट की साथ ही अपनी सम्मति लिख देने का अनुरोध किया। बिमला ने इस बीच प्रकाशित घनाम के एक लेख की बड़ी तारीफ की जिसमें एक सड़की के घनैतिक सम्बन्धों पर बड़ी जगुराई से प्रकाश डाला गया था। वह नायिका अपने मुंह बोले भाई से प्रम करणी थी उसका उसके साथ घनैतिक सम्बन्ध या किन्तु विवाह के बाद क्यों तक यह सम्बन्ध इस 'भाई' सम्बन्ध की जगता रहा धीर लेखक ने बड़े रसात्मक ढंग से इन दोनों चरित्रों का चित्रण किया था। 'इस लेख के साथ घनाम के तीन-चार चित्र भी थे जो उसकी टीसी के श्रेष्ठ नमूने थे। बिमला को भंवर बाबू ने वह भी बताया था कि इसकी नायिका घनाम के एक मित्र की बहिन है जिसके यहां घनाम प्रायः प्राया-बाया करता था। वह मित्र मुझे मिला था धीर उसने कुछ प्रकट करत हुए मुझे कहा था कि यह अनुमान सर्वथा निराधार है, गमत है। तो भी बर्बन के संकेतों से उसकी बहिन का ही अनुमान लगाया जाएगा।' इसका परिणाम उसके वास्तव्य जीवन के लिए भयंकर भी हो सकता है। घनाम का यह स्वभाव था। इसे वह कदापि नहीं छोड़ सकता। किन्तु बिमला ने उसकी बड़ी प्रशंसा की। घन्ती सम्मति की अपेक्षा में यह भावस्थक भी था।

जब विमला आत्वासन लेकर अभी गई तब वह विमला का उपयोग लेकर शत्रु के घर चला ।

शत्रु घर में नहीं थी । उसकी माँ ने बड़ी ख़ाई से भनाम से बातचीत की । उसे शत्रु के बारे में कुछ भी नहीं बताया । हर एक प्रश्न का उत्तर उसने गोममोम डंग से दिया । भनाम को वह बहुत बुरा लगा । वह उसी समय वहाँ से लौट आया ।

भनामिका ने उसे पोस्टकार्ड भेते हुए कहा 'भनाम बाबू ! आप घर क्यों नहीं चले जाते ?

वह मुस्से में बिफर पड़ा । उसने कार्ड फाड़कर उत्तेजित स्वर में कांपते हुए कहा 'भाड़ में जाए ये घर चले और मुझे भनामिका यदि तुम्हें काम करना है तो एक लौकरी की तरह करो । मेरे व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं ।

वह पलंग पर पड़कर एक मासिक पत्र के पृष्ठ उलटने लगा । भनामिका खाना लेकर आ गई । वह चुपचाप खाना खाने लगा । भनामिका ने संकित स्वर में पूछा 'आप बुरा न मानें तो आपको एक बात कहूँ ।

नहीं । उसने हठात् उत्तर देकर भनामिका की धाँधों की धोर देखा । उसमें कौतुकपूर्ण भाव बीजे । उसकी भी जिज्ञासा अभी । बीर्ब स्वर में बोला 'क्या कहना चाहती हो ।

'भाव शत्रु इमान बाबू के पास आई थी ।

'क्यों ?

बात बिलकुल मई थी ।

'कुछ कर्ब लेने ।

'उसे कर्ब की क्यों जरूरत पड़ गई ?

'उसका ऐसा विश्वास है कि राधाकृष्ण बाबू उससे विवाह कर लेंगे । वह इस प्रयाम में है कि वे बड़े मोम उसे कम स्तर का न सपने इसलिए वह

घपना जीवन-स्तर ऊंचा करने के चक्कर में है। बयाम बाबू ने सात सौ देवर एक हजार का डूबनेट सिद्धाया है। उसके जाने के बाद वे माटी स्तर में बोमे 'नन्हा वसी चांव को छूना चाहता है और वे ही ही करके हंसने लगे।

घनाम गम्भीर हो गया।

पाव बहू बाल-बूमकर नीरोर गया। वहाँ उसकी मित्र-संबन्धी न उसकी बहुत बुढ़ी मठ बनाई। उन्होंने यह भी बताया कि इन्धु के सम्पादकत्व में एक मासिक पत्र की योजना बन गई है। मकरंग ने यह भी बताया कि उसके पास कविता के लिए पत्र भी था चुका है।

'इसे कहते हैं मकी सेडी। विजय बोला 'प्रसिद्धि और मकमी डीढ़ डीढ़कर उसके पास था रही है।

'यत को नीर तो घाटी है ?

तैमूर को अधिक मठ सताओ। एक छो बेशारे के हाथ से प्रमिका निकल रही है और आपको मचाक सूझ रहा है।

'यदि यह संबड़ा नहीं होता तो इन्धु इसे नहीं छोड़ती।

'मैं नहीं मानता। मकरंग ने बीच में ही कहा 'यह गरीब न हीठा तो इन्धु निरुपय ही इसकी पी।

घनाम अधिक नहीं मुन सका। वह घपनी बैसाखी बचाकर बाहर निकल गया। पीछे से उसने केवल एक हंसी सुनी।

२३

एक सप्ताह बाद वह सबेरे-सबेरे बैसाखी लेकर धामर जानेवाली सड़क पर भूम रहा था। वह सप्ताह भरसे घर से बाहर नहीं निकलता था। इस बीच संबर बाबू ने उसे बुसाया था लेकिन उसने उस पठित घाबरी से बात करना भी ठीक नहीं समझा। वह घर पर बैठा रहा घपने आपको सवार से पूछकर करके। इस सड़क पर हवाबोरी की बहल-पहल में वह

जब बिमला सादबासन लेकर जाती गई तब वह बिमला का उपन्यास लेकर इन्दु के घर गया।

इन्दु घर में नहीं थी। उसकी माँ ने बड़ी फ्लाई से घनाम से बातचीत की। उसे इन्दु के बारे में कुछ भी नहीं बताया। हर एक प्रश्न का उत्तर उसने मोलमोल ढंग से दिया। घनामको यह बहुत बुरा लगा। वह उसी समय वहाँ से लौट आया।

घनामिका ने उसे पीस्टकार्ड भेते हुए कहा 'घनाम बाबू! घाप घर क्यों नहीं आते आते ?

वह मुस्के में बिकर पड़ा। उसने काँठ फाड़कर उत्तेजित स्वर में कापते हुए कहा 'माँझ में जाए वे घर आने धीर तुमो घनामिका यदि तुम्हें काम करना है तो एक मौकरानी की तरह करो। मेरे व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं।

वह पर्लंग पर पढ़कर एक साक्षिक पत्र के पृष्ठ उमटने लगा। घनामिका आमा लेकर आ गई। वह चुपचाप सामा आने लगा। घनामिका ने संकित स्वर में पूछा 'घाप बुरा न मानें तो घापको एक बात कहूँ।

'महीं। उसने हज़ात् उत्तर देकर घनामिका की भाँजों की घोर देखा। उसमें कौतुकपूर्ण भाव हीनै। उसकी भी जिज्ञासा बगी। शीर्ष स्वर में बोला 'क्या कहना चाहती हो।

'घाज इन्दु दयान बाबू के पास आई थी।

'क्यों ?

'वगत किसकुल गई थी।

'कुछ कर्ज लेने।

'उसे कर्ज की क्यों जरूरत पड़ गई ?

'उसका ऐसा विश्वास है कि राधाकृष्ण बाबू उससे विवाह कर लेंगे। वह इस प्रयाम में है कि ये बड़े जोष उसे कम स्तर का न समझे इसलिए वह

अपना जीवन-स्वर अंधा करने के लक्ष्य में है। ब्यास बाबू ने सात सौ बेकर एक हजार का हंडनोट दिखाया है। उसके जाने के बाद वे भारी स्वर में बोले 'तम्हा पत्नी चा' को सूना चाहता है और वे ही-ही करके हुंसेने मये।

अनाम गम्भीर हो गया।

बाबू वह जाल-बुझकर नीरोद गया। वहाँ उसकी मित्र-मंडली में उसकी बहुत बुरी कठ बनाई। उन्होंने यह भी बताया कि इन्दु के सम्पादकत्व में एक मासिक पत्र की योजना बन गई है। नवरंग ने यह भी बताया कि उसके पास कविता के लिए पत्र भी प्रा चुका है।

'इसे कहते हैं ककी केडी। विषय कोसा 'प्रसिद्धि और सक्ती चीड़ रीड़कर उसके पास प्रा रही है।

'यत को मीच तो घाटी है ?

'तैमूर को प्रबिक मत सताओ। एक तो बेचारे के हाथ से प्रेमिका निकल रही है और आपको मजाक सूझ रहा है।

'यदि यह संयत्ता नहीं होता तो इन्दु इसे नहीं छोड़ती।

'मैं नहीं मानता। नवरंग ने बीच में ही कहा वह करीब न होता तो इन्दु निश्चय ही इसकी थी।

अनाम प्रबिक नहीं सुन सका। वह अपनी बैसाखी दबाकर बाहर निकल गया। पीछे से उसने केवल एक हुंसी सुनी।

२३

एक सप्ताह बाद वह सबेरे-सबेरे बैसाखी लेकर घामेर जानेवाली सड़क पर बूम रहा था। वह सप्ताह मरसे घर से बाहर नहीं निकला था। इस बीच नंबर बाबू ने उसे बुलाया था लेकिन उसने उस पवित्र घाबमी से बात करना भी ठीक नहीं समझा। वह घर पर बैठ रहा अपने आपको संसार से पृथक् करके। इस सड़क पर हवाचोटों की बहम-बहम में वह

अपने अस्तित्व को पृथक् समझकर विचारों में लीन होकर बड़ रहा था।
 बैसाखी की 'खट्-खट' यांत्रियों का ध्यान उसकी धीर आकृति पर कर रही थी।

वह सोच रहा था यह प्यार बड़ा निर्दयी है और यह युग बड़ा कठोर
 है। धब धापी हृदय की सजीबता से नहीं यों ही निर्जीबता से प्रभावित होता
 है धब नापी-हृदय निस्वाधों के ताप से भी नहीं पिघलता। उसे सौन्दर्य और प्रेम
 के उस अलौकिक आनन्द के रहस्य का ज्ञान ही नहीं रहा। वह पूजी धीर मात्र
 के मध्य एक अज्ञेय बस्तु-सा डोल रहा है धीर मुख्य उससे छुटा जा रहा है।"

मे छुटा गया। मैं धब भी किसी दुर्बलनीम प्रेरणा के बधीभूत होकर इन्तु
 के इर्दगिर्द घूमने की चेष्टाएं करता रहता हूँ। वह मुझे निरन्तर भ्रमणिक
 वेदनाएं दे रही है धीर मैं उसके पास से अपनी आत्मा की साक्षि को खोज
 रहा हूँ। मेने इसके लिए किसीकी चिन्ता नहीं की। घर-बाहर सभी को
 धुमा बैठा। सभी को निराश किया धीर कुछ बिए धीर अन्त में मुझे उसका
 प्रवाद स्पर्श भी नहीं मिला। ओह! मैं कितना पामन हूँ। धीर उसने इस
 बाबत को मुंह ऊंचा करके हवा को सीप दिया इसते उसके मन को बाइस
 मिला।

बलते-बलते वह अत्यन्त थक गया। उसके पाँव उसे बबाब देने लगे।
 पीछे से उसकी सारी कमर भीग गई थी।

अप्रत्याशित उसे लवरंग मिल गया।

व्यंग से उसे बुरकर जोसा 'अच्छा जगन भाव अपनी लीला को हुँदने
 धाए है। वह यहाँ से भाबा जोस दूर राधाकृष्ण बाबू के पास बैठी हुई
 मुसधरे उड़ा रही है।

वह इतना कहकर धावे बड़ गया।

अनाम सभ भर के लिए एक गया। उसे उबर जाना अच्छा नहीं लगा।
 राधाकृष्ण बाबू उसपर व्यंग्य छोड़ते धीर इन्तु न धावे कैसा बर्ताव करेगी।
 वह वहीं पर बैठकर विचार-विमर्श करने लगा।

अपमानक इन्दु के समझ जाने की भावना दुर्बलनीय रूप से उसमें आमत हुई और वह आदेश में जस्वी-जस्वी करम उठाता हुआ आगे बढ़ गया। वह बार-बार मही सोच रहा था कि वह उस स्थिति में किसी भी अपमान को बर्दाश्त नहीं करेगा। वह इट का आवाज पत्थर से देगी पर वह वहाँ जाएगा प्रत्यक्ष।

आखिर वह उसी जगह पहुँचा जहाँ रामाकृष्ण और इन्दु थे। रामा कृष्ण सेटा हुआ था और इन्दु रोमांटिक ढंग में किसी नायिका की तरह मुस्करा रही थी।

अनाम ने जान-बूझकर सच नहीं देखा। वह जस्वी से करम उठाता हुआ बढ़ा। बीसाखी की आवाज इन्दु के कानों में पड़ी। उसने झूमकर देखा और पुकारा 'अनाम अनाम।

अनाम को लगा कि उसकी बीसाखी और पाँव जमीन से चिपक गए हैं। वह जाहकर भी आगे नहीं बढ़ सका।

रामाकृष्ण ने पुकारा 'आइए अनाम जी आइए, ऐसी भी क्या नाच जगी है ?

अनाम बिलकुल बक गया। उसके बीसाखी वाले हाथ और एक टाँग में अत्यन्त पीड़ा हो रही थी। उसने बीसाखी को उठाना चाहा पर वह नहीं उठी। उसे प्रतीत हुआ कि बस अब वह गिर जाएगा और उसे अपने प्रति इन्दी के सामने सज्जित होना पड़ेगा। फिर भी वह साहस करके उभर मुड़ा। बसा। खरीर की नस-नस फट रही थी। दूसरी टाँग भी टूटकर गिर जाना चाहती थी। बीसाखी वाले हाथ की हथेली की चमकी दिग्ग बई थी। सारी पीड़ाएँ उसकी आँखों से झरक रही थी।

वह बीदे-बीदे आगे बढ़ा। उसके समीप पहुँचते-पहुँचते अनाम गिर कर पड़ गया। अचानक के लिए उसे होश नहीं आया। इन्दु ने मोटर में पड़ी 'मशी' से पानी निकालकर उसके मुँह पर छिड़का। अनाम को होश

या गया। अपनी प्रसफ्ट चेतना में उसने राबाहुप्प को यह कहते हुए सुना, 'तुमने ऐसे रोमी धीर बुर्बल से प्रेम करके भ्रष्टा नहीं किया। इसके साथ जीवन गुजरना भी बहुत कठिन होता।

इन्दु ने कुछ उत्तर नहीं दिया।

अनाम ने बैठने का प्रयास किया। वह बैठ भी गया। राबाहुप्प ने सहा क्रमूति मरे स्वर में कहा 'आपको पीबल नहीं आता-आता, चाहिए, आन-बुम्-कर अपनी आत्मा को कष्ट देना सर्वथा अनुचित है। कहीं टॉय धीर बरबा हो गई तो ?

अनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने बलती हुई दृष्टि से इन्दु को देखा। उसमें अनाम के अभिघण्ट जीवन की कबला सुलग रही थी। इन्दु उस दृष्टि को सह नहीं सकी। वह अपनी दृष्टि कहीं धीर भटकाने लगी। स्थिति कुछ विचित्र हो रही थी भव कोई नहीं बोला। पहल मीन ध्याया रहा।

'भ्रष्टा बलिए, आप भी माइए अनाम भी आपको रास्ते में छोड़वा बनू।

अनाम ने प्रस्वीकार कर दिया।

जब इन्दु धीर राबाहुप्प चले गए तब अनाम की आंखों में धासू आ गए। वह कई घंटे वहीं पर पड़ा रहा निर्जीव धीर निरक्षेप्ट।

बोपहर को बर आया। मां का तार आया था। उठने तुरन्त बुभावा था। वह बीमार थी।

बरबा की मां मुंह प्यङ्क-अङ्ककर रो रही थी। अनामिका ने बताया कि बरबा के पति ने बरबा को जोर से पीटा है। उसकी बमड़ी में बेंत के निघाग बमक रहे हैं। किन्तु बरबा इसे स्वीकार नहीं कर रही है। उसका पति उसे वहाँ हमेसा के लिए छोड़ गया है पर बरबा अभी पुनः जाने का हठ कर रही है। वह हठ कर रही है कि वहाँ उसका पति रहेगा वह वहीं

रूबी चाहे दुःख में चाहे सुख में ।

घनाम ने बरबा को बुसाया । उसकी बाईं भांस का निचसा माग मूज बसा था । उसके हाथों पर बमे नीले बाग साफ पीस रखे थे । उसका मुह उबास घीर घांसों नम थीं ।

‘क्या बात है बरबा ? मां रो क्यों रूही है ?’

कृष्ण नहीं घनाम बाबू ! वह कमिठ-बुसित स्वर में बोसी ‘मां मां है न इसलिए उसका रोना कारनहीन नहीं होता । वह पति के प्रसाद को बड़ समझती है । मैंने उससे कह दिया अपराध मेरा था । मैंने उसके दोषाय के प्याले तोड़ दिए, फिर वह मुझ क्यों नहीं पीटेगा ! ‘मां कहती है उस बुट के पास न जा लेकिन प्रेम में क्या कभी ऐसा हुमा है ? ‘मैं उसके बिना नहीं रह सकती । एक पल भी नहीं रह सकती । बरबा की घांसों से गंगा-यमुना बह उठीं ।

उसके जाने के बाद घनाम के मस्तिष्क में सरोज का बेहुरा नाचने लगा । उसे लगा कि कहीं सरोज भी इस पप का अनुसरण न कर लें । उसने तार को उठाया । तार में सरोज की आकृति बेसी ! उसे मां की बीमारी का निश्वास नहीं हुमा उसे लगा कि हो न हो सरोज किसी लड़के से प्यार कर बैठी है और वह बिद्रोहिनी बन गई है ।

घनाम की घांसों के समस्त बरबा का बेहुरा उसके घांसू घीर उसके घरीर पर बमकठे बाग नाच उठे ।

वह प्रत्यक्ष संतप्त हो उठा ‘कहीं सरोज के साथ ऐसा हुमा तो ?’

अप्रत्याशित इन्दु उसके मस्तिष्क में बूम गई । अब वह उसके व्यवहार को सह नहीं सकेगा । वह उन ब्यंग्य बाजों को भी नहीं सह सकेगा जो उसे अब सुनने हैं ।

वह बड़ा बदनसीब है । दुर्भाग्य उसके जीवन का साथी है ।—एक बिरक्ति भरी मुस्कान उसके घबरो पर ढीढ़ गई । वह प्यार के लिए तड़प

है सचिन्म उसे प्यार नहीं मिला। वह सदा प्यासा रहा है और रोया।
कि मुझ के मानदंड बरस गए हैं अब घाबरी नहीं घाबरी की पूबी
तो जाती है। उसके मुन नहीं उसकी बीनत बंधी जाती है।

वह घबरा हो उठा। उसके समय मूखी-प्यासी सरोज की घाकृति
की। उसे बीमार बाप की बांधी सुनाई गयी। मां का दुःखों से भरा
रि सरीर दिखता। वह कांप उठा उस लम्बा इन दुःखों का बिम्बेदार वह
केवल वह।

काफी देर तक वह संवर्ष में पड़ा रहा। तब वह बबाल के पास गया।
उसे कुछ रुपये उधार लिए। बबाल ने हँसकर कहा 'अब तुम परके कमा
र बने हो। देखो मेरे रुपये कामरे के धनुवार सींग देना घ-नबा में घूट
तच्छ सुन्हारे पास या पहुँचूँगा।

घनाम निरतर रहा।

'सुन्हारी इन्डु बीम ही महारानी बनेगी राधाकृष्ण महाराज की हृदय
प्राप्ती! वह एक बेटील हंसी हंसा।

घनाम ने कोई उत्तर नहीं दिया।

बेचारी धनो का हिसाब कर देना उसे मेरा ब्याज देना है।
तना मठ। ब्यास फिर एक निरर्थक हंसी हंसा।

ईबनोट पर बस्तुबत करके घनाम पर घाबा और घनामिका को कड़ा
उसका सामान बांध दे वह पर आ रहा है। बितना फनीपर है, उसे
स्वर्ग से जाए और पदा बेचकर वह घपना रुपया घदा कर ले।

'घपनी मां को इस घमामी का प्रभाव कहना। मैंने कमी-कमी घापको
पदेब दिए थे इससे घापको ह्रादिष कष्ट पहुँचा होगा।' घनामिका ने
बन स्वर में कहा। उसकी घाँसे पर घाई।

'नहीं धनो मनुष्य को घपनी बिम्बेवारियों से नहीं भागना चाहिए।
ह पनायन बस्तुव' एक धन है। मैंने जिसे चाहा, वह मुझ नहीं मिला।'

धीरे इन्डु ?

‘वह भी मुझे नहीं मिमी में उसके योग्य नहीं है। मंगड़ा हूँ। प्रोह !
सब संगेपन को मुझाने के लिए मैंने सबको मुसा विषा लेकिन यह सत्य
नर्मम रूप से प्रकट हुआ। धम्मो ! तुमने मुझार बड़े प्रहसान किए, कमी
ररता बुकाळंगा।

धम्मो की धासैं मीम गई।

धनाम बसने समा। बरबा धाई। बरबा की जगह उसे सरोज का मुख
रिखा। उसकी धासैं में धासू धा मए। वह बस्ती-बस्ती नीचे उतर गया।
बरबा उसकी बीसासी की ‘सद्-सद्’ सुनती रही।

उसके एक बंटा बाव इन्डु धनाम के बर धाई। वह धम्मन्त उठिन
धीर बिम्बासस्त थी। उसने धाते ही बरबा से पूछा ‘धनाम बाबू कहाँ है ?
‘मे बसे गए। बरबा ने छोटा-सा उत्तर दिया।

‘कहाँ ?

‘धपने बर। उनकी मां बीमार है।

‘कब सौटेंगे ?

‘धायव कमी नहीं। वे बड़े कुली थे।

इन्डु धीरे-धीरे बर से बाहर निकली।

धाब उबाङ्कम्भ ने उसका धर्बस्व सूट स्पष्ट कह दिया था कि उसकी
मां एक मास्टरनी को धपने बर की बहू नहीं बना सकती। उसे भी
उसके बरिब पर पूर्ण बिम्बास नहीं है। उसके पहले धनाम धीर मंवर बाबू
! उसने इस बात पर जोर दिया कि इन्डु को बिरोध भी नहीं करना
बाहिए। वह उसे सब कुछ देगा। उसे सम्पादिका बनाएगा उसके उपन्यास
छापेगा वैसे देगा।

तब वह इतनी बिङ्कति मीन हंसी हंसा कि इन्डु की धासैं में धासू धा
मए। उसे लगा कि वह सोसामटी धायमी को धायमी नहीं समझती।

उसने घनाम को छोड़कर राधाकृष्ण को चाहा प क्यों चाहेगा ? उसे उससे सुन्दर मुबती मिस सफ़्ती बनने की प्रबन्धनामयी होड़ ! घर के बाहर वह लम्बी हुई सड़क पर इस तरह बैठ गई जैसे कोई टूटा हुआ उसकी छाँवों के धाये घनाम की मूर्ति थी एक वासा मुनक ! प्यासा और बुखी ।

सद्-सद् सद् की वही फिर परिचित ध्वनि !

उसने घाबरेस में चाहा कि वह बौड़कर उस की बड़कनों में घात्मसात करले । इस पवित्र विचार में मया ओष भर मया और उसका हृदय मने घालोक से लवा उसके पच की बंसी बज उठी है और मत्येक निर्दोष फूल की तरह महक रहा है ।

